नहीं ।'

मास्टर ब्रेन को समझ गया कि यह विचारों के पढ़ने का विशेषज्ञ जान पड़ता है इसलिएं एक भयंकर मुजरिम है ।

'तुम्हारा विचार ठीक है मास्टर ब्रेन···मैं किसी सीमा तक विचारों को पढ़ सकता हूं मगर मैं मुजरिम बड़ी सीमा तक हूं । मेरा स्थान इतना ऊंचा है कि यदि तुम दृष्टि उठाकर देखने की कोशिश भी करो तो निगाह ही न पहुंचे ।

मास्टर ब्रेन अपने मस्तिष्क को विचारों से रहित रखने की चेष्टा करने लगा ।

'हां···यदि तुम दिमाग को खाली रखो तो कदाचित कुछ कर सको किन्तु दिमाग एक ऐसी वस्तु है जो कभी खाली नहीं रहता ।'

मास्टर ब्रेन ने आव देखा न ताव और प्रहार कर दिया किन्तु वह अपने को साफ बचा गया । किन्तु मास्टर ब्रेन ने अपना हाथ नहीं रोका । वह इस विलक्षण नकाबपोश को सोचने व मानसिक प्रतिभा का प्रयोग करने का मौका देना ही नहीं चाहता था । उसका विचार था कि यदि वह तेजी से प्रहार करता रहा तो यह व्यक्ति अपनी सारी मानसिक शक्ति, शारीरिक बल का प्रयोग करने में लगा देगा । इस प्रकार वह सफल भी हो सकता था ।

शीघ्र ही उसे एहसास हुआ कि यह विधि सफल रही । नकाबपोश बन्दरों के समान इधर-उधर उछलता रहा । अभी तक गेंद कई बार उसकी हालत पूछ चुकी थी किन्तु उस व्यक्ति ने जवाबी हमला नहीं किया था । अचानक गेंद उसकी नाक पर लगी और वह गले के बल चीखकर बोला—

'मास्टर ब्रेन···सुअर के बच्चे !' और फिर गेंद के प्रहार की परवाह किये बिना उस पर उछला । गेंद उसके पेट पर लगी और वह

उबकाई लेकर उसके सिर पर आ गया। उसने उसके से... टक्कर मारी इसलिए मास्टर ब्रेन दीवार से लग गया। मास्टर ब्रेन को सम्हलने का मौका न देकर नकाबपोश ने एक टक्कर और लगाई और मास्टर ब्रेन को अपना दम घुटता सा प्रतीत हुआ जैसे उसका दिल फट गया हो। किन्तु जब वह तीसरी बार उसकी ओर आया तो मास्टर ब्रेन ने झुककर उसके पेट में फौलादी जैसा घूंसा मारा और पलटकर एक ऐसी ठोकर सिर पर मारी कि वह दीवार से टकराकर लड़खड़ा गया। मास्टर ब्रेन ने उसके घुटने पर ठोकर मारी और वह झुक गया एक और घूँसा उसकी नाक पर पड़ा···वह चीखने लगा। मास्टर ब्रेन एक और प्रहार के बारे में सोच ही रहा था कि उस व्यक्ति ने चीते की तरह द्वार से बाहर छलांग लगा दी···फिर दरवाजा बन्द करके बड़ी फुर्ती से बाहर भागता चला गया।

मास्टर ब्रेन ने भी तुरन्त ही बाहर छलांग लगाई, किन्तु नकाबपोश इस प्रकार भागा जा रहा था मानो उड़ रहा हो। मास्टर ब्रेन ने उसका पीछा करना बेकार समझा और धीरे-धीरे चल पड़ा। अब वह अपनी कार की ओर बढ़ रहा था।

कार के समीप आते ही उसके माथे पर बल पड़ गये। बैठने से पहिले उसने झांककर भीतर देखा। मगर वहाँ कोई असाधारण बात दिखाई नहीं दी। इसलिए वह भीतर बैठ गया मगर ज्योंही एंजिन स्टार्ट किया सामने डैश बोर्ड पर लगी एक छोटी सी सुई जोर से थिरकने लगी। सुई का थिरकना देखते ही उसने कार का एंजिन बन्द कर दिया और तेजी से बाहर निकल आया। अगले ही क्षण उसने कार का बोनट उठाया और भीतर दृष्टि पड़ते ही चौंक उठा। एंजिन के साथ ही एक विशेष ढंग में एक बम बंधा हुआ था। यदि एंजिन स्टार्ट रहता और कार थोड़ी सी भी आगे बढ़ती तो बम फट गया होता।

उसने बम को अलग किया और उसके दोनों तार निकालकर फेंक दिये फिर वह पुनः भीतर आ गया। इस बार जब उसने एंजिन स्टार्ट किया तो अग्नि अस्त्रों की उपस्थिति बताने वाली सुई शान्त थी। वह हथियारों की उपस्थिति इसी रूप में वता सकती थी जब वह चार्ज होने की दशा में हो।

कार सड़क पर भागने लगी और मास्टर ब्रेन ने विगत हालात पर दृष्टिपात किया तो विस्मय में रह गया। यह संयोग था कि वह अगली कार जिसमें दो जर्मन व्यक्ति थे, सहसा ब्रेक मारकर रुक गई थी। फिर उसे सलोमी वाला मामला याद आया। सलोमी वड़ी कुशलता से भाग निकली थी। अब मास्टर ब्रेन के मस्तिष्क में उसका हलका सा चित्र रह गया था।

फिर उसे उन दोनों जर्मनों की मौत के साथ नकाबपोश का विचार आया जो विचार पढ़ने की कला का ज्ञाता था सो खतरनाक सावित हो सकता था। उसे अब यह भी विश्वास था कि बम उसी नकाबपोश ने भीतर आने से पहिले उसकी कार के एंजिन से बाँधा था।

सलोमी के विषय में सोच-सोचकर वह बड़ा परेशान हुआ। परेशानी की दशा में ही अपने फ्लैट तक आ पहुँचा। भीतर आकर उसने सर्व प्रथम इन्सपैक्टर शर्मा का नम्बर मिलाया।

'बोलो···बोलो कौन है !' शर्मा का झल्लाया हुआ स्वर फोन में सुनाई दिया।

'क्या मिसेज ने जूतियाँ मारकर घर से बाहर कर दिया है।' मास्टर ब्रेन ने सवाल किया।

'तुम कौन हो वदतमीज !'

'तुम्हारा पुराना हितैषी···मास्टर ब्रेन !'

'तुम···तुम कबसे मेरे हितैषी हो गये ?'

'यदि तुम कृतज्ञ न होते तो ऐसी बात नहीं करते।'

'फोन क्यों किया ?'

'दो विदेशियों की लाशें उठवाने के लिये।'

'क्या मैं लाशें ढोता फिरता हूं।' शर्मा ने तीखे स्वर में कहा।

'पुलिस के तुम जैसे निकम्मे आफिसर और क्या करते हैं।'

'क्या बकते हो···मैं तुम्हें जेल में सड़ा डालूंगा।'

'वह तो मैं जानता हूं···जरा यह मालूम करना था कि यह कौन है। वैधानिक रूप से देश में प्रवेश किया था या अवैध रूप से ?'

'मैं तुम्हारे बाप का नौकर लगा हुआ हूं क्या।'

'मैं बाद को फोन करूंगा।' वह बोला और इन्सपैक्टर शर्मा की बात अनसुनी करके कहने लगा—

'उस स्थान का पता नोट करो।' फिर वह वहां से हटा और भीतरी कमरे में चला गया। उसे आभास हुआ कि कोई फ्लैट में घुसने की चेष्टा कर रहा है।

सावधानी के लिये उसने झांका। भीतर आने वाला वही नकाबपोश ही था। उसके हाथ में रिवाल्वर था। मास्टर ब्रेन अपनी जगह खड़ा रहा। नकाबपोश ने उसे देखा नहीं था। जब वह निकट आ गया तो उसने उसकी कलाई पर झपट्टा मारकर एक दो झटके में रिवाल्वर छीन लिया, फिर वह बोला—

'नकाबपोश शैतान···यह मास्टर ब्रेन का हाथ है।' मगर नकाबपोश ने गुलाटें खाते हुए मास्टर ब्रेन के मुंह पर ऐसी लात मारी कि उसे उसका हाथ छोड़ना पड़ा। अगले ही क्षण नकाबपोश फिर रिवाल्वर की ओर झपटा मगर मास्टर ब्रेन ने उसे लात मारकर धक्का दिया और वह सामने की ओर लुढ़क गया किन्तु जब वह उठा तो उसके

हाथ में एक कुर्सी थी। वह मास्टर ब्रेन की मरम्मत उस कुर्सी से ही करना चाहता था।

निकट आकर उसने हमला किया, मगर उसका कद मास्टर ब्रेन से काफी छोटा था इसलिए हमला अधिक कारगर सिद्ध नहीं हो सका और मास्टर ब्रेन ने उसे कुर्सी सहित नचा डाला।

नकाबपोश को कुर्सी छोड़नी ही पड़ी और मास्टर ब्रेन ने पूरी शक्ति से कुर्सी उसके सिर पर दे मारी...किन्तु कुर्सी सिर पर लगते ही टुकड़े-टुकड़े हो गई। नकाबपोश का कुछ भी न बिगड़ा।

'मास्टर ब्रेन...अब मैं तुममें बहुत गहरी रुचि लेने की सोच रहा हूं। अतिशीघ्र तुम्हें अपनी प्रयोगशाला की भेंट करूंगा।' नकाबपोश बोला।

'मगर उससे पहले मैं तुम्हें पकड़कर किसी अजायबघर को भेंट करूंगा।'

'ऐसा कभी नहीं हो सकता मास्टर ब्रेन...ऐसा कभी नहीं हो सकता।' वह गम्भीरता से बोला। मास्टर ब्रेन ने हमले की तैयारी की।

'इस समय शायद तेरे ग्रह अच्छे हैं सो मैं जाता हूं।' उसने कहा तथा खिड़की की ओर छलांग लगा दी। मास्टर ब्रेन ने सोचा कि उसका पीछा करे फिर उसे याद आया कि वह बड़ा तेज भागता है इसलिए पीछा नहीं किया बल्कि खिड़की से झांकने लगा। वह सचमुच बड़ी तेजी से भागकर अपनी कार में जा बैठा था। फिर मास्टर ब्रेन को एक गन की नाल कार में दिखाई दी और वह बला की फुर्ती से खिड़की पर से हट गया। दूसरे ही क्षण एक गोली खिड़की से सनसनाती हुई आई और दीवार से टकराकर रह गई।

जब उसकी कार चली गई तो मास्टर ब्रेन को भारी चिन्ता हुई।

अब वह शीघ्र ही यहाँ से न केवल हट जाना चाहता था बल्कि अपना मेकअप भी बदल देना चाहता था।

जब वह अपनी कार में जा रहा था तो उसने इस बात पर विशेष ध्यान दिया कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है। काफी देर तक यहाँ वहाँ कार दौड़ाने के पश्चात जब उसे विश्वास हो गया कि कोई उसका पीछा नहीं कर रहा है तो उसने कार अपने एक खास मकान की ओर मोड़ी जहाँ मेकअप की सारी सामग्री भी मौजूद थी।

वह कुछ देर विश्राम करके सारी स्थिति पर गौर करना चाहता था। साथ ही वह सलोमी को भी ढूंढना चाहता था। यद्यपि उसकी आँखों के सामने दो हत्यायें हो चुकी थीं किन्तु अपराध का कारण अब तक उसकी समझ में नहीं आया था, क्योंकि नगर में अपराधों के बारे में कोई हंगामा नहीं था।

दो

वे दोनों गंभीरतापूर्वक अपने बॉस का मुँह देख रहे थे क्योंकि बॉस का मुख इस वक्त उन दोनों से भी गंभीर था। बड़ी देर तक उनके बीच कोई बात नहीं हुई। फिर बॉस ने गम्भीर स्वर में कहा—

'मैंने यह हंगामी सभा इसलिए बुलाई है ताकि तुम्हें भयंकर स्थिति से सूचित किया जा सके। क्या तुम दोनों ने मास्टर ब्रेन का नाम सुना है ?' इतना कहकर वह चुप हुआ और पहली बार बारी-बारी से दोनों की ओर देखा।

'सुना है।' उन दोनों ने एक स्वर में कहा।

'मगर आज मैं दो बार इस विलक्षण मनुष्य से टकराया हूं।' वह बोला। यह बात सुनकर दोनों हैरान हो गये फिर उनमें से एक ने कहा—

'बॉस सुना है वह सदा मेकअप किये रहता है।'

'हाँ।' बॉस ने कहा—'और उसका मेकअप इतना बढ़िया होता है कि पहिचाना नहीं जा सकता।'

'क्या वह झिल्ली का उपयोग करता है?'

'शायद'''वह झिल्लियों का ही उपयोग करता है! अन्यथा इतना बढ़िया मेकअप किसी अन्य विधि से नहीं किया जा सकता।' बॉस ने कहा और फिर चुप हो गया। फिर बॉस ने सुगन्धित सिगार निकालकर सुलगाया तथा धुँआ छोड़ने लगा। वे दोनों उसे देखने लगे।

'मेरा विचार था कि वह आम मनुष्य है। मगर वह आम आदमी नहीं निकला। उसकी गेंद भी उसके समान विचित्र है। वह उस गेंद का प्रयोग बड़ी कलाकारी से करता है। उसका निशाना अचूक होने के कारण चोट बड़ी करारी लगती हैं। उसकी एक और विशेषता यह है कि वह अपने दिमाग को इस सीमा तक खाली कर लेता है कि उसके विचारों को पढ़ा ही न जा सके। जिस प्रकार मेकअप उसे अपराधी कार्यों में मदद देता है उसी प्रकार विचार पढ़े जाना मेरी सफलता का रहस्य है। यदि मैं उस व्यक्ति के विचार पढ़ने में सफल नहीं हुआ तो कठिनाई हो सकती है।'

'यदि बास तुम आज्ञा दो तो हम इस मास्टर ब्रेन का भुर्ता बना डालें।' उन दोनों में से एक बोला—

'नहीं'''शायद तुम ऐसा न कर सको और वह तुम्हारा भुर्ता बना डाले।'

''बॉस''''''शायद आप हमारी शक्ति का गलत अनुमान लगा रहे रहे हैं।'

'सुनो तुम लोग. बलवान जरूर हो मगर वह बलवान ही नहीं बुद्धिमान भी है।'

'बॉस'''क्या आप मुझे उससे मिला सकते हैं ?' वह व्यक्ति खड़ा होकर भावुकतापूर्ण स्वर में बोला—

'बैठ जाओ'''व्यर्थ की बातें नहीं करो।' बॉस ने कहा।

'बास'''मुझे क्रोध आ रहा है।'

'और यदि तुम उसका कुछ न बिगाड़ सके तो ?'

'तो आप मुझे शूट कर देना।'

'क्या तुम दोनों यह काम करना चाहते हो ?'

'मुझे कोई आपत्ति नहीं।' उस व्यक्ति के दूसरे साथी ने कहा। वह अब तक चुप हो रहा था।

'इसकी क्या जरूरत है। मैं अकेला ही पर्याप्त हूं।' वह व्यक्ति बोला।

'मूर्ख न बनो'''तुमने अभी मास्टर ब्रेन को नहीं देखा जबकि मैं उससे टकराकर उसकी ताकत व बुद्धिमानी का अनुमान कर चुका हूं।'

'मगर बॉस'''यह मेरा अपमान है'''मैं अकेला ही पर्याप्त हूं।'

'मैं कोई तमाशा नहीं करना चाहता, बल्कि मास्टर ब्रेन को सचमुच समाप्त कराना चाहता हूं क्योंकि सलोमी मास्टर ब्रेन की दृष्टि में आ चुकी है और मैं दो जर्मन आदमियों की हत्या कर चुका हूं। अब वह इस सारे खेल में रुचि लिये बिना नहीं रहेगा। यदि उसने ऐसा किया तो हमारे मार्ग में बाधायें ही न आयेंगी बल्कि वह हमें तबाह तक कर सकता है।'

'डार्ड गाड'''बास आप मुझे बहुत अधिक जोश दिला रहे हैं।'

'मैं वास्तविकता बता रहा हूं'''अच्छा यह बताओ सलोमी का कुछ पता चला ?'

'वह एक बार हमारी दृष्टि में आई थी'''फिर गलियों में गायब हो गई।'

'और वह हमारे शत्रु ?'

'वह अभी दिखाई नहीं पड़ रहे हैं।'

'सलोमी को खोजना आवश्यक है। यदि वह हमारे हाथ न लगी तो हमारा यहां आना बेकार हो जायेगा। मैं यहां अपनी मौजूदगी का ऐलान नहीं करना चाहता। हमें केवल सलोमी की खोज करना है। जिस दिन वह हमें मिल जायेगी हम उसे साथ लेकर चले जायेंगे। इसलिए अधिक रक्तपात तथा हंगामे व्यर्थ हैं।'

'बस सब ठीक है बास'''मगर मैं मास्टर ब्रेन को सबक अवश्य देना चाहूंगा।'

'और मैं तुम दोनों को इसकी इजाजत दे चुका हूं।'

'शुक्रिया बास'''।' वह मुट्ठियां भींचकर कहने लगा, फिर बोला— 'वह इस टाइम कहां मिलेगा ?'

'यह बताना कठिन है'''किन्तु जिस फ्लैट में वह मुझसे टकराया था उसका पता तुमको बताये देता हूं।' यह कहकर बास ने मास्टर ब्रेन के फ्लैट का पता बता दिया। फिर बोला—'यदि तुम लोग असफल हुए तो मैं जिंदा नहीं छोड़ूंगा।'

'हमें स्वीकार है बॉस !'

'तो जाओ, साथ ही सलोमी को भी खोजते रहो।'

'यह काम ही हो रहा है बॉस।'

'अब तुम दोनों जा सकते हो।' वह हाथ उठाकर बोला और वह दोनों वहां से चले आये। बॉस अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ सिगार पीता

रहा। वह मास्टर ब्रेन की बाबत ही सोच रहा था।

'यदि मास्टर ब्रेन मुजरिम है तो क्या वह उसके साथ मिलकर काम करना पसन्द करेगा?' उसने सोचा।

'यदि ऐसा ही हुआ तो उससे बढ़कर साथी कोई नहीं हो सकता। और यदि वह मना कर दे तो उससे बड़ा शत्रु कोई नहीं होगा। ऐसी दशा में उसकी हत्या ही कर देनी चाहिये।' उसने सोचा फिर अपने शरीर की उन चोटों को याद करके बुरा-सा मुँह बनाने लगा जो मास्टर ब्रेन ने उसे पहुँचाई थी।

'ओह, कितना विलक्षण मनुष्य है।' वह सिगार हाथ में थामे सोचता रहा। सोचते-सोचते विचारों में इतना लीन हुआ कि सिगार तक पीना भूल गया। और सिगार के सिरे पर राख जम गई। वह बुझ चुका था।

तीन

मास्टर ब्रेन केवल यही देखने अपने फ्लैट की ओर आया था कि नकाबपोश उसे तलाश कर रहा है या नहीं? और जब उसने प्रकाश होता देखा तो मुस्कुरा उठा। तत्पश्चात वह अपनी गेंद सतर्कता से हाथ में लिए फ्लैट के सामने आया और द्वार खटखटाया। थोड़ी देर में ही द्वार खुल गया।'

'भीतर आ जाओ।' द्वार खोलने वाले ने कहा।

'तुम कितने हो?' मास्टर ब्रेन ने पूछा।

'दो!' उत्तर मिला और मास्टर ब्रेन ने एक फौलादी तरह का

घूँसा उसकी नाक पर मारा। घूँसा लगते ही वह व्यक्ति भीतर की ओर पलटा और मास्टर ब्रेन भीतर चला गया। भीतर उस व्यक्ति का दूसरा साथी भी था उसने किचकिचाकर मास्टर ब्रेन पर हमला किया किन्तु मास्टर ब्रेन के पहिले ही जवाब ने उसे नचा डाला।

वह दोनों चकित रह गये। फिर उन दोनों ने एक साथ हमला किया और मास्टर ब्रेन बड़ी शान से झुकाई दे गया। शायद उन्हें इस झुकाई का कुछ ज्ञान न था सो वह दोनों परस्पर उलझकर लुढ़क गये, और मास्टर ब्रेन ने उन दोनों में से एक की हंसली की हड्डी पर अपनी गेंद से वार किया। गेंद लगते ही चटाख की आवाज करके हड्डी टूट गई और वह व्यक्ति बड़े जोर से दहाड़ा। उसका कंधा लटक गया। उसका दूसरा साथी अचम्भे से मास्टर ब्रेन को देख ही रहा था कि गेंद का दूसरा प्रहार उस व्यक्ति के घुटने पर हुआ और वह चीखकर वहीं बैठ गया।

'मेरा नाम मास्टर ब्रेन है। और अब बताओ कि तुम्हारा बॉस इस वक्त कहाँ है?' किन्तु जवाब देने के बजाये वह व्यक्ति रिवाल्वर निकालने की कोशिश करने लगा। किन्तु मास्टर ब्रेन की गेंद के प्रहार ने उसे चीखने व नाचने पर विवश कर दिया। वह व्यक्ति अपनी कलाई दबाये तड़प रहा था। इसके पश्चात उसने उनकी जेबों से रिवाल्वर निकालकर अलग डाल दिये और उनके हाथ-पाँव भी बाँधने लगा।

वह दोनों भयभीत होकर उसे देख रहे थे। उनके चेहरे पर बेबसी टपक रही थी। उन्हें अच्छी तरह से बाँधने के पश्चात वह फोन पर गया और एक नम्बर मिलाकर दूसरी ओर से रिसीवर उठाने की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी देर पश्चात फोन उठाया गया तो वह बोला—

'क्या यह इंस्पेक्टर शर्मा हैं ?'

'हां ।' दूसरी ओर से शर्मा का ही स्वर आया ।

'मैंने सोचा जब मैं जाग रहा हूं तो कानून का रक्षक क्यों सोये ।'

'तुम कौन हो ?'

'मास्टर ब्रेन !'

'मास्टर ब्रेन, तुम आखिर मुझसे चाहते क्या हो ?'

'थोड़ी सी बुद्धि देना चाहता हूं ।'

'क्या मतलब ?'

'मैंने दो अपराधियों को बांध रखा है यदि तुम प्रोग्रेस चाहते हो तो तुरन्त यहां पहुंचो और उन्हें गिरफ्तार करलो । यदि तुम उनकी जवानें खुलवा सके तो अवश्य कोई बड़ा काम कर सकोगे ।'

'और तुम कहां से बोल रहे हो ?' शर्मा ने प्रश्न किया ।

'पता नोट करो ।' फिर मास्टर ब्रेन ने उसे अपने इस फ्लैट का पता नोट कराया ।

'और यदि यह बात गलत निकली तो ?'

'जो चोर की सजा सो मेरी सजा ।'

'अच्छा ।' शर्मा बोला ।

फोन का सम्बन्ध विच्छेद करने के पश्चात् मास्टर ब्रेन उन दोनों से बोला ।

'अब तुम्हारा बाप शर्मा यहां आयेगा और तुम्हारी जवान खुलवायेगा ।' इतना कहकर वह बाहर आया और द्वार बन्द करके चला गया ।

'शर्मा ने वहां पहुंचने में विलम्ब नहीं किया । उसके साथ उसके मातहत भी थे । दरवाजा खोलकर उसने दोनों को देखा तो उसकी आंखें चमक उठीं । वह तुरन्त बोला—

'तुम दोनों कौन हो ?'

'हम दोनों शरीफ आदमी हैं और मास्टर ब्रेन की ज्यादती का शिकार हुए हैं। यह मास्टर ब्रेन का ही फ्लैट है।'

'हुँम, मगर तुम्हारा इससे क्या सरोकार है ?' शर्मा ने पूछा।

'सरोकार मैं बताता हूं इंस्पेक्टर।' छोटे कद का नकाबपोश बोला और वह दोनों उसे वहां देखकर चौंक गये।

'बॉस !' उन्होंने कहा और शर्मा यह सुनकर उन्हें घूरने लगा।

'इंस्पेक्टर ! क्या तुम इस चीज को जानते हो ?' वह रिवाल्वर दिखाकर बोला—'यह किसी का ध्यान नहीं रखता क्या तुम मरना चाहते हो ?'

'नहीं।' बेध्यानी में शर्मा के मुंह से निकला।

'तो फिर चुपचाप परे हट जाओ।' बास गुर्राया तथा शर्मा उसे घूरता हुआ अलग खड़ा हो गया। उसके साथी भी दीवार के साथ खड़े हो गये। बॉस अपने दोनों साथियों से बोला।

'मैंने कहा था तुम उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। वह विलक्षण रूप मे ताकतवर है मगर तुम दोनों उसका भुर्ता बनाना चाहते थे।'

'बास हमें माफ कर दो।' वह दोनों गिड़गिड़ाये।

'अब जबकि तुम्हारा घुटना व हंसली की हड्डी टूट गई है तो मैं तुम्हें अपने लिए बोझ नहीं बनाना चाहता। इसलिए उसने रिवाल्वर तान लिया। रिवाल्वर अपनी ओर तनता देख वह दोनों डर के मारे बड़े जोर से चिल्लाये।

'यह···यह क्या करते हो ?' शर्मा ने सरसराते से स्वर में कहा।

'तुम चुप रहो जी।' नकाबपोश बोला और शर्मा सहम उठा, उसके स्वर में कुछ ऐसा ही असर था। फिर उसने बारी-बारी से दो फायर किए। गोलियां उनकी खोपड़ियों में घुस गईं और वह एक-एक चीख

मारकर ढेर हो गये ।

'मैं नहीं चाहता कि मेरा कोई आदमी पुलिस के हाथ लगे ।' वह रिवाल्वर की नाल में फूंक मारकर बोला । शर्मा उसे घूरता रहा । उसने फिर कहा--

'जब तक मैं दूर न निकल जाऊं, तुम लोग यहां से बाहर नहीं आओगे और यदि तुमने ऐसा किया तो सैंकड़ों गोलियां तुम्हारे शरीर में प्रवेश कर जायेंगी । मैं पुलिस वालों को मारना पसन्द नहीं करता ।' इतना कहकर वह बाहर निकल गया । शर्मा व उसके साथी बड़ी देर तक अपनी जगह इस प्रकार खड़े रहे मानो उनका मस्तिष्क खो गया हो । इसके पश्चात जब उन्हें होश आया तो नकाबपोश गायब हो चुका था ।

चार

गंदे शरीर तथा फटे हुए वस्त्रों में वह बड़ी सुन्दर लग रही थी । उसकी भरी-भरी सुडौल टाँगें केले के छिले हुए तने की तरह चमकदार तथा चिकनी थीं । क्योंकि शरीर पर असाधारण रूप से छोटा स्कर्ट था इसलिए आधी से अधिक रानें अपनी पूरी कोशिश के साथ दर्शन दे रही थीं । उसके कूल्हे अधिक भारी नहीं थे मगर स्कर्ट की अच्छी फिटिंग ने उन्हें नंगा कर डाला था और चलते समय उसके लहराते हुए कूल्हों में सैक्स की एपील बहुत बढ़ जाती थी । उसका ब्लाउज छोटा-सा था इसलिए स्कर्ट व ब्लाउज की सीमाओं के बीच गोरी-गोरी बेदाग व बटावदार कमर का दीदार सुगमता से किया जा सकता था । स्कर्ट में

दायें ओर बटन टूट जाने से काफी चौड़ी सांस पैदा हो गई थी। उस सांस में से न केवल उनके गदराये हुए कूल्हे को देखा जा सकता था बल्कि लाल अंडर बियर की झलक भी दिखाई दे रही थी।

सामने से ब्लाऊज फटा हुआ था और उसकी जवानी को फटे हुए चिथड़ों से बाहर झांकने का अवसर मिल गया था। अंगिया रहित जवानियाँ इस प्रकार बाहर निकली हुई थीं मानों अपने यौवन पर एक दीर्घकाल के उपरांत नजर डाल रही हों। ऐसी लहराती हुई चाल के साथ उनमें भी थिरकन पैदा होती थी, जैसे संसार को देखकर मस्त याद से स्वयं को भुला रही हो।

उसकी गर्दन पर मैल जमा हुआ था। किन्तु मैल जमने से गर्दन का कटाव तथा लम्बाई कम नहीं हुई थी। उसका चेहरा लाल सफेद था तथा आँखें बड़ी-बड़ी व स्वच्छ थीं। चेहरे के नैन-नक्श बड़े तीखे तथा आकर्षक थे। कंधों पर सुनहरे बाल बिखरे हुए थे।

इसे शहर में देखा जा रहा था। किन्तु लोग घुमक्कड़ पाश्चात्य हिप्पियों की तरह उसे भी हिप्पी समझ कर कभी-कभी छेड़ा करते थे। देखने से तो वह भी हिप्पी जान पड़ती थी। मगर इसमें व दूसरे हिप्पियों में एक बड़ा फर्क था। वह यह कि दूसरे हिप्पी तो जमाने से जमाने क्या स्वयं तक से लापरवाह प्रतीत होते थे। उनमें भय की छाया तक नहीं थी। मगर इस लड़की के हाव-भाव बताते थे कि वह बड़ी सावधान है और जो पग भी उठाती है फूंक-फूंक कर उठाती है मानों उसके सिर में चारों ओर आँखें लगी हुई हैं और वह प्रत्येक पग पर सबको देखती है। वह लापरवाह भी नहीं थी और उसकी आँखों में भय भी था। वह सदा भीड़ से अलग रहकर लोगों को जल्दी-जल्दी से देख लेती थी।

आज भी वह भीड़ भाड़ से घबराकर नदी किनारे रेत पर आ बैठी

थी। उसके पैर पानी के भीतर डूबे हुए थे और वह चुल्लू में पानी लेकर अपने हाथों का मैल धो रही थी। उसका भाव संजीदा था किंतु यकायक वह बड़ी जोर से चौंकी। फिर उसने तेजी से पलटकर पीछे देखा। अगले ही क्षण वह हल्की-सी चीख मारकर खड़ी हो गई। उसके सामने एक विदेशी आदमी खड़ा हुआ था। उसका एक हाथ जेब में था।

'सलोमी, तू फरार नहीं हो सकती। हम छाया की भाँति तेरे पीछे लगे हैं। यह बात तुझे भी मालूम है।'

उसने उस आदमी की ओर देखा किन्तु कुछ बोली नहीं। उसका मुँह सफेद पड़ता जा रहा। वह आदमी फिर बोला—

'मैं जानता हूं कि तू अकेली है, मुझे पता है कि तू भूखी है। मुझे मालूम है कि डर के मारे तुझे नींद नहीं आती। और यह बात यदि अधिक दिन तक रही तो तू पागल हो जायेगी। मगर हम नहीं चाहते कि तू पागल हो जाये।'

'फिर तुम क्या चाहते हो?' उसने आदमी से पूछा। स्वर में डर के साथ-साथ झल्लाहट भी थी।

'यह तुम जानती हो, यहाँ उसे कहना व्यर्थ है। मगर तुम मेरी बात मानकर अपने शरीर व जीवन को इन कष्टों से बचा सकती हो जो तुम अपनी करतूतों से उन्हें पहुँचा रही हो।'

'शटअप···!' वह जोर से बोली।

'सलोमी।' वह आदमी बोला—'मेरी जेब में रिवाल्वर है और मेरी उंगली ट्रिगर पर है। तनिक संकेत पर गोली तुम्हारे नंगे पेट में घुस सकती है।'

'मैं जानती हूँ कि यह केवल धमकी है। तुम मुझे कत्ल करके अपने देश का बेड़ा गर्क नहीं करना चाहते। मैं अपने आपको तुम लोगों से

बिल्कुल सुरक्षित समझती हूं, बिल्कुल।'

'क्या तुमने अपने जीवन के बारे में सोचा है?'

'मेरा जीवन अपराध है, मैं इन्हीं में प्रसन्न हूं।'

'क्या तुमको पता है तुम कितनी हसीन हो?'

'मैं जानती हूं, और मैं अपराधों के लिए इसका भी प्रयोग करती हूं।'

'क्या खुदा ने यह सुन्दर देह तुम्हें इसीलिए दी है?'

'खुदा ने केवल देह दी है, और बस। किसलिये दी है उसे कैसे कैसे उपयोग करना है यह मनुष्य की अपनी इच्छा पर है और मनुष्य की इच्छा हालात पर निर्भर करती है।'

'यदि तुम चाहो तो बड़े आराम से जीवन व्यतीत कर सकती हो?'

'मेरा वर्तमान जीवन बड़ा सुखी जीवन है।'

'क्या तुमने अपने शरीर पर चढ़ा हुआ मैल देखा। क्या तुमको इससे उठने वाली बदबू का एहसास नहीं। क्या तुम्हें मालूम है कि फटी हुई स्कर्ट में से तुम्हारी अंडरवियर तक दिख रही है, और ब्लाउज के फटे हुए भागों में से छातियां बेहयाई से बाहर झांक रही हैं।'

'यह सब मुझे पता है। मगर, यह मेरी छातियाँ हैं और सब जानते हैं कि हर औरत को यह चीज मिलती है फिर उसके जाहिर होने से तुम्हें कौन-सा कष्ट है। रही अंडरवियर की बात तो संसार में वैसे भी औरत मर्द हैं जो अंडरवियर पहिनते ही नहीं हैं।'

'अपराधों तथा उनकी इच्छा ने तुम्हें निर्लज्ज बना दिया है और तुम्हारी अक्ल मारी गई है।'

'क्या फिलहाल तुम यहां से जाओगे?'

'नहीं।'

'तो बकवास करते रहो।' वह घूमकर पानी के भीतर चली गई,

और अब वह अपना छोटा-सा स्कर्ट ऊपर उठाकर पानी से रानें धोने लगी। वह आदमी उसे खा जाने वाली नजरों से घूर रहा था। बड़ी देर बाद मर्द ने गुर्राते हुए स्वर में कहा—

'मैं तुम्हें शूट कर डालूँगा।'

'यह मत भूलना कि रहस्य मेरे पास है। दूसरी बात यह कि यह एक पब्लिक प्लेस है यदि मैंने जरा-सा भी शोर मचाया तो यहाँ के लोग तुम्हें भून डालेंगे।' यह बात सुनकर आदमी ने इधर-उधर देखा। यहाँ अन्य बहुत से लोग रेत पर पड़े हुए थे, उनमें स्त्रियां, लड़कियाँ तथा मर्द भी थे। वह ठिठक गया और सलोमी अपना शरीर धोती रही। आदमी भीतर ही भीतर ताव खा रहा था और जब उससे न रहा गया तो वह उस पर झपटा और उसकी कलाई पकड़ पानी से बाहर उसे खींचकर बोला—

'कुतिया की बच्ची, लातों के भूत बातों से नहीं मानते।' फिर वह उसे घसीटने लगा। सलोमी ने पहिले तो प्रतिवाद किया किन्तु जब उसे भान हुआ कि वह सफल नहीं हो सकेगी तो शोर मचाने लगी—

'बचाओ···! बचाओ···!'

उसका शोर सुनकर कई लोग उनकी ओर बढ़े, किन्तु आदमी के हाथ में जब रिवाल्वर देखा तो दूर ही खड़े रह गये। सलोमी फिर चिल्लाई। लहजा अंग्रेजी था।

'अरे कोई बचाओ!' और जब कोई आगे नहीं बढ़ा तो वह जोर-जोर से शोर मचाने लगी और आदमी उसे बुरी तरह सड़क की ओर खींच रहा था जो कुछ ऊँचाई पर थी।

इतने में कसरती बदन का एक युवा लड़का भीड़ को चीरता हुआ आगे आया और इतनी फुर्ती से उस आदमी पर झपटा कि उसे रिवाल्वर प्रयोग करने तक का मौका नहीं मिला। सलोमी को छोड़ इस

लड़के से उलझना पड़ा। यह लड़का बड़ा बलवान था उसने आदमी को घूँसों पर धर लिया। एक बार तो उस आदमी को उठाकर रेत पर फेंक दिया। वह आदमी उठा और बड़ी तेजी से सड़क की ओर भागने लगा। इस लड़के ने उसका पीछा किया, मगर वह बड़ी तेजी से भाग रहा था। सड़क पर एक कार पहिले से खड़ी थी'''आदमी कार के खुले गेट से भीतर प्रविष्ट हुआ तथा कार चल पड़ी। लड़का बेकार ही कुछ दूर तक कार के पीछे भागा, फिर थककर रुक गया।

जब वह लौटा तो उसे मालूम हुआ कि सलोमी सड़क पर आकर पुल की ओर जा रही है। उसने उसे तथा उसके लहराते हुए कूल्हों को देखा तो ललचा उठा। उसके शरीर में एक गुदगुदी सी होने लगी सो वह तेजी से उसकी ओर भागा तथा ऊँचे स्वर में बोला—

'ए मैडम'''शुक्रिया तो देती जाओ।' किन्तु लड़की रुकी नहीं बल्कि पुल के किनारे किनारे और तेजी से चलने लगी। उसकी कमर सर्प की भाँति लहरा रही थी। लड़के को उसका यह ढँग इतना पसन्द आया कि वह देखता रह गया। वह लड़की के सौन्दर्य, चाल तथा यौवन में खोया हुआ चल रहा था और लड़की पुल की मध्य में पहुँच चुकी थी। फिर यह लड़का उसकी चीख सुनकर चौंक उठा—उसने देखा कि लड़की की ओर एक और आदमी दूसरी ओर से चला आ रहा है वह उसी को देखकर चिल्ला रही है। फिर लड़की ने पुल के नीचे नदी की ओर झांका, पानी शोर करता हुआ बह रहा था। अगले ही क्षण उसने नदी में छलाँग लगा दी। आने वाले आदमी ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। बल्कि लापरवाही से चलता गया।

लड़के ने जब सलोमी को पानी में गिरते देखा तो वह बड़ी जोर से भागा और पुल पर पहुंचते ही पानी में छलाँग लगादी'''मगर उस समय तक लड़की पानी की धारा के साथ काफी दूर निकल चुकी थी—लड़का भी पानी में बह गया, किन्तु वह एक उत्तम तैराक था इसलिए

स्वयं को सम्हाल गया। लड़की पानी में हाथ-पैर मार रही थी, लड़का उसी ओर तैरने लगा। यह लोग बहाव की चपेट से बाहर धीमे बहते पानी में थे इसलिए लड़के को वहाँ तक तैरने में कोई कठिनाई नहीं हुई···मगर जब उसने लड़की को पकड़ा तो वह अचेत होने वाली थी। बस उसने इतना कहा—

'प्लीज'···मुझे इन लोगों से दूर ले चलो।' फिर वह बेहोश हो गई। लड़का दूसरे किनारे की ओर तैरता रहा···उधर झाड़ियाँ थीं तथा लोग भी नहीं थे। किनारे पर आकर उसने उसके पेट से पानी निकाला और होश में लाने की कोशिश करने लगा। गैर मामूली शीघ्रता से होश में आकर क्षीण स्वर में बोली—

'मुझे बचाकर तुमने स्वयं के लिए भी संकट मोल ले लिया है।'

'क्या तुम्हें खतरा है?'

'हाँ···मुझे किसी सुरक्षित स्थान पर ले चलो···प्लीज!' उसने प्रार्थना की। लड़का उसे सहारा देकर सड़क तक लाया और बड़ी कठिनाई से टैक्सी में बिठाकर अपने कमरे पर ले आया।

'मेरा नाम सलोमी है।' वह बोली—अब तक वह काफी अच्छा अनुभव कर रही थी। लड़के ने अपने कपड़े उसे देते हुए कहा—

'लो इन्हें पहिन लो।'

लड़की ने अपने भीगे हुए कपड़े उसके सामने उतार डाले। लड़के ने जब उसके स्वच्छ शरीर को देखा तो उसके अंग-अंग में गुदगुदी होने लगी। सलोमी ने उसकी इस बात को भाँपकर कपड़े बदलने में और भी देरी लगाई, फिर वह कहने लगी।

'क्या तुम अकेले रहते हो?'

'हाँ!'

'करते क्या हो?'

'एम० ए० का विद्यार्थी हूं'''यह कमरा किराये पर ले रखा है।'

'मेरी मौजूदगी पर किसी को आपत्ति तो नहीं होगी ?'

'नहीं'''दूसरे लड़के भी लड़कियों को लाते हैं।'

'आवारा लड़कियों को ?'

'नहीं कालेज की लड़कियों को।'

'मुझे जाड़ा लग रहा है।'

'मैं काफी लाता हूं।' वह यह कहकर काफी बनाने चला गया। लड़की अपने बाल सुखाती रही। मर्दाना कपड़ों में वह और भी भली लग रही थी। लड़का दो कप काफी तथा कुछ सैंडविप्स ले आया। दोनों खाने लगे। इसी बीच सलोमी ने पूछा—

'तुमने अपना नाम नहीं बताया ?'

'मेरा नाम'''मेरा नाम जिमी है।' वह झिझककर बोला और वह हँस दी।

'क्यों ?' लड़के ने पूछा।

'क्योंकि तुम्हारा नाम जिमी नहीं'''तुमने किसी कारणवश झूठ बोला है।'

'यह गलत है।'

'क्या मैं साबित कर दूं।'

'हाँ करो।'

'एक तो यह कि तुमने जिस घबराहट और झिझक से अपना नाम बताया उससे साफ पता चलता है कि तुम झूठ बोल रहे हो। दूसरे यह कि'''तुम्हारा नाम तुम्हारे हाथ पर गुदा हुआ है और मैं उसे पढ़ चुकी हूं।'

'ओह !' उसने अपना हाथ देखा और जल्दी से गुदे हुए भाग को छुपाने की चेष्टा करने लगा।

'घबराओ नहीं'''अब जबकि मैं तुम्हारा असल नाम जान गई हूं उसे छुपाने की जरूरत नहीं। मगर यदि तुम नहीं चाहते कि तुम्हें तुम्हारे असली नाम से पुकारा जाये तो मैं तुम्हें जिम ही कहूंगी'''क्या यह ठीक है?'

'ठीक है!' लड़के ने कहा और मुस्कुरा दिया। वह हँस पड़ी। कुछ देर चुप रहकर जिम ने पूछा—

'सलोमी'''अब तुम अपने विषय में बता डालो।'

'क्या बताऊँ?'

'मैंने महसूस किया कि वह तुम्हारा अपहरण करना चाहता था और फिर तुम उस व्यक्ति को देखकर डर गई थीं तथा नदी में छलाँग लगा दी थी।'

'यह सब ठीक है। वह गहरी सांस लेकर बोली।,

'मगर वे चाहते क्या थे?'

'वे गुण्डे हैं और मेरी जवानी से खेलना चाहते हैं। मैं एक बार उनके चँगुल से छूटकर मारी मारी फिर रही हूं और आज वह पुनः टकरा गये।' उसने इतमीनान की साँस लेकर कहा। जिम सोचने लगा कि ऐसी लड़की जो इस प्रकार अपने शरीर का प्रदंशन करती फिर रही हो, क्या गुण्डों से घबरा भी जायेगी। किन्तु उसने कुछ नहीं कहा।

'मेरे पेट में आज हल्का दर्द है'''डाक्टरों का कहना है कि मेरी एपिडिक्स बढ़ी हुई है।'

'उसका तो आपरेशन कराना चाहिए।'

'नहीं'''योंही ठीक हो जायेगी। क्या मैं सो जाऊँ?'

हाँ'''मगर अभी रात होने में थोड़ा टाइम है।'

'मैं थकान अनुभव कर रही हूं'''तुम चाहो तो कहीं घूमकर आ सकते

हो ।' वह बोली और जिम तैयार हो गया । वह उसी के पलंग पर लेट गई । जिम घूमने निकल गया । किन्तु चार घंटे तक यहां वहां घूमने के समय सलोमी उसके मस्तिष्क पर छाई रही । वह बार-बार उसके जवान शरीर की कल्पना करता । जब वह लौटा तो रात काफी हो चुकी थी और सलोमी नींद से शायद अभी-अभी जागी थी । जिम ने नाइट ड्रेस पहिना और खड़ा होकर कुछ सोचने लगा । सलोमी उसे देखकर हँसी और पलँग पर एक ओर खिसकती हुई बोली—

'आ जाओ " जिम तो चाहता ही था, वह बे झिझक लिहाफ में घुस गया और सलोमी ने बत्ती बुझा दी । इस वक्त जिम के शरीर को एक झटका सा लगा क्योंकि उसके हाथों ने सलोमी के शरीर पर वस्त्रों का अनुभव नहीं किया था ।

'मैं इसी तरह सोती हूं'''यदि तुम्हें नींद न आये तो मैं नीचे लेट जाती हूं ।' वह बोली मगर जिम ने उसे रोक दिया । प्रतिक्षण उसके शरीर की तपिश बढ़ती रही'''सलोमी भड़कती हुई भावनाओं का उत्तर भड़की हुई भावनाओं से ही दे रही थी । जिम युवा था—वह भी जवान थी और दोनों जवानी के टकरावों ने तूफान उठा दिया था ।

प्रातः सलोमी सोती रही तथा जिम उठकर नाश्ता तैयार करता व सोचता रहा कि रात को जितनी सरलता से सलोमी ने उसे स्वयं को सौंप दिया था उससे तो ऐसा नहीं लगता कि वह गुण्डों से डरती हो । फिर वह उसके बारे में सोचता रहा—सोचता चला गया'''

नाश्ते के बीच सलोमी ने फिर बताया कि उसके पेट में दर्द हो रहा है ।

'क्या मैं तुमको डाक्टर के पास ले चलूँ ।'

नहीं'''तुमने मुझे अपने घर से निकाला कि एक गोली मेरी खोपड़ी में प्रवेश कर जायेगी ।'

'मगर क्यों ?'

'वह गुंडे ऐसे ही शैतान हैं, और यदि उन्हें यह ज्ञात हुआ कि मैं अब तुम्हारे पास हूं तो वह तुम्हें भी समाप्त कर डालेंगे।'

'यह बात मेरी समझ में नहीं आई ?'

'नहीं आयेगी...मगर जिम मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं कि अगर मैं जीवित बच सकी तो तुमको अपार दौलत का स्वामी बना दूंगी।'

'दर्द की वजह से कदाचित तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है।'

'नहीं...यह दर्द कोई नया नहीं है। पहले भी कई बार हुआ है। मगर आज के दर्द में तुम्हारा भी हाथ है।'

'क्या मतलब ?'

'तुमने क्या कुछ कम तंग किया है मुझे।'

'इस तरह नहीं कहो...वर्ना मैं फिर तंग करने लगूंगा।'

'मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी...अगर पेट में दर्द न होता। यदि तुम जाना चाहो तो जा सकते हो।'

'हाँ, मुझे कालेज जाना है किन्तु शायद एक-दो दिनों के लिये मुझे अपने गाँव भी जाना पड़ेगा।'

'हो आओ।' वह बोली।

जिम तैयार हो गया। सारे दिन सलोमी उसके मस्तिष्क पर छाई रही। फिर वह रात को जब वापस मकान पर लौटा तो वह लेटी थी। उसने कुछ खाना-पीना भी तैयार कर लिया था। सलोमी ने जिम के साथ थोड़ा-सा भोजन किया। फिर दोनों लेट गये और सलोमी जिम की ज्यादतियों को अनुभव करके बोली—

'हालांकि मेरे पेट में दर्द है। मगर मैं तुम्हें निराश नहीं करूंगी।'

'कल मैं दो दिनों के लिये गाँव जाऊँगा क्या तुम अकेली रह सकोगी।'

'हाँ ! मुझे ऐसी आदत है।'

'घबराओगी तो नहीं ?'

'जहाँ तक मेरे अनुभव का सवाल है मेरी मौजूदगी का उन गुंडों को पता नहीं। वर्ना उन्होंने यहाँ पहुँचकर अब तक मुझे गोली भी मार दी होती।'

'अच्छा अब···!' जिम बोला और वह उसका मन्तव्य समझ गई।

'तुम अब तक मेरी समझ में नहीं आई हो।' वह काँपते हुए भावुकता से बोला।

'जब समझ लोगे तो हैरत में रह जाओगे।'

'क्या तुम इतनी खतरनाक औरत हो।'

'नहीं मैं इतनी शानदार औरत हूं।'

'यह ठीक है···मैंने इतनी तूफानी औरत नहीं देखी।' जिम ने कहा और उसे बाहों में भींच लिया। सलोमी ने कोई विरोध नहीं किया।

पांच

सलोमी हर विचार से एक शानदार लड़की थी सो जिम को उसकी जुदाई ने व्याकुल कर डाला। वह और उसका प्रत्येक ढंग उसे बार-बार स्मरण आ रहा था। वह तड़पकर रह जाता था। अब वह अपने आपको ही कोस रहा था। क्यों वह तीन दिन तक बाहर रहा। यदि वह बाहर न जाता तो यथा समय उसे डाक्टरी सहायता देकर बचा

सकता था। शायद सलोमी से उसे प्रेम हो गया था।

उसे याद करके उसके आंसू आ गये। उसे याद आया कि तीन दिन गैर हाजिर रहकर जब वह वापस लौटा तो सलोमी पेट के दर्द के कारण कदाचित बेहोश हो गई थी। हजारों बार बुलाने पर भी उसने कोई उत्तर नहीं दिया। फिर उसने बड़ी कठिनाई से उसे अचेत अवस्था में ही अस्पताल पहुंचाया, जहां डाक्टरों ने उसका निरीक्षण करके बताया कि उसकी एपिडिक्स जो सूज भी गई थी, मवाद पड़ने से काफी समय पहले फूट गई है और देह में मवाद फैलकर विष बन चुका है। इसका न आपरेशन किया जा सकता है न कोई उपचार हो सकता है।

उसने जब उसे वहां छोड़ा था तो वह मूर्छित थी। उसे जनाना सर्जिकल वार्ड के एक कोने में रखा गया था। तीमारदारी ऐसी हो रही थी जैसे सरकारी अस्पतालों में की जाती है। फिर जब वह दुबारा उससे मिलने गया तो भी वह बेहोश थी...दूसरी सुबह भी वह अचेत ही थी। मगर एक अन्य मरीज की एक रिश्तेदार लड़की ने उसे बताया कि वह कई बार होश में आकर इधर-उधर भागी रही थी...वह कुछ कहना चाहती थी शायद।

'वह क्या कहना चाहती थी।' वह सोचने लगा। उसका जीवन बड़ा रहस्यपूर्ण था। वह उससे कुछ न कुछ बात शुरू से ही छुपाती रही है। कोई उसका राज जो बड़ा महत्व का था। वे लोग जो उसका अपहरण करना चाहते थे, केवल गुंडे नही बल्कि उनकी बैक पर कोई रहस्य था। वह उनसे भयभीत थी। यदि भयभीत न होती तो पानी में छलांग क्यों लगाती। वह आत्महत्या करना चाहती थी।

फिर उसे अस्पताल की बात स्मरण आई। जिस रात होश में आकर उसे दौरे पड़े और वह उठ-उठकर भागी थी उसी रात वार्ड में चार मौतें हुई थीं। और वार्ड का स्टाफ उन्हीं के पीछे लगा हुआ था और

उसकी ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया था। जब प्रातः वह उसे देखने गया तो वह उखड़ी-उखड़ी साँसें ले रही थी। डाक्टर ने बताया कि उसका अन्तिम समय आ गया है। फिर उसने दो एक बार आँखें खोलकर उसे देखा। उसके चेहरे पर इतमीनान छाया हुआ था। मानो वह किसी विशेष कार्य को निवटा चुकी हो। जैसे उसके जीवन का लक्ष्य पूरा हो गया हो।

'ज़िम ! मेरी हर वह बात जो तुमको विचित्र लगी है सदा राज रखना।' आखिर उसने उसका हाथ पकड़कर बड़ी कठिनाई से कहा। हाथ बर्फ की तरह ठंडा था वर्ना पहिले यही हाथ आग की भाँति गर्म होते थे। उसे उसकी बात सुनकर अचम्भा हुआ था।

'यदि तुमने ऐसा न किया तो वह लोग तुम्हें मार डालेंगे। मैं नहीं··· चाहती कि मेरे कारण कोई तुम्हारी हत्या करे।'

वह उसे हैरत से देखता रहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या उत्तर दे। वह उसका हाथ दबाये उसे देखता रहा। उसकी साँस और अधिक उखड़ गई।

'मेरे स्कर्ट के सिले हुए किनारे में किसी जगह सोने की पत्तियाँ है। उन्हें बेच डालना शायद दस हजार रुपया मिल जायेगा। कुछ मेरे अन्तिम संस्कार पर लगा देना। शेष अपने उपयोग में लाना।'

'सलोमी···सलोमी···।' उसने रुंधे हुए मगर प्यार भरे स्वर में कहा।

'जिम ! मेरे प्यारे जिम ! अगर स्थिति हमारे अनुकूल होती, और मैं विपत्ति में न फंसती तो शायद अपराधी जीवन छोड़कर तुमसे शादी कर लेती।'

'अपराधी···!'

'मैं एक अपराधिनी हूं।'

'वे लोग कौन थे ?'

'मेरे शत्रु !'

'वे तुमसे क्या चाहते थे ?'

'खेद है जिम कि मैं तुम्हें यह नहीं बता सकती…क्योंकि बताने से मेरा एक उद्देश्य रह जायेगा। मैं उन लोगों से फरार होकर दर-दर की ठोकरें खाती फिर रही हूं। उन्हीं के डर से मैं अपना इलाज कराने बाहर नहीं आ सकी। अब मैं यह चाहती हूं कि उन लोगों की रातों की नींद हराम हो जाये। यही नहीं सारी सरकार…उनका पूरा देश सो न सके…उम्र भर…उम्र भर…आह जिम ! मुझे प्यार करो मैं जा रही हूं।' उसने अपने दोनों हाथ उठाने चाहे। उसने अपना मुंह झुका दिया। और उसके ठंडे होटों से होंट मिला दिये। उसकी आँखों से आँसू बह निकले और जब उसने अपना चेहरा उठाया, तो वह मर चुकी थी…मर गई थी।

मौत का यह दृश्य स्मरण करके जिम अब भी रो उठा। फिर उसे याद आया कि सलोमी क्योंकि ईसाई थी सो उसे ईसाइयों के कब्रिस्तान में दफन करने के लिए कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। यदि एक ईसाई मित्र उसकी सहायता न करता तो सलोमी की लाश शायद मुर्दाघर में पड़े-पड़े ही सड़ जाती।

आज उसने सलोमी के स्कर्ट में से सोने की अनेक ऐसी पत्तियां निकालीं जिनमें कीमती हीरे जड़े हुए थे। उनकी कीमत बहुत अधिक थी। फिर उसने उसके कपड़े सावधानी से अलमारी में रख दिये ताकि वह याद आती रहे।

आज वह बड़ा उदास था। अपने हाथ पर गुदा हुआ जब वह अपना नाम देखता था तो ऐसा लगता था कि यह उसका नाम नहीं। उसका नाम तो जिम है…जिम…जो सलोमी ने उसे दिया था।

कितना प्यारा नाम था। सलोमी कितनी प्यारी लड़की थी उस

लड़की से भी अच्छी और उससे भी । वह हर उस लड़की से अच्छी थी जो आज तक उसकी जिन्दगी में आई थी और उसके जीवन में अब तक सैकड़ों ही लड़कियाँ आ चुकी थीं। क्योंकि वह जवान था सुन्दर था, उसका शरीर कसरती था।

'सलोमी को शीघ्र ही नहीं भुलाया जा सकता।' उसने सोचा—सोचता गया। वह उसके मस्तिष्क से चिपककर रह गई थी…उसका गदराया हुआ शरीर और उसके शरीर की तपिश।

छः

यह आज तीसरी शाम थी कि मास्टर ब्रेन उस लड़की को 'होटल शबनम' के बड़े हाल की चौथी मेज पर देख रहा था। न उसके साथ पहिले कोई था और न आज। सबसे पहिले उसके गम्भीर सौन्दर्य ने मास्टर ब्रेन को अपनी ओर खींचा था साथ ही इस बात ने भी कि तीन-चार पैग पीने पर भी वह इस प्रकार होश में थी मानो पी ही न हो। उसकी आँखें बड़ी स्वच्छ थीं व उन पर पलकें झुकी रहती थीं। उसका यही वह ढंग था जिसे देखने से प्रतीत होता था कि वह रो रही है। मगर उसकी यह उदासी भी बड़ी आकर्षक थी। उसके पूरे तथा सूखे हुए बालों ने उसकी उदासी और भी बढ़ा दी थीं। फिर उसके बैठने सहम-सहमकर इधर-उधर देखने आदि का ठहरा-ठहरा अन्दाज भी अच्छा था। कभी-कभी वह साज की धुनों पर पैरों को हिलाने लगती थी इस प्रकार उसका छोटा-सा तंग स्कर्ट चिकनी व गोरी रान से फिसलकर खतरनाक हद तक खिसक पड़ता था। संयुक्त रूप से ऐसा

जान पड़ता था जैसे आस-पास के माहौल से उसे कोई सरोकार नहीं है। यह भी प्रकट था कि उसे किसी की प्रतीक्षा भी है।

मास्टर ब्रेन ने यह भांप लिया और उसका जिज्ञासु दिमाग यह जानने के लिए व्याकुल हो गया कि उसे किसकी प्रतीक्षा है। इस आधुनिक युग में अपने इस प्रकार सौन्दर्य व जवानी के बाद भी निराशा में खोई हुई एक अकेली मूर्ति बनी क्यों बैठी है। इसलिए जब वह दो पैंग पी चुकी तो मास्टर ब्रेन ने वेटर को संकेत किया और पास आने पर कहा--

'वह जो मिस साहिबा वहाँ बैठी हैं वह क्या पीती हैं।' कदाचित वेटर को उसकी यह हरकत अप्रिय लगी सो वह उसे घूरने लगा, मगर जब मास्टर ब्रेन ने पाँच का एक हरा नोट बड़ी सफाई से उसकी मुट्ठी में दे दिया तो वह खुश होकर बोला—

'वह ह्विस्की पीती हैं और चार पैंग से अधिक आज तक नहीं पी···!'

'यहाँ कब से आ रही हैं?'

'आज शायद सातवाँ दिन है।'

'उनके साथ कोई आता जाता नहीं।'

'नहीं···न कोई आता है न कोई जाता है। वह अकेली आती है और अकेली ही जाती है।'

'जासूस होगी!' मास्टर ब्रेन ने मुस्कुराकर मगर धीरे से कहा और वेटर भी मुस्करा दिया। फिर जब उसने वेटर से कुछ और नहीं पूछा तो वह चला गया। अब मास्टर ब्रेन इस लड़की के बारे में सोच रहा था। सम्मिलित रूप से वह उसे एक अजीब लड़की दिखाई दे रही थी। कल शाम उसको उसका पीछा करके इतना ज्ञात कर लिया था कि कर्जन रोड पर बने एक पुराने फ्लैट में रहती है—और वह भी···

अगली। आज वह इससे उलझना चाहता था। कोई बहाना ढूंढ़ रहा था।

वह अब भी अपने स्थान पर बैठी थी। और अपने छोटे से पर्स से खेल रही थी। सामने रखा हुआ मैग खाली हो गया था। मास्टर ब्रेन एक इरादे के अनुसार अपनी जगह पर खड़ा हो गया। किन्तु अभी वह चला भी न था। एक आदमी उस लड़की की ओर बढ़ता हुआ दिखाई दिया। और वह अपनी जगह पर से ठिठक गया। क्योंकि यह भी विलक्षण बात थी। आने वाला आदमी उसके निकट पहुँचा और जेब से एक लिफाफा निकालकर उसे दिया। और कुर्सी घसीटकर वहीं बैठ गया। लड़की ने लिफाफा लेकर उसे बिना खोले अपने पर्स में डाल लिया। फिर उनमें धीरे-धीरे कुछ बातें होती रहीं। ऐसा लगता था कि वह आदमी उसे कुछ समझा रहा है···और वह गर्दन हिला रही है। अधिक समय तक आदमी ने ही बात की, लड़की केवल गर्दन हिलाती रही। फिर वह आदमी उठ गया। लड़की ने उसकी ओर नहीं देखा, बल्कि पर्स में से एक छोटा-सा शीशा निकालकर अपनी आँखों के सामने इस प्रकार कर लिया मानो मेकअप ठीक कर रही हो। मगर यह तो मास्टर ब्रेन जानता था कि वह जाने वाले आदमी को देख रही है। फिर मास्टर ब्रेन को ऐसा लगा जैसे वह बड़ी जोर से चौंकी हो। अपना पर्स फर्श पर गिराकर वह उसे उठाने के लिए नीचे झुकी। यह सब-कुछ पलक झपकने में ही हो गया। इसके साथ ही एक गगन भेदी तथा हृदय विदारक चीख से पूरा हाल गूंज उठा—थर्रा गया।

चीखने वाला एक आदमी था जो उस लड़की से अगली मेज पर बैठा हुआ था। उसके साथ एक औरत भी थी। वह आदमी खड़ा होकर चीख रहा था। सब लोगों का ध्यान उसकी ओर चला गया, किन्तु शीघ्र ही किसी की कुछ समझ में नहीं आया। किन्तु फिर सबसे पहले उस आदमी की साथ वाली औरत चीखी, और घबराती कुर्सी से

टकराती धम से गिरी। इतने में लोगों ने देखा आदमी ने अपना सीना दबा रखा है। और उसकी उंगलियों के बीच से रक्त बह रहा है। इसके साथ ही वह लोग तत्क्षण भाँप गये कि आदमी को शूट किया गया है।

'खून !' एक जवान लड़की खून देखकर चिल्लाई और लोग उसकी ओर भागने लगे। इतने में वह व्यक्ति गिर चुका था तथा उसका हाथ घाव पर नहीं था और वहाँ से खून फौवारे की भाँति बह रहा था।

मास्टर ब्रेन ने इस ओर भी ध्यान रखा किन्तु लड़की पर से दृष्टि नहीं हटाई। वह अपना पर्स उठाकर खड़ी हुई और उस भीड़ में मिल गई जो मृतक के गिर्द जमा हो रही थी। होटल का स्टाफ बौखला उठा था।

मास्टर ब्रेन बड़ी फुर्ती से अपनी जगह से उठा और निश्चित ढंग से लड़की के पीछे आकर खड़ा हो गया। वह पर्स अब भी उसके हाथ में था। प्रकट में तो वह फर्श पर पड़े आदमी की ओर जिज्ञासु दृष्टि से देख रही थी किन्तु हकीकत यह है कि वह असाधारण रूप से सावधान थी।

मास्टर ब्रेन ने देखा सामने फर्श पर उसी घायल आदमी की लाश पड़ी थी। लाश इसलिए कि वह मर चुका था। खून जख्म से अब भी बह रहा था। उसकी टाँगें मेज के नीचे थीं तथा हाथ दायें-बाँये फैले हुए थे। उसके साथ वाली स्त्री अब तक बेहोश थी।

मगर मास्टर ब्रेन को उस लाश या अचेत औरत में कोई रुचि नहीं थी। वह तो उस औरत का पर्स झपटना चाहता था। एक बार उसने सतर्क ढंग से उसे झटका दिया तो वह चौंकी और फिर अधिक सम्हल गई। कदाचित उसे इस बात का भान नहीं हुआ था कि किसी ने उसका पर्स झपटना चाहा है।

भीड़ काफी बढ़ती जा रही थी और मास्टर ब्रेन बेचैन सा था।

अब उसने देखा कि वह लड़की वहां से खिसकने की कोशिश कर रही है। सो मास्टर ब्रेन ने तत्काल कुछ करने का फैसला कर लिया। फिर उसने गर्दन झुकाई और गले से बड़ी हल्की सी चीख निकाली। ऐसी चीख जिसे सुन आस-पास खड़े लोग बौखलाकर इधर-उधर हो गये। मगर यह किसी को पता न चला कि किसने चीख मारी है क्योंकि लोग घबराकर तितर बितर हुए थे इसलिए मास्टर ब्रेन को मौका मिल गया और बस वह उस लड़की से टकराया और लड़खड़ाकर गिर पड़ा। पर्स उसके हाथ के नीचे दब गया। उसके गिरने से कई लोग उसके ऊपर गिरे और वहां अच्छी खासी धींगा मुश्ती मच गई। मास्टर ब्रेन ने बड़ी सफाई के साथ पर्स में से लिफाफा निकाला और गरेबान में डाल लिया। फिर पर्स को दूर सरका दिया।

वह लड़की भी गिर पड़ी थी, फिर उसने बड़ी फुर्ती से उठकर पर्स ढूंढा। उधर मास्टर ब्रेन पर लुढ़क आने वाले लोग जल्दी-जल्दी उठने लगे और वह भी खड़ा हो गया। उसने लड़की की ओर देखा वह बहुत अधिक भयभीत तथा परेशान दिखाई दे रही थी। उसे पर्स मिल नहीं रहा था। कदाचित उसकी आँखों में आँसू भी आ गये थे क्योंकि वह बार-बार पलकें झपकाकर आँसू सुखाने की चेष्टा कर रही थी। साथ ही वह दरवाजे की ओर भी देख लेती थी। पर्स न मिला और वह भीड़ में किसी भी सन्देहजनक व्यक्ति को ढूंढने का प्रयत्न करने लगी। किन्तु मास्टर ब्रेन शरीफों की तरह बैठा हुआ था।

इतने में पुलिस आने का शोर सुनाई दिया। और लोग दरवाजे की ओर देखने लगे। इन्सपैक्टर शर्मा तथा उसके सहायक साथी भीतर आ रहे थे।

इन्सपैक्टर शर्मा को देखकर होटल का मैनेजर जो इस वक्त वहां मौजूद था हाथ हिलाकर बोला

'खून हो गया है।'

'मैं देखता हूं।' उसने अकड़कर कहा और लोग उन्हें देखकर अपने आप लाश तथा मूर्छित औरत के पास से हट गये।

जब इन्सपैक्टर शर्मा लाश का निरीक्षण कर चुका तो उसने ऊंचे स्वर में कहा—

'मर चुका है मौत गोली लगने से हुई है।'

'जनाब···यह आपकी ही खूबी है कि इतनी फुर्ती से इतनी बड़ी बात बता दी अन्यथा अच्छे-अच्छे पुलिस अधिकारी बगलें झांकते फिरते हैं और उन्हें यह तक ज्ञात नहीं हो पाता कि मौत गोली से हुई है या गोले से।' मास्टर ब्रेन शर्मा की बात सुनकर बोला। शर्मा का सीना फूल गया। मास्टर ब्रेन ने कहा—

'किन्तु जनाब···एक बात अभी तक समझ में नहीं आई?'

'वह क्या?'

'मौत कौन सी गोली से हुई। मेरा तात्पर्य है बन्दूक या राइफल की गोली से···या रिवाल्वर की गोली से या जहर की गोली से?'

'क्या तुम मसखरे हो?' शर्मा खिसिया उठा।

'मैं गम्भीर हूं जनाब!'

'मौत राइफल की गोली से हुई है।'

'मगर फायर की आवाज तो किसी ने भी नहीं सुनी।'

'क्या?'

'पूछ लो इन लोगों से।'

इन्सपैक्टर शर्मा प्रश्नसूचक दृष्टि से सब लोगों की ओर देखने लगा।

'जी हाँ···धमाके की ध्वनि नहीं हुई थी।' मैनेजर ने मास्टर ब्रेन की बात की पुष्टि कर दी।

'क्या राइफल की इतनी छोटी सी गोली इतने बड़े मनुष्य को जो

चाँद पर जाने के लिये राकेट बना सकता है, चांद पर उतर सकता है मार सकती है।'

'गोली खाकर देखो।' शर्मा झल्लाया।

'यह व्यक्ति इस कुर्सी पर बैठा था सो घाव का कोण बता रहा है कि गोली बाहर से आई थी।' मास्टर ब्रेन बोला और इन्सपैक्टर शर्मा उसे घूरने लगा।

'यदि होता इन्सपैक्टर शर्मा तो इस लाश को देखते ही बेहोश हो जाता।

'क्या···?' शर्मा बड़े जोर से चौंका।

'जनाब···मैं इन्सपैक्टर शर्मा की बात कर रहा हूं। एकदम गधा है। बस पूंछ व सींगों की कसर है। मगर सुना है गधे के सिर पर सींग नहीं होते।' मास्टर ब्रेन ने कहा।

'यह इन्सपैक्टर शर्मा ही हैं।' मैंनेजर मामले की नजाकत को समझता हुआ बोला। मास्टर ब्रेन ने बड़ी जोर से उछलकर भय प्रदर्शित करते हुए कहा—

'क···क्या सच!'

'जी हाँ।' मैंनेजर ने कहा।

'ओह इन्सपैक्टर साहब क्षमा करना मैंने आज से पहले न इन्सपैक्टर शर्मा को देखा था न गधे को।' इतना कहकर वह बिल्ली की तरह एक ओर को खिसकता चला गया।

'यह कौन है?' शर्मा ने रोषपूर्ण स्वर में मैंनेजर से पूछा।

'हमारा स्थाई ग्राहक है।'

'क्या नाम है इसका?'

'नाम तो मुझे मालूम नहीं।'

'क्या काम करता है?'

'कोई बड़ा कारोबार ही करता होगा'''इसकी टेबिल सदा रिजर्व रहती है।'

'ऊंह।' शर्मा ने कहा और फिर लाश को देखने लगा।

'तलाशी लो।' उसने अपने साथियों को आदेश दिया और वह लाश पर झुक गये। मास्टर ब्रेन ने देखा वह औरत बाहर खिसक गई है, सो उसने उसका पर्स मेज के नीचे से उठाया और बाहर निकलने का प्रयत्न करने लगा।

बाहर आकर उसने देखा कि वह लड़की धीरे-धीरे गेट की ओर जा रही है। वह लपका और गेट आने से पूर्व ही उसे जा लिया।

'मैडम !' वह बोला और वह ठिठक गई। पलटी और प्रश्नसूचक दृष्टि से उसे देखने लगी। उसकी आँखों में कौतूहल भी था क्योंकि वह उसे भीतर हाल में देख चुकी थी।

'आप खतरे में हैं।' मास्टर ब्रेन बोला।

'क्यों ?' उसने पूछा हालांकि वह डर गई थी मगर डर को उसने छुपा भी लिया था।

'वह गोली।' मास्टर ब्रेन फिर बोला।

'कौन सी गोली ?'

'जिससे वह आदमी मारा गया।'

'ओह वह'''मगर उससे मेरा क्या सम्बन्ध ?'

'वह आपके लिए चलाई गई थी।

'ईडियट'''।' वह जल्दी से बोली और फिर झुरझुरी लेकर रह गई। फिर बिना कुछ कहे जल्दी से घूमी और आगे बढ़ी। मास्टर ब्रेन ने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया। वह उसकी इस हरकत पर बड़ी जोर से चौंकी और बोली—

'इस हरकत का मतलब ?'

'आगे बिजली का खंबा है। आप ज्योंही प्रकाश में आयेंगी कोई गोली आपकी खोपड़ी में प्रवेश कर जायेगी।'

'नहीं।' वह सरसराते हुए स्वर में बोली और भयभीत आंखों से बिजली के खंबे की ओर देखने लगी।

'आइये।' मास्टर ब्रेन ने उसे उस ओर खींचा जहाँ कारें खड़ी थीं। वह लड़की दो-चार पग उसके साथ चली फिर हाथ झटकने की चेष्टा करती हुई कटु स्वर में बोली—

'मैं नहीं जाऊँगी···तुम मेरा हाथ छोड़ दो।"

'मैं हाथ नहीं छोड़ूंगा।'

'बदतमीज !' उसने फिर झटका दिया किन्तु यह मास्टर ब्रेन की पकड़ थी।

'मैं शोर मचा दूंगी।' आखिर वह बेबसी से बोली ——— मास्टर ब्रेन ने उसकी कलाई एक झटके से छोड़ दी। वह लड़खड़ाई और फिर सम्हलकर उसे घूरती हुई पलटी।

'मैडम···आपका पर्स।' मास्टर ब्रेन ने उसका पर्स सामने किया और वह इस प्रकार रुक गई मानो ब्रेक लग गया हो। फिर उसने मास्टर ब्रेन को घूरा व पर्स पर झपटना चाहा, किन्तु उसने पर्स वाला हाथ हटा लिया और अपनी कार की ओर चलता हुआ बोला—

'आप चाहें तो जा सकती हैं फिर वह चलता हुआ अपनी कार तक आ गया। उसे मालूम था कि वह पीछे-पीछे आ रही है।'

कार के द्वार की ओर आकर वह ठिठक गया यहाँ अन्धेरा था। पंक्तिबद्ध कारें खड़ी हुई थीं। कोई आदमी आस-पास नहीं दिख रहा था। मास्टर ब्रेन बड़े इतमीनान से घूमा और चौंक गया। लड़की के हाथ में रिवाल्वर था।

'पर्स मेरे हवाले कर दो।' वह धीरे से बोली।

'और...यदि मैं मना कर दूं तो ?'

'तो मैं तुम्हें शूट कर दूंगी, यह बे आवाज रिवाल्वर है।'

'क्या उस व्यक्ति को भी तुम्हीं ने कत्ल किया है ?'

'व्यर्थ की बातें नहीं करो।' वह बोली—'क्या तुम पर्स दे रहे हो ?'

'लो।' वह बोला और पर्स उसकी ओर बढ़ाया।

'फेंक दो।' वह बोली। मास्टर ब्रेन भांप गया कि वह काफी चालाक है। अतः पर्स उसने उसकी ओर उछाल दिया। लड़की ने रिवाल्वर को निशाने पर किये हुए एक हाथ से पर्स को दबोचा और पूछा—

'तुम कौन हो ?'

'मैं, इससे तुम्हें कोई सरोकार नहीं।' वह लापरवाही से बोला।

'तुम्हें क्या मालूम है ?'

'हाँ इसका उत्तर दे सकता हूं।' मास्टर ब्रेन कहने लगा—'तुम एक सप्ताह से इस टेबिल पर आती हो। तुम्हें किसी की प्रतीक्षा थी। जिसकी तुम्हें प्रतीक्षा थी वह आज आया और एक लिफाफा तुम्हें देकर चला गया। तुम बड़ी सावधान थीं तुमने पर्स में से छोटा शीशा निकाला और उसमें देखने के बहाने तुमने पीछे दरवाजे की ओर देखा जहां तुमको बन्दूक या राइफल अथवा नये ढंग का कोई दूरमार वाले रिवाल्वर की नाल दिखाई दी। उसका निशाना तुम्हारी पीठ का था इसलिए तुम बड़ी चालाकी से अपना पर्स गिराकर मेज के नीचे झुक गईं। और उसी क्षण गोली चली किन्तु झुक जाने के कारण तुमको नहीं लगी बल्कि सामने वाले आदमी के सीने में जा घुसी। उसकी साथी औरत खून देखकर बेहोश हो गई। तुम लाश के पास एकत्र हो जाने वाली भीड़ में मिल गईं ताकि कातिल फिर से तुम्हें निशाना न बनाये।

जब तुम्हें इस बात का विश्वास हो गया कि रास्ता साफ है तो बाहर आईं।

'अर्थात् तुम्हें सब कुछ पता है।' जब वह चुप हुआ तो उसने कहा।'

'हाँ, और मेरा विचार है कि कातिल अब भी कहीं आस-पास है।'

'कातिल!' वह घबराकर बोली फिर बौखलाकर अन्धकार में इधर-उधर देखने लगी। इसी समय मास्टर ब्रेन ने उसकी कलाई पर हाथ मारा, वह जोर से चीखी। उसकी चीख सुनकर दो आदमी दौड़ते हुए उधर आये और उनमें से एक तगड़ा वाला आदमी बोला—

'साले...लड़कियों को छेड़ता है।' फिर वह दोनों बेतहाशा मास्टर ब्रेन पर टूट पड़े। लड़की का हाथ छोड़कर वह उनसे उलझ पड़ा।

अवसर पाते ही लड़की ने अपना रिवाल्वर उठाया और अन्धकार में कारों के बीच गायब हो गई। मास्टर ब्रेन ऐसी दशा में नहीं था कि उसका पीछा करता। उसका ध्यान लड़की की ओर गया ही था कि उन दोनों ने उसकी बड़ी अच्छी धुनाई कर दी। जब उसकी नाक पर घूँसा पड़ा तो वह तिलमिला उठा। तिलमिलाना था कि उसे गुस्सा आ गया और उसके दोनों हाथ-पाँव यंत्र की भाँति कार्य करने लगे। शीघ्र ही वे दोनों लड़खड़ा गये थे।

मारते-मारते उसने उन्हें कारों की लाइन के दूसरे छोर तक पहुँचा दिया और जब दोनों गिर गये तो उन्हें एक बड़ी सी कार के नीचे घुसेड़ दिया। तत्पश्चात वह अपनी कार की ओर भागा क्योंकि होटल के चौकीदार ने इस ओर का शोर सुन लिया था। वह टार्च का प्रकाश फेंकता हुआ इधर ही आ रहा था।

'कौन है इधर?' उसने मास्टर ब्रेन से ऊँची आवाज में पूछा।

'वह उधर है।' मास्टर ब्रेन ने उसी कार की ओर संकेत किया

जिसके नीचे वह उन दोनों को ठूँस आया था।

'कौन-कौन हैं ?' चौकीदार ने फिर पूछा।

'एक लड़का...एक लड़की !'

'लड़का-लड़की ?' चौकीदार चौंका।

'हाँ, दोनों ने शराब पी रखी है तथा कार के नीचे घुसे हुए हैं।'

'क्या कर रहे हैं ?'

'वही।' मास्टर ब्रेन ने कहा और कार स्टार्ट कर दी। चौकीदार इस 'वही' शब्द से ऐसा आनन्द लेने लगा जैसे वह शब्द नहीं कोई नंगी हिप्पी लड़की है।

मास्टर ब्रेन की कार सड़क पर तेजी से भाग रही थी और उसकी खोपड़ी में भेजा उसके पहिये की तरह घूम रहा था। वह उस रहस्यमयी लड़की के विषय में सोच रहा था। वह पहिले ही काफी रहस्यमय थी किन्तु आज की घटना ने उसे और भी अधिक रहस्यमय बना दिया था। इसके साथ ही वह सोचने लगा कि यह लड़की बड़ी चालाक व फुर्तीली भी है। क्योंकि होटल के हाल में जिस ढंग से उसने पीठ के पीछे से आने वाला गोलों से स्वयं को बचाया था उससे तो यही प्रकट था कि वह बड़ी बुद्धिमान व व्युत्पन्नमति वाली है।

बड़ी देर तक मास्टर ब्रेन सोचता रहा। फिर उसने निर्णय कर लिया कि वह उस लड़की के फ्लैट में जाकर उसके सम्बन्ध में और अधिक ज्ञात करेगा। फिर उसे उन दोनों आदमियों का विचार आया और वह सोचने लगा कि क्या वह दोनों उस लड़की के साथी थे या फिर योंही संयोग से उलझ पड़े थे, या लड़की के शत्रुओं में से कोई था ; क्योंकि उसे विदित था कि वहाँ लड़की के मित्र शत्रु दोनों उपस्थित हैं।'

उसे लड़की का पता मालूम था इसलिए वह उसके यहाँ जाना चाहता था मगर उसे यह भी पता था कि लड़की एकदम फ्लैट नहीं

जायेगी तो वह क्या करेगी। इतना सोचकर मास्टर ब्रेन रुक गया क्योंकि इस बात का उत्तर आसान नहीं था। उसने अब तक वह लिफाफा भी खोलकर नहीं देखा था। उसे यह भी नहीं पता था कि लड़की की हैसियत क्या है ?

वह कोई मुजरिम है या कोई और। इसके पश्चात् वह लड़की तथा सारी स्थिति एक बड़ा-सा प्रश्न चिन्ह बनकर रह गई। अब उसकी कार की गति अधिक नहीं थी क्योंकि वह समय बिताना चाहता था।

अचानक उसे अनुभव हुआ कि एक तीव्रगामी कार पीछे से आरही है। उसकी हैड लाइटस का तेज प्रकाश उसकी कार पर पड़ रहा था। जब रोशनी और अधिक पास हुई तो उसकी ध्वनि से विदित हुआ कि वह कोई जीप गाड़ी है, और जीप का विचार आते ही वह चौंका, क्योंकि उसकी कल्पना में बहुत सी लाल पगड़ियाँ तथा मूर्ख-सा इंस्पेक्टर शर्मा प्रकट हो गया।

निकट आकर जीप ने हार्न दिया और मास्टर ब्रेन ने अपनी कार किनारे से करली। जीप उसकी कार के पास से निकलती हुई आगे आई, ब्रेक मारकर चरचराती आवाज करके रुक गई। इससे पूर्व कि मास्टर ब्रेन कुछ समझ सके भीतर से बहुत से सिपाही व इंस्पेक्टर दयाल निकला। यह इस सर्किल का इंस्पेक्टर था। यह अपने चिड़चिड़े स्वभाव के लिए प्रसिद्ध था। जब से यह आया था उसके कई मातहतों का ट्राँसफर हो गया था और कुछ ने जान-बूझकर अपना ट्राँसफर करा लिया था।

मास्टर ब्रेन ने अपनी कार रोक ली और लोगों ने उसकी कार को घेर लिया। इंस्पेक्टर दयाल ड्राइविंग सीट वाली खिड़की पर गुर्राते हुए स्वर में बोला—

'उतरो।'

'क्या मतलब···?' मास्टर ब्रेन को उसके रवैये पर ताव आ गया।

'मैं कहता हूं उतरो''

'क्यों ?' मास्टर ब्रेन ने गुर्राकर पूछा।

'तुम्हारी कार में एक लाश है।'

'लाश ?' मास्टर ब्रेन की खोपड़ी सनसना उठी।

'जी हां एक अदद लाश।'

'सुनो मिस्टर इंस्पेक्टर ! मैं शरीफ आदमी हूं मेरी कार में लाश का क्या काम ?'

'जेल में आये कैदी अपने को शरीफ ही कहते हैं।'

'भाई मैं वास्तव में शरीफ हूं।'

'आप उतरते हैं या नहीं ?' इंस्पेक्टर दयाल और समीप आ गया। मास्टर ब्रेन ने ताव में गेट खोला तो दयाल गेट से टकराकर धड़ाम से भूमि पर गिरा। मास्टर ब्रेन उतरकर बोला—

'इसमें मेरा कोई कसूर नहीं।'

'मैं तुमको देख लूंगा।' दयाल ने कहा। मास्टर ब्रेन स्वयं ही कार के पीछे पहुंचा और डिग्गी पर दृष्टि पड़ते ही उसकी खोपड़ी में धमाका हुआ। क्योंकि देखने से ही पता चल गया कि डिग्गी खोलकर किसी ने पुनः बन्द की है।'

'क्या इसमें लाश है ?' उसने सोचा फिर दयाल को देखने लगा जो कपड़े झाड़कर इस प्रकार खड़ा था जैसे उसे खा जायेगा। उसके सिपाही भी चारों ओर खड़े थे।'

'डिग्गी खोलो।' दयाल ने कहा। और मास्टर ब्रेन जेब में डिग्गी की चाबी खोजता हुआ बोला—

'चाबी भीतर है।'

'तो निकालकर लाओ, मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगा।'

'मैं तुम्हारी तसल्ली किये बिना जाऊँगा भी नहीं।' मास्टर ब्रेन गुर्राया। फिर ड्राइविंग सीट पर आकर चाबी ढूंढ़ने लगा। असल में वह चाबी नहीं देख रहा था बल्कि गुप्त दराज खोलकर उसमें लगा एक बटन बार-बार दबा रहा था।

'क्या चाबी नहीं मिली ?' दयाल ने पूछा।

'नहीं, पता नहीं कहाँ खो गई।'

'ढूंढ़ो, मैं सुबह तक खड़ा रह सकता हूं।' दयाल ने कहा तथा होल्स्टर से रिवाल्वर भी निकाल लिया। इसके साथ ही वह अपने सिपाहियों की ओर भी देखता जाता था। यानी वह उसकी सफलता को देख उसका लोहा मान जायें। यह संयोग की बात थी कि वे लोग एक लाइटपोल के नीचे थे इसलिए यहाँ काफी प्रकाश था।

'चाबी मिली ?' कुछ देर पश्चात दयाल ने फिर पूछा।

'देखता हूं शायद योंही खुल जाये।' मास्टर ब्रेन अपनी जगह सीधा खड़ा होता हुआ बोला।

'देखो।' दयाल ने कहा।

फिर दोनों डिग्गी के समीप पहुँचे, यहाँ आकर मास्टर ब्रेन ने प्रश्न किया।

'इंस्पेक्टर, तुम्हें यह किसने बताया कि मेरी कार में लाश है ?'

'सुनो मिस्टर, शायद तुम्हें यह नहीं पता कि मेरा नाम इंस्पेक्टर दयाल है और मैं इस खोपड़ी में भेजा भी रखता हूं।'

'भेजा, परन्तु मैंने तो सुना था कि पुलिसवालों की खोपड़ी में भेजा नहीं होता।'

'तो क्या होता है ?' दयाल ने फुंकारा।

'लोग कहते हैं कि भूसा होता है।'

'मिस्टर···!' दयाल हाथ झाड़ने वाले ढंग से आगे बढ़ा।

'लोग कहते हैं मैं नहीं कहता ।'

'डग्गी खोलो ?'

'क्या मैनेजर ने बताया था कि लाश किसकी है ?'

'तुम डग्गी खोलो ।'

'क्या आपको डर लग रहा है ?'

'डर के बच्चे !' वह दाँत पीसकर बोला । और फिर डग्गी का हैंडिल पकड़ झटका देकर खोल दिया । अगले ही क्षण मारे कौतूहल के उसके मुँह से चीत्कार निकल उठी । वह दो पग पीछे हट गया। सिपाही भी आगे झुक आये । भीतर एक लाश दिखाई दे रही थी ।

'यह है लाश ?' मास्टर ब्रेन मुस्कुराकर बोला ।

'यह तो पुतला है जनाब, रबर का ।' दयाल के एक मातहत ने कहा ।

'नहीं भाई यह लाश है ।' मास्टर ब्रेन ने फिर कहा और दयाल से बोला—निकालो इसे, मैं लाश को हाथ नहीं लगाना चाहता ।'

इंस्पेक्टर दयाल कभी रबर के इस पुतले को देखता था कभी मास्टर ब्रेन को । उसकी हालत बड़ी हास्यास्पद थी ।

"अब बताओ वह कौन है जिसने तुम्हें खबर की थी ?'

'फ फ···फोन किया था ।' दयाल हकलाया ।

'कार का नम्बर भी बताया था ?'

'हाँ ।'

'किसकी लाश बताई थी ?' मास्टर ब्रेन ने पूछा ।

'आखिर तुम यह सब पूछने वाले होते कौन हो ?' दयाल एकदम गुर्राया । उसे ताव आ गया था ।

'मि० इंस्पेक्टर मैं एक शरीफ ही नहीं भयंकर आदमी भी हूँ ।'

'तुम क्या कर लोगे मेरा ?'

'मैं तुम्हें सिपाही बनवा दूंगा।'

'क्या ?' वह चौंका फिर उसने रिवाल्वर तान लिया।

'पहले यह तो देख लो कि स्वर्ण के इस पुतले में सोना या कोई मादक द्रव्य तो नहीं भरा हुआ है।' मास्टर ब्रेन की इस बात पर दयाल को एक जोर का झटका लगा और वह बड़ी जोर से पुतले पर झपटा। किन्तु ज्योंही उसने पुतले पर हाथ डाला, शू की ध्वनि आई और श्वेत रंग का धुआं उसके ऊपर तेजी से आया तथा पुतला पिचकता चला गया। पहले दयाल को खांसी उठी फिर वह दोनों हाथों से चेहरा घुमाकर वहाँ से अलग हो गया उसे खांसी आती जा रही थी।

'मैं···मैं तुम्हें शूट कर डालूंगा।' वह बड़ी कठिनाई से बोला, और फिर रिवाल्वर तान लिया। किन्तु तुरन्त ही उस पर व उन सिपाहियों पर छींकों का दौरा पड़ा और जिनके नथुनों में यह दूधिया धुआँ घुस गया था और यह एक-दो के अलावा सब ही थे। इन्सपैक्टर दयाल रिवाल्वर चलाने के बजाये जोर-जोर से छींकने लगा। वे सब इस समय पागल लग रहे थे।

मास्टर ब्रेन ने साँस रोकली थी और जब धुआं छंट गया तो उसने साँस ली तथा डिग्गी बन्द करके ड्राईविंग सीट पर आ बैठा। फिर उसने गुप्त दराज में हाथ डालकर कोई बटन बार-बार दबाया और एक सिपाही को अपने पास आने का संकेत किया। जब सिपाही आ गया तो वह बोला—

'जब इन्सपैक्टर की तबियत दुरुस्त हो जाये तो उसे बता देना कि मेरा नाम मास्टर ब्रेन है।' यह सुनना था कि सिपाही डर गया और मास्टर ब्रेन ने कार स्टार्ट की।

इन्सपैक्टर दयाल हाथ हिलाकर उसे रुकने का संकेत और फायर करने की चेष्टा कर रहा था मगर छींकों ने उसके अंग बेकाबू कर

डाले थे।

मास्टर ब्रेन के होठों पर मुस्कराहट थी। अब वह अपने फ्लैट की ओर जा रहा था। असल में पहली बार ही बटन दबाने पर उसे ज्ञात हो गया था कि डिग्गी में कोई भारी वस्तु मौजूद है। मगर बटन दबाने से वह भारी चीज यांत्रिक विधि से सीट के नीचे आ गई थी, तथा दूधिया गैस जिसे सूंघने से छींके आने लगती हैं। उससे भरा हुआ वह रबर का पुतला डिग्गी में आ गया था। यह पुतला उसने अपनी आवश्यकता के लिए रखा था और यह उसकी कार थी जो जादू की पिटारी से कम न थी। मगर इस वक्त वह सारे काम छोड़कर यह ज्ञात करना चाहता था कि वह भारी चीज क्या है क्या वास्तव में वह किसी की लाश है।

फिर से बटन दबाने से वह भारी वस्तु फिर डिग्गी में चली गई थी। इस समय मास्टर ब्रेन की कार की गति काफी तीव्र थी सो वह शीघ्र ही अपने फ्लैट पहुँच गया। पोर्टिको में कार रोककर उसने डिग्गी खोली और बत्ती जलाई, फिर उसे चौंक जाना पड़ा। क्योंकि भीतर वास्तव में एक मनुष्य की लाश थी जो इस समय औंधी पड़ी थी।

मास्टर ब्रेन ने लाश को सीधा किया और उसे फिर चौंक उठना पड़ा। क्योंकि वह लाश को भली प्रकार पहिचानता था। इस वक्त वह ध्यानपूर्वक लाश को देख रहा था और उसके मस्तिष्क में काफी उथल-पुथल हो रही थी। यह वही व्यक्ति था जिसने उस लड़की को लिफाफा दिया था। और इस वक्त वह लिफाफा स्वयं उसकी जेब में पड़ा था। उसने लिफाफे को अब भी नहीं देखा बल्कि सोचने लगा। उसके मस्तिष्क में अनेकों विचार एक साथ आये जैसे क्या होटल से निकलते ही उसकी हत्या कर दी गई थी। ऐसा ही किया गया होगा''' नहीं तो वह उसकी कार की डिग्गी में कैसे आता। क्या ये ल...

मुझे पहचान गये हैं या संयोगवश लाश मेरी डिग्गी में डाल दी गई। यदि उन्होंने संयोगवश लाश को डिग्गी में डाला तो फिर पुलिस को क्यों सूचित किया था। क्या पुलिस को यह सूचना दी जब देखा कि मैं सीधा उस लड़के से उलझ गया हूं और वह मुझे अपने मार्ग से हटाना चाहते हैं।' इतना सोचकर वह फिर लाश को घूरने लगा। इसके पश्चात् उसने उसकी भली प्रकार तलाशी ली। एक विदेशी रिवाल्वर के अलावा उसे कुछ नहीं मिला, न कोई कागज न कोई निशानी। एक छोटा सा पर्स भी था जिसमें कुछ नकदी थी।

कुछ सोचकर उसने डिग्गी को उसी प्रकार बंद किया और फ्लैट के भीतर आ गया। वह शान्तीपूर्वक बैठकर कुछ विश्राम करना व सोचना चाहता था। भीतर आकर उसने सबसे पहिले वही लिफाफा निकाला। खोलकर देखा भीतर एक फोटो था। उसने फोटो निकाला और देखता रहा। वह एक तगड़े से नवयुवक का चित्र था। देखने से ही पता चलता था कि उसका कसरती शरीर है।

मास्टर ब्रेन बड़ी तेज़ी से इस समय यह सोचने लगा कि इस लड़के को उसने कहीं देखा है, किन्तु कहां ? यह बात उसे याद नहीं आ रही थी। अतः कुछ देर तक वह टहलता रहा। किन्तु जब उसे याद नहीं आ सका तो बैठ गया। वह याद करने की चेष्टा करता रहा। उसे पता था कि याद करना जरूरी है। फिर अचानक ही उसे कुछ ध्यान आया और वह अखबारों की अलमारी की ओर बढ़ा जहाँ दैनिक पत्र थे। वह दैनिक पत्रों को देखने लगा। एक सप्ताह पहले के अखबार में जोड़ा वाले पृष्ठ पर उसे एक चित्र व एक लेख दिखाई पड़ा। चित्र इसी लड़के का था जिसका फोटो लिफाफे में था। दोनों चित्रों की तुलना करने पर उसने दोनों चित्रों के एक व्यक्ति होने की तस्दीक कर ली। फिर लेख पढ़ने लगा।

लेख पढ़ने के पश्चात वह कुछ सन्तुष्ट था अतः उसने चित्र फिर
लिफाफे में रखा और लिफाफा जेव में डालकर वापस आ गया। वह एक फैसले के तहत कुछ करना चाहता था।

कार स्टार्ट करके वह सड़क पर लाया और फिर गति बढ़ा दी। लगभग आध घंटे पश्चात वह कर्जन रोड पर था। कार धीरे-धीरे उस लड़की के फ्लैट की ओर रेंग रही थी जिसमें वह रहती थी। वह इस बात की पुष्टि पहले से ही कर चुका था।

फ्लैट के सामने एक अंधेरे स्थान पर उसने कार रोकी फिर उतर कर फ्लैट की ओर बढ़ा। फ्लैट में अन्धेरा छाया हुआ था अतः उसने सोचा कि लड़की भी अब तक नहीं लौटी है। इसलिए द्वार पर आकर जब उसने धक्का दिया तो किवाड़ खुल गये। द्वार खुलने से वह चौकन्ना हुआ, क्योंकि उसकी छटी चेता ने उसे खतरे का एलार्म दिया था। वह दरवाजा खोलकर किनारे से शान्त खड़ा रहा। जब भीतर से कोई आहट या ध्वनि नहीं आई तो वह द्वार से चिपककर भीतर गया और सावधानी से उसे भेड़ दिया। फिर वह दीवार के सहारे-सहारे चलने लगा। कुछ देर पश्चात जब उसकी आँखें अन्धकार में देखने के योग्य हुईं तो उसे पता चला कि यहाँ दो आदमी पहिले से ही मौजूद हैं और वह दोनों बड़ी सतर्कता से उसकी ओर बढ़ रहे हैं। मास्टर ब्रेन ने अपनी मास्टर गेंद निकालनी ही चाही थी कि वह दोनों भूखे शेरों की भाँति उस पर झपट पड़े। उनका पहिला प्रहार बहुत सफल था उन्होंने उसे गिराकर जैसे पीस डाला—तथा घूँसे मारने लगे। मास्टर ब्रेन ने एक दो चीखें मारकर ऐसी चुप्पी साध ली जैसे मूर्छित हो गया हो। उन लोगों ने उसे छोड़ा तथा टार्च जलाकर उस पर प्रकाश डाला और फिर उनमें से एक चौंककर बोला—

'अबे'''यह तो वही है।'

'मगर यह वहाँ क्या कर रहा है ?'

'साला कोई मु[illegible]रिम तो नहीं।'

'वही मास्टर ब्रेन तो नहीं।'

'कोई भी हो इसे सूट कर डालो।'

'हाँ···उस व्यक्ति ने कहा तथा [illegible] रिवाल्वर निकाल लिया। मास्टर ब्रेन अपने बचाव का निश्चय कर चुका था क्योंकि वह व्यक्ति उसके अति समीप था और वह उसके पेट पर ऐसी लात मार सकता था कि वह लेट जाये।

'अबे साइलैंसर तो लगा ले।' उस व्यक्ति के साथी ने कहा।

'कोई बात नहीं।'

'बेकार ही शोर करने से फायदा ?'

'अच्छा !' उस व्यक्ति ने साइलैंसर निकालने को जेब में हाथ डाला। किन्तु अभी उसका हाथ जेब में ही था कि मास्टर ब्रेन ने लेटे-लेटे उसके पेट पर पूरी ताकत से लात मारी और वह जोर की चीख मारकर औंधा मुँह मास्टर ब्रेन पर गिरा। मास्टर ब्रेन ने उसे दोनों हाथों पर सम्भाल कर उसके साथी पर ढकेला और वे दोनों लुढ़क गये। मास्टर ब्रेन उछलकर खड़ा हुआ और उन्हें सम्भलने का मौका दिये बिना ठोकरें मारने लगा। शीघ्र ही वह दोनों चीख चीखकर कलाबाजियाँ खा रहे थे और मास्टर ब्रेन जानता था कि उसकी एक-एक ठोकर उन दोनों की पसलियाँ तोड़ रही होंगी···शीघ्र ही वह दोनों अचेत हो गये और मास्टर ब्रेन ने बिजली का बटन दबाकर रोशनी कर दी। किन्तु कमरे की बदतर हालत देखकर उसे ज्ञात हो गया कि उन्होंने तलाशी ली है। फिर वह दूसरे कमरे में घुसा। यहाँ पर भी बिजली का बटन दबाकर प्रकाश किया और बौखला उठा क्योंकि फर्श पर उसी रहस्यमय लड़की की लाश पड़ी थी जिसके कारण यह सब बखेड़ा हुआ

था। गोली उसके माथे पर पड़ी थी। उसका पर्स फर्श पर पड़ा था और स्पष्ट जान पड़ता था कि उसकी तलाशी ली गई है। इस कमरे की भी बिखरी हुई चीज़ें बता रही थीं कि उसकी भी तलाशी ली गई है।

मास्टर ब्रेन बाहर के कमरे में आया तथा उन दोनों आदमियों की तलाशी लेने लगा क्योंकि यदि उन्होंने कमरे की तलाशी ली थी तो उनके पास कुछ न कुछ होना जरूरी था। किन्तु दोनों के पास से उसे कोई वस्तु न मिली। फिर वह स्वयं कमरे की तलाशी लेने लगा किन्तु उसे कोई विशेष चीज नहीं मिल सकी, वह समझ गया कि उन लोगों को केवल उस लिफाफे की खोज थी—सो वह बड़ी तीव्रता से बाहर आया—अपनी कार की डिग्गी से उस आदमी की लाश कंधे पर उठाकर बड़ी तेजी से फ्लैट की ओर भागा।

फ्लैट में आकर उसने लाश कमरे में डाली…अपनी मौजूदगी का हर सम्भव चिन्ह मिटाया तथा द्वार भेड़कर वापस आ गया—उसे महसूस हो रहा था मानो जिस जगह से चला था वहीं वापस आ गया है। इस सारे हंगामें में रात इतनी बीत चुकी थी कि मुर्गे बाँग देने लगे थे। वह सोने की इच्छा के साथ कार भगाने लगा।

सात

होटल की रंगीनियाँ…संगीत का स्वर तथा कैबरे डाँसर का नग्न शरीर उसे शान्ति प्रदान न कर सका। उसके मस्तिष्क पटल पर केवल एक नाम चिपक गया था—

'सलोमी•••!' और इस नाम से अनेक यादें बंधी थी—बड़े सुखद क्षण थे। किन्तु सलोमी मर चुकी थी•••उसे दफन कर दिया गया था किन्तु अब भी वह उसके मस्तिष्क पर सवार थी—उसकी सारी गर्ल फ्रैन्डस ने इस बात को अनुभव किया था•••उन्होंने इस रवैये की शिकायत की थी और अब वह उनसे मिलना भी पसन्द नहीं करता था। वह तो सलोमी की याद से चिपककर जीवित रहना चाहता था। मगर उसकी लापरवाह तबियत इस एक रूपता को अधिक दिन तक सहन न कर सकी सो वह शराब के नशे में सलोमी को बुलाने की चेष्टा करने लगा।

आज उसने इसीलिए शराब पी थी। जब उसे नशा हो गया तो वहाँ उपस्थित प्रत्येक गोरी चमड़ी वाली लड़की उसे सलोमी दिखने लगी। विशेष रूप से उसकी निकट वाली मेज पर बैठी हुई सुन्दर लड़की इस लड़की को उसने आते ही देख लिया था। जिस समय उस लड़की ने मुस्कराकर उसे आँखों से संकेत किया था तो उसने कसैला सा मुंह बना लिया था। परन्तु अब नशे की हालत में अब उसे उस लड़की की तलाश सी अनुभव होने लगी थी•••वह निरन्तर इसी ओर देखे जा रही थी।

उसने उसे देखा व मुस्करा दिया—वह भी मुस्कुराई•••फिर आँख मार दी•••आँख मारने का ढंग इतना आकर्षक था कि उसका मन मचल उठा। उसने बड़े धीरे से उसे निकट आने का निमंत्रन दिया। वह लड़की कुछ झिझकते हुए भाव से उठी और घबराती हुई निकट आ गई। वह कुछ बौखला सा गया।

'बब•••बैठो।'

'शुक्रिया।' वह घबराकर बोली तथा बैठ गई। अब शायद दोनों यह सोच रहे थे कि क्या बात की जाये। क्योंकि इस समय उनके पास

करने योग्य कोई बात नहीं थी सो एक दूसरे को देखने लगे ।

'क्या पियेंगी आप ?' आखिर कुछ देर पश्चात उसने पूछा ।

'क'''कुछ नहीं ।'

'फिर भी तो ।'

'नहीं, मैं'''मैं'''असल में आपको पसन्द करती हूं ।' वह झिझक कर बोली ।

'मुझ में ऐसी कौन सी बात है ।'

'अनेक बातें हैं जिनमें से एक है आपका परेशान व उदास सा भाव ।'

'ओह, और आप इसी पर मर मिटीं ।'

'यही समझ लें ।' वह नाखून से मेज कुरेदने लगी ।'

'क्या मैं रोने लगूं ?'

'क्यों ?'

'कदाचित आपको यह भी पसन्द हो ।'

'नहीं, नही, रोने की सीमा तक मुझे उदासी पसन्द नहीं ।'

'चलिये, क्या अब आपके लिए कुछ मंगाऊँ ?'

'नहीं ।'

'फिर यहाँ बैठकर क्या किया जाये ।'

'मैं भी यही सोच रही हूं ।'

'तो मेरे साथ आइये ।' वह बोला और खड़ा हो गया । वह भी खड़ी हुई दोनों काउंटर की तरफ बढ़े वहाँ लड़के ने बिल चुकाया और दोनों बाहर आ गये ।

'क्या नाम है आपका ?' लड़की ने पूछा ।

'जिम ! हां आप इसी नाम से पुकार सकती हैं ।'

'मुझे शीला कहते हैं ।'

'सुन्दर नाम है।'

'शुक्रिया ! क्या आप मेरे फ्लैट चलना पसन्द करेंगे ?'

'जरूर, किन्तु पहिले यह बतायें कि वहां कौन-कौन हैं ?'

'मेरे साथ मेरे अंकल रहते हैं।'

'तब मैं नहीं जा सकता।'

'क्यों ?'

'मुझे आजकल के अंकलों से बड़ा डर लगता है।'

'मगर आजकल वह बाहर गये हुये हैं और दो सप्ताह तक बाहर ही रहेंगे।'

'गुड, क्या करते हैं आपके अंकल ?'

'वह इसी देश का इतिहास फिर से लिखने की कोशिश कर रहे हैं···।'

'क्या आपके अंकल इतिहासकार हैं ?'

'जी हां, और इसीलिये उन्हें प्राचीन इमारतों का अध्ययन करने के लिए देश के प्रत्येक भाग में जाना पड़ता है।'

'क्यों ?'

'उनका विचार है कि ऐतिहासिक इमारतें अपना इतिहास स्वयं बता देती हैं, जबकि कोई उनकी भाषा को समझ सके।'

'और आप क्या करती हैं ?'

'मैं चित्रकार हूं अर्थात कार्टूनिस्ट।'

'ओह।' वह हंसा चलते-चलते वह लोग सड़क पर आकर भी चलते चले जा रहे थे। 'क्या मेरा भी कोई कार्टून बनाना चाहती हैं।'

'नहीं, मैं···मैं···तुमसे प्रेम करती हूं।' वह बोली फिर जिम का हाथ पकड़ लिया। जिम ने जब उसका कोमल व मांसल हाथ अपने हाथ में लिया तो ऐसा लगा जैसे गर्म चिमटे को पकड़ लिया हो। उसके

करने योग्य कोई बात नहीं थी सो एक दूसरे को देखने लगे ।

'क्या पियेंगी आप ?' आखिर कुछ देर पश्चात उसने पूछा ।

'क'''कुछ नहीं ।'

'फिर भी तो ।'

'नहीं, मैं'''मैं'''असल में आपको पसन्द करती हूं ।' वह झिझक-कर बोली ।

'मुझ में ऐसी कौन सी बात है ।'

'अनेक बातें हैं जिनमें से एक है आपका परेशान व उदास सा भाव ।'

'ओह, और आप इसी पर मर मिटीं ।'

'यही समझ लें ।' वह नाखून से मेज कुरेदने लगी ।'

'क्या मैं रोने लगूं ?'

'क्यों ?'

'कदाचित आपको यह भी पसन्द हो ।'

'नहीं, नही, रोने की सीमा तक मुझे उदासी पसन्द नहीं ।'

'चलिये, क्या अब आपके लिए कुछ मंगाऊँ ?'

'नहीं ।'

'फिर यहां बैठकर क्या किया जाये ।'

'मैं भी यही सोच रही हूं ।'

'तो मेरे साथ आइये ।' वह बोला और खड़ा हो गया । वह भी खड़ी हुई दोनों काउंटर की तरफ बढ़े वहां लड़के ने बिल चुकाया और दोनों बाहर आ गये ।

'क्या नाम है आपका ?' लड़की ने पूछा ।

'जिम ! हां आप इसी नाम से पुकार सकती हैं ।'

'मुझे शीला कहते हैं ।'

'सुन्दर नाम है।'

'शुक्रिया ! क्या आप मेरे फ्लैट चलना पसन्द करेंगे ?'

'जरूर, किन्तु पहिले यह बतायें कि वहाँ कौन-कौन हैं ?'

'मेरे साथ मेरे अंकल रहते हैं।'

'तब मैं नहीं जा सकता।'

'क्यों ?'

'मुझे आजकल के अंकलों से बड़ा डर लगता है।'

'मगर आजकल वह बाहर गये हुये हैं और दो सप्ताह तक बाहर ही रहेंगे।'

'गुड, क्या करते हैं आपके अंकल ?'

'वह इसी देश का इतिहास फिर से लिखने की कोशिश कर रहे हैं...।'

'क्या आपके अंकल इतिहासकार हैं ?'

'जी हाँ, और इसीलिये उन्हें प्राचीन इमारतों का अध्ययन करने के लिए देश के प्रत्येक भाग में जाना पड़ता है।'

'क्यों ?'

'उनका विचार है कि ऐतिहासिक इमारतें अपना इतिहास स्वयं बता देती हैं, जबकि कोई उनकी भाषा को समझ सके।'

'और आप क्या करती हैं ?'

'मैं चित्रकार हूं अर्थात कार्टूनिस्ट।'

'ओह।' वह हंसा चलते-चलते वह लोग सड़क पर आकर भी चलते चले जा रहे थे। 'क्या मेरा भी कोई कार्टून बनाना चाहती हैं।'

'नहीं, मैं...मैं...तुमसे प्रेम करती हूं।' वह बोली फिर जिम का हाथ पकड़ लिया। जिम ने जब उसका कोमल व मांसल हाथ अपने हाथ में लिया तो ऐसा लगा जैसे गर्म चिमटे को पकड़ लिया हो। उसके

शरीर में रक्त का संचालन तेज हो उठा।

'क्या मैं टैक्सी करूँ ?' आखिर जिम ने प्रश्न किया।

'मुझे कोई आपत्ति नहीं।' वह बोली और दोनों एक जगह ठहर गये। कुछ देर पश्चात् ज़िम ने निकलती हुई टैक्सी को इंगित किया, जब टैक्सी रुक गई तो दोनों पिछली सीट पर बैठ गये। शीला ने पता बताया और टैक्सी चल पड़ी। दोनों एक-दूसरे से लगे बैठे थे और जिम के भीतर शराब के साथ जवानी भी गर्दिश में थी।

पन्द्रह मिनिट पश्चात टैक्सी रुकी। दोनों उतरे। जिम ने किराया चुकाया तथा टैक्सी चली गई। शीला उसका हाथ पकड़े एक फ्लैट में प्रविष्ठ हुई। तीन कमरों वाला यह फ्लैट बड़ा सुन्दर व शानदार था। दोनों सोफे पर बैठ गये। शीला उस पर झुककर बोली—

'जिम, माई डियर जिम ! मुझे तुमसे प्रेम है, जब से तुम्हें देखा है नींद नहीं आती।'

'क्या सचमुच शीला ?'

'हाँ, मगर मेरे अंकल बड़े जालिम हैं, वह इस प्रेम को फलने-फूलने नहीं देते।'

'मगर तुम उसके साथ रहती ही क्यों हो ?'

'मजबूरी !'

'क्या मजबूरी है ?'

'सुनकर क्या तुम मुझसे घृणा तो नहीं करने लगोगे ?'

'नहीं।'

'मेरी कसम खाओ।'

'तुम्हारी कसम।' वह प्यार भरे स्वर में बोला और शीला ने उसे भींचकर चूम लिया। फिर बोली—

'मेरी एक सहेली थी वह अंकल की एक ऐसी डायरी चुराकर भाग

गई जिसमें उन्होंने बड़ी मूल्यवान याददाश्तें नोट कर रखी थीं। बस यों समझ लो कि वह डायरी उनके जीवन भर की रिसर्च के बाद तैयार हो सकी थी। मगर जब से वह डायरी चुराकर भागी है अंकल अपने आपको खाली-खाली सा अनुभव करते हैं। वह पागल हो गये हैं और मुझे हर समय अपने साथ रखते हैं।'

'मगर वह तुम्हें अपने साथ क्यों रखते हैं?'

'वह कहते हैं मेरी बहिन ने उन्हें जो हानि पहुंचाई है उसे मैं पूरा करूं।'

'मगर तुम उस हानि को कैसे पूरा कर सकती हो?'

'उनके साथ रात-दिन मेहनत करके। मैं रात-दिन मेहनत करती हूं। यह तो मेरा सौभाग्य है कि वह बाहर गये हुए हैं और शीघ्र ही वापस नहीं आयेंगे, सो मैंने सोचा कि तुमसे अपने मन की बात कह दूं।'

'मुझे तुमसे बड़ी हमदर्दी है शीला। मगर मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूं?'

'कुछ नहीं, मगर प्रेम तो कर सकते हो?'

'जरूर-जरूर, मगर तुम्हारी बहिन ने यह हरकत क्यों की?'

'वह सनकी थी उसे डायरियां चुराने की सनक थी।'

'अब वह कहां है?'

'कुछ दिन हुए अंकल के एक दोस्त ने उसे इसी शहर में देखा था।'

'इसी शहर में, तब तो उसका मिल जाना असम्भव नहीं।'

'मगर वह इस तरह गायब होती है जैसे गधे के सिर से सींग।'

'क्या नाम था उसका?'

'सलोमी···!' वह जल्दी से बोली और जिम अपनी जगह से उछल पड़ा।

'क्या कहा तुमने ?'

'सलोमी ! मेरी बहिन का नाम सलोमी था।'

'सलोमी ! मगर···मगर क्या तुम्हारे पास उसका कोई फोटो है ?'

'है।'

'तनिक दिखाओ तो।' वह बौखलाये हुए स्वर में बोला। शीला उठकर मेज की ओर गई। दराज खोलकर उसने एक लिफाफा निकाला और पास आई। जिम लिफाफे को देख रहा था। शीला ने लिफाफा खोलकर एक फोटो निकालकर उसे देते हुए कहा—

'देखो यही है मेरी बहिन, कितनी सुन्दर है।'

जिम ने थरथराते हुए हाथों से फोटो लिया और फिर विस्फारित नेत्रों से उसे देखता हुआ बोला—

'सलोमी, यह वही है, बिल्कुल वही है।'

'क्या तुम इसे जानते हो ?' शीला ने सविस्मय पूछा।

'हाँ !'

'क्या सच ?' मारे खुशी के वह उछल पड़ी।

'हाँ सच शीला, मेरी उदासी का कारण यही सलोमी है।'

'क्या ··? कैसे···?'

'यह सलोमी कुछ दिन मेरे संग रह चुकी है। मुझे उससे प्रेम भी हो गया था।'

'वह कहाँ है ? मुझे उससे मिलवाओ।'

'दुःख है कि अब वह तुमसे नहीं मिल सकती।'

'क्यों ?'

'क्योंकि अब वह इस संसार में नहीं है।'

'क्या…?' शीला की आवाज भिंच गई।

'वह मर चुकी है, शीला।'

'नहीं…।' शीला दोनों हाथों से मुंह ढांपकर उसके पहलू में गिरी तथा सिसक-सिसक कर रोने लगी। जिम उसे सलोमी के बारे में प्रारम्भ से अन्त तक बताता रहा।

'सलोमी…मेरी प्यारी बहिन!' अन्त में शीला ने कहा और आंखें पोंछने की कोशिश करने लगी। फिर बोली—'क्या उसने तुमसे किसी रहस्य के विषय में कुछ कहा था?'

'नहीं।'

'क्या उसने तुम्हें अपने बारे में कुछ बताया था?'

'कोई विशेष बात नहीं बताई थी।'

'क्या उसने तुम्हें कुछ दिया?'

'नहीं।'

'कोई डायरी वगैरह?'

'नहीं, उसने मुझे कोई डायरी वगैरह नहीं दी।'

'फिर उसने वह डायरी कहां रख दी?'

'मुझे नहीं पता प्यारी शीला! उसने मुझे केवल एक चीज दी है…।'

'वह क्या?'

'गम…यादों से भरा हुआ गम।'

'जिम मैं तुम्हारा हर गम गलत कर सकती हूं। मैं तुम्हें सलोमी से अधिक प्रेम दे सकती हूं, मगर तुम मेरा जीवन अंकल के इस जुल्म से बचालो।'

'किन्तु वह डायरी कहां मिल सकेगी?'

'सम्भव है, उसने डायरी किसी डिब्बे में बन्द कर रखी हो या

उसके पृष्ठ फाड़कर किसी डिब्बे में बन्द कर रखे हों। उसके पास एक सुनहरी डिबिया थी।'

'नहीं शीला, उसके पास एक फटे हुए ब्लाऊज, छोटे से स्कर्ट और लाल अंडरवियर के अलावा कुछ नहीं था।'

'सम्भव है उसने डायरी के कागज कपड़ों में सी रखे हों।'

'मैं उसके वस्त्र भली प्रकार देख चुका हूं, उनमें कुछ न था।' जिम ने सावधान स्वर में कहा—'वह हीरा जड़ी सोने की पत्तियों के सम्बन्ध में कुछ संकेत तक नहीं देना चाहता था।'

'जिम! यह मेरे जीवन मेरे प्रेम का सवाल है। क्या तुम्हें विश्वास है कि उसके पास कुछ नहीं था?'

'मुझे विश्वास है प्यारी शीला।'

'तब तो अंकल मेरा खून चूसकर ही दम लेंगे।'

'नहीं!' एक स्वर ने उन्हें चौंका दिया। एक व्यक्ति खिड़की की राह से कूदकर भीतर प्रवेश कर रहा था। उसका कद नाटा तथा चेहरे पर नकाब पड़ा हुआ था।

'तुम कौन हो?' सबसे पहले जिम ने पूछा और अपनी जगह खड़ा हो गया।

'तुम खामोश खड़े रहो मिस्टर जिम!' नकाबपोश ने कहा—उसके स्वर में बड़ी गुर्राहट भरी थी। जिम खामोश हो गया। मारे डर के शीला का मुख पीला पड़ गया। मगर उसका हाथ गरेबान की ओर जा ही रहा था कि नकाब पोश ने पुनः कहा।

'अपना हाथ नीचे रखो!' शीला ने अपना हाथ जल्दी से नीचे कर लिया।

'हाँ तो क्या पूछा जा रहा था इस मूर्ख से?' नकाबपोश ने पूछा।

'शटअप !' वह गुर्राई ।

'कुतिया की तरह गुर्राओ नहीं···मेरी बात का उत्तर दो ।' फिर वह जिम से सम्बोधित होता हुआ बोला—

'मिस्टर जिम ! सलोमी एक फ्राड थी···और यह भी एक फ्राड है, तुम भी अहमक हो ।'

'तुम क्या कह रहे हो ।' जिम ने तीखे स्वर में पूछा ।

'यह तुमको अभी पता लग जायेगा ।' नकाबपोश बोला और अपने रिवाल्वर का ट्रेगर दबा दिया । नाल पर साइलैंसर चढ़ा हुआ था । इसलिये अधिक ध्वनि नहीं हुई । मगर जब गोली शीला के सीने पर दिल के स्थान पर घुस गई तो वह बड़ी जोर से चीखी और चकराकर धड़ाम से फर्श पर गिरी । तड़पने लगी । नकाबपोश नाल को फूंककर धुआँ साफ कर रहा था । जिम शीला को भयभीत होकर देख रहा था जो खून से लथपथ होकर दम तोड़ रही थी । जब वह मर गई तो नकाबपोश ने प्रश्न किया ।

'जिम ! शीला मर गई और कातिल तुम हो ।'

'मैं !' जिम बड़े जोर से चौंका ।

'हाँ ! कल जब इसकी लाश पुलिस को मिलेगी तो वह पड़ताल करेंगे । पड़ताल के समय उनको ज्ञात होगा कि होटल में यह लड़की तुम्हारे साथ थी और तुम इसे अपने संग लेकर बाहर आ गये थे ।'

'मगर मैं पुलिस को तुम्हारे बारे में जो बता दूंगा ।' जिम ने बौखलाकर जल्दी से कहा ।

'किन्तु मेरी मौजूदगी को साबित कैसे करोगे ?'

'साबित !' तुमने मेरी आँखों के सामने हत्या की है ।

'क्या पुलिस को तुम्हारी बात का विश्वास आ जायेगा ।'

'तुम मुझे फँसाना चाहते हो ।'

'हां ! अब तुमने समझदारी की बात की है ।'

'तुम मुझसे क्या चाहते हो ?'

'मैं तुमसे बहुत कुछ चाहता हूं···फिलहाल तुम यहाँ से चुपचाप खिसक जाओ । इस कत्ल की चर्चा स्वयं किसी से मत करो । मैं प्रयत्न करूंगा कि पुलिस तुम तक न पहुँचने पाये । इसके अलावा सलोमी के बारे में तुम किसी को कुछ नहीं बताओगे ।'

'सलोमी ! क्या तुम भी सलोमी के ग्राहक हो ।'

'मैं ही नहीं···एक पूरा देश सलोमी के खून का प्यासा है ।'

'आखिर वह थी क्या बला ?'

'यह मैं बाद को बताऊँगा ··अभी तुम जाओ ।' नकाबपोश बोला, और जिम खिड़की से कूदकर बाहर आया । बाहर गहरा अंधकार था । उसने फ्लैट की ओर देखा । अब वहाँ अंधेरा हो गया था । मगर उसे विश्वास था कि नकाबपोश अब तक वहीं है । वह वहाँ क्या कर रहा है, यह उसकी समझ में नहीं आ सका ।

वह धीरे-धीरे सड़क पर चलने लगा···उसका दिल धड़क रहा था। तथा चाल में लड़खड़ाहट थी । बड़ी देर बाद उसे पता चला कि वह गलत रास्ते पर आ गया है । थक भी चुका है । अतएव रुककर उसने एक टैक्सी को संकेत किया और टैक्सी के रुकने पर उसमें बैठ अपने मकान का पता बताकर चल पड़ा ।

आध घंटे पश्चात् जब वह जेब से चाबी निकालकर अपने कमरे का हजमी ताला खोल रहा था तो उसका दिल जोरों से धड़क रहा था । ताला खोलकर वह भीतर गया । बत्ती जलाये बिना भीतर से दरवाजा बन्द किया तथा पलंग की ओर बढ़ा । शायद मानसिक उलझन के कारण वह बत्ती नहीं जलाना चाहता था या फिर डरा हुआ था ।

अभी उसने कोट उतारा ही था कि एक पुरुष स्वर ने उसे चौंका

दिया।

'बत्ती क्यों नहीं जलाते तुम।'

'क-क···कौन ?' वह सरसराकर बोला। उसका ऊपर से नीचे तक सारा शरीर कांप उठा।

'घबराओ नहीं···मैं दोस्त हूं।'

'मगर तुम भीतर कैसे आये।'

'हुजमी ताला खोलकर।'

'मगर···!'

'बत्ती तो जलाओ।' आवाज आई और वह बत्ती जलाने को द्वार की ओर बढ़ा। बिजली का स्विच बोर्ड उधर ही था।

'बाहर जाने की कोशिश नहीं करना।' आवाज ने कहा—'मेरे हाथ में रिवाल्वर है। मैं तुम्हें शूट कर दूंगा।'

वह ऊपर से नीचे तक कांप गया। बड़ी कठिनाई से बटन दबाकर प्रकाश किया और देखने लगा। सामने ही आराम कुर्सी पर एक आदमी बैठा था उसके पहलू में रिवाल्वर पड़ा था सूरत से वह कोई खतरनाक आदमी नहीं जान पड़ता था।

'तुम कौन हो ?' जिम ने उसे देखते हुए पूछा।

'बताता हूं···बैठो।'

जिम ने कुर्सी की ओर निगाह की मगर बैठा नहीं। उसे खड़ा देखकर वह व्यक्ति बोला—

'बैठो!'

जिम एक दूसरी कुर्सी पर व्यग्र भाव से बैठ गया। वह व्यक्ति मुस्कुराया फिर गंभीर स्वर में बोला—

'घबराओ नहीं···हांलाकि मैं चोरों की भांति भीतर घुसा मगर अपराधी नहीं हूं।'

'फिर कौन हो ?'

'एक विवश इन्सान।'

'विवश इन्सान ?'

'हाँ ! मुहब्बत के हाथों विवश।'

'ओह···मगर तुम कहना क्या चाहते हो ?'

'क्या तुम इसे पहचानते हो।' उसने जेब से एक चित्र निकालकर जिम की ओर बढ़ाया। जिम का दिल धक से हो गया। चित्र हाथ में लेने से पहले उसके मस्तिष्क में पहले सलोमी फिर शीला के मुखड़े घूम गये। शीला की भयानक हत्या का ख्याल करके वह और भी भयभीत हो गया।

'देखो···केवल एक इन्सानी फोटो है।' उसे मौन देखकर वह आदमी बोला—जिम ने काँपते हाथों से चित्र ले लिया। और ज्यों ही फोटो पर उसकी दृष्टि गई उसके मुंह से हलकी-सी एक चीख निकली और डर के कारण आँखें फैल गईं।

'क्यों क्या हुआ ?' आदमी ने पूछा।

'य· यह···यह सलोमी का चित्र है। वह बड़ी कठिनाई से बोला। उसका स्वर बुरी तरह कांप रहा था। जिम भी लरज रहा था और वह आदमी उसे देखे जा रहा था। दोनों मौन थे।

'क्या तुम इसे पहिचानते हो ?' आदमी ने पूछा।

'हाँ !' जिम ने गर्दन हिलाकर कहा।

'शुक्र है खुदा का।' आदमी गहरी साँस लेकर बोला और चुप हो गया। शायद वह उसे सम्हलने तथा होश सम्हालने का मौका देना चाहता था। काफी देर पश्चात वह बोला—

'यह सलोमी का फोटो है। मैं पांच वर्ष से इससे प्रेम करता चला आ रहा हूं। हमारी शादी होने वाली थी···मगर···।' इतना कहते

कहते उसका गला रुंध गया। शायद वह उमड़ आने वाले आँसुओं को पी जाने का प्रयत्न कर रहा था। जिम उसे देखे जा रहा था। कुछ देर पश्चात् वह आदमी बोला—

'यह मेरी मंगेतर थी। वह अब कहाँ है...और तुम्हारा उससे क्या सम्बन्ध है।' उत्तर में जिम ने उसे सब कुछ बता दिया। जब उसे यह ज्ञात हुआ कि सलोमी मर गई है तो वह रोने लगा। मगर जिम उसके आँसुओं को न देख सका। वह शीला के बारे में सोच रहा था। फिर उसे छोटे कदवाला नकाबपोश याद आ गया। फिर उसने सोचा कि कहीं वह नकाबपोश इस व्यक्ति को उसके कमरे में कत्ल न कर दें। यदि ऐसा हुआ तो उसे हत्या के आरोप से कोई नहीं बचा सकता... कोई नहीं। वह घबरा गया। फिर उसने जोर से कहा—

'क्या तुम मरना चाहते हो?'

'नहीं।' उस आदमी ने धीरे से कहा।

'तो यहाँ से भाग जाओ। मैं नहीं चाहता कि यह नकाबपोश तुम्हारी भी हत्या कर डाले।' जिम ने कहा और वह आदमी भयभीत होकर खड़ा हो गया। जिम भी, खड़ा हुआ मर्द उसके निकट आकर धीरे से बोला—

'क्या सलोमी ने तुमको कोई वस्तु रखने के लिए दी थी?'

'नहीं।'

'कोई डिबिया...कोई डायरी जिसमें हमारे प्रेम की याददाश्तें नोट थीं?'

'नहीं...उसने मुझे कुछ नहीं दिया।'

'क्या वह तुम्हारे पास से कहीं गई थी?'

'मुझे नहीं पता......मैं दो तीन दिनों के लिये बाहर चला गया था।'

'उफ'''अब क्या होगा ?'

'यदि तुम मरना नहीं चाहते तो चले जाओ ।' जिम बोला । और आदमी को बाहर की ओर धक्का दिया।

'मगर मैं सलोमी के बारे में बहुत सी बातें ज्ञात करना चाहता हूं।'

'जो कुछ मैंने कहा है, मैं उससे अधिक कुछ नहीं बता सकता हूं। तुम जाओ।'

'अच्छा कल शाम तुम मुझे सिटी स्क्वायर पर मिलना।'

'अच्छा-अच्छा।' जिम ने कहा और उसे कमरे से बाहर करके द्वार लगा लिया। चटखनी चढ़ाकर वह कुर्सी पर आ बैठा। उसकी खोपड़ी भन्ना रही थी। आंखें फैली हुई थीं और अंग-प्रत्यंग खिच से रहे थे। सलोमी'''शीला'''यह मर्द एक त्रिकोण के रूप में उसके मस्तिष्क से चिपके हुए थे और उनके मध्य में वह नकाबपोश था। उसका रिवाल्वर अब भी धुंआ छोड़ रहा था। उसे याद करके जिम थरथर कांपने लगा।

आठ

ज्योंही साया सड़क पर आया मास्टर ब्रेन ने अपनी कार स्टार्ट कर दी। वह साया बिजली के खम्बे के नीचे खड़ा हो गया। कुछ ही देर पश्चात एक कार उसके निकट आकर रुकी और वह पिछली सीट पर बैठ गया। कार चल पड़ी और मास्टर ब्रेन बड़ी सतर्कता से उसका

पीछा करने लगा। शायद अगली कार को इस बात का ज्ञान न था, फिर वह लापरवाह थे।

लगभग आधे घंटे पश्चात कार एक ऊंची बिल्डिंग के सामने रुकी और वह साया उतर गया। मास्टर ब्रेन ने अपनी कार रोकी और वह भी उतर गया। साये को लाने वाली कार चली गई। अब वह इस साये का बड़े आराम से पीछा कर रहा था। दोनों साथ-साथ लिफ्ट में घुसे वरन उस साये ने दबाया और लिफ्ट एक जगह रुक गई। मास्टर ब्रेन भीतर ही रहा। जब वह निकल गया तो मास्टर ब्रेन ने बटन दबाकर लिफ्ट चालू कर दी किन्तु लिफ्ट को थोड़ा ऊपर ले जाकर फिर उसे उसी जगह ले आया जहाँ वह साया बाहर निकला था। वह भी बाहर निकल आया। साया गैलरी के अन्त में दिखाई दे रहा था। वहाँ जीने थे वह जीना पार करने लगा। मास्टर ब्रेन समझ गया कि वह बिल्डिंग के दूसरी ओर निकलना चाहता है इसलिए वह बड़ी तेजी से लिफ्ट में आया। किन्तु जब वह आया तो उसे यहां पहले से ही एक छोटा सा आदमी मिला जो इस वक्त सिगार पी रहा था।

'कदाचित आपको नीचे जाना है।' उसी नाटे कद वाले ने प्रश्न किया।

'जी हाँ।'

'मैं ले चलता हूं।' उसने कहा फिर द्वार बन्द करके बटन दबाया लिफ्ट तेजी से नीचे उतरने लगी। मास्टर ब्रेन इस नाटे कद वाले आदमी को देख रहा था। उसका सिर बड़ा था बाल छोटे-छोटे थे। माथा चमकदार तथा बाहर की ओर असाधारण रूप से उभरा हुआ सा था। भौंहें घनी तथा आंखें छोटी-छोटी थीं वह भी अन्दर को धंसी हुई, गालों की हड्डियां भी असाधारण तौर पर उभरी थीं। चेहरा चौकोर था होठों पर बारीक-बारीक मूंछें थीं शरीर पर गहरे आसमानी रंग

का बढ़िया सूट था। उसके सिगार से बड़ी बढ़िया महक आ रही थी।

लिफ्ट जमीन से लगी और स्वयंचलित गेट खुल गया। पहले वह आदमी बाहर निकला और जेब में हाथ डालकर बाहर निकलने का संकेत करता हुआ मास्टर ब्रेन से बोला—

'बाहर आइये।' मास्टर ब्रेन बाहर आ गया।

'आइये।' वह चलता हुआ बोला।

'किधर?'

'आप शायद उस आदमी का पीछा कर रहे हैं?'

'किसका?'

'जो अभी कुछ देर पहले आपके साथ लिफ्ट पर चढ़ा था।'

'हां, मगर आपको कैसे मालूम?'

'मुझे तो यह तक पता है कि आप मास्टर ब्रेन हैं।' उसने कहा और मास्टर ब्रेन बहुत जोर से चौंका। उसे आश्चर्य था कि बात करते समय न केवल उसका लहजा बड़ा शिष्ट था बल्कि मुख पर किसी अप्रियता का भाव भी न था। मास्टर ब्रेन उसे घूरता रह गया।

'क्या मेरी शक्ल इतनी बुरी है कि आप मुझे इस प्रकार घूरें।' वह व्यक्ति बोला। मास्टर ब्रेन ने उसे घूरना बन्द कर दिया और लापरवाही से बोला—

'आपके दोनों अनुमान सही हैं। मगर अब मैंने उसका पीछा करने का विचार छोड़ दिया है।'

'क्यों?'

'बस यों ही।'

'क्या डरते हो?'

'यदि आप यह जानते हैं कि मैं मास्टर ब्रेन हूं तो यह भी जानते होंगे कि मैं डरना जानता ही नहीं हूं।'

'शायद, मैं मगर यह भी जानता हूं कि मौत से मनुष्य ही नहीं शैतान भी डरता है, और उस आदमी का पीछा करना मौत का पीछा करने के समान है।'

'क्यों ?'

'आइये बताता हूं। मैं भी उसी का पीछा कर रहा हूं।'

'यदि मैं इन्कार करदूँ तो ?'

'तो···?' पहिली बार उस आदमी के माथे पर अनगिनत सिलवटें उभर आईं और उसने अपना हाथ जेब से बाहर निकाला। उसमें रिवाल्वर था।

'इसके भीतर से निकलने वाली बहुत छोटी है। मगर इस छोटी सी गोली पर तुम्हारे जीवन मरण का आधार है।' वह रिवाल्वर नचाता हुआ बोला और मास्टर ब्रेन रिवाल्वर को तकता रह गया। उसका मन तो हुआ कि इस आदमी का तरबूज जैसा सिर तोड़ डाले। मगर इस समय वह सहन करके रह गया।

'शायद तुम मुझे कुछ हानि पहुँचाना चाहते हो।' उस व्यक्ति ने जल्दी से कहा और मास्टर ब्रेन को फिर कौतूहल हुआ कि उसको उसकी मन की बात का कैसे पता चला।

'मैं टलीपैथ अर्थात् विचार पढ़ने का विशेषज्ञ तो नहीं, मगर हाँ थोड़ी बहुत प्रतिभा जरूर रखता हूं। यदि मेरे सामने वाला व्यक्ति बड़ा भावुक या तीव्रता से सोच रहा हो तो उसके विचार पढ़ने में मुझे काफी सरलता होती है। क्योंकि ऐसी दशा में उसके मस्तिष्क से निकलने वाली विचार तरंगों की शक्ति साधारण हालतों से अधिक होती है। अब क्या तुम मेरे साथ चलने को तैयार हो।'

'तुम मुझे कहाँ ले जाना चाहते हो।'

'वहीं जहाँ वह आदमी गया है।' उस व्यक्ति ने कहा और मास्टर

ब्रेन उसके संग चल पड़ा। वह लोग बिल्डिंग के पीछे आये। फिर सड़क पार करके एक द्वार से अहाते में घुसे। यहाँ एक बड़ी सी कोठी थी जिसमें कहीं कहीं प्रकाश था। मास्टर ब्रेन को विस्मय था कि वह आदमी इस बिल्डिंग में जाने के लिए इतने चक्कर काट रहा था।

जल्दी ही दोनों बरामदे में आ गये और उस छोटे से आदमी ने दरवाजे पर दस्तक दी। कुछ देर पश्चात दरवाजा खुल गया। दरवाजा खोलने वाली एक लड़की थी। दोनों भीतर चले गये। लड़की ने इन दोनों की ओर देखा तक नहीं।

जब वह एक सीटिंग रूम जैसे कमरे में आ गये तो वह आदमी बोला—

'बैठो मास्टर ब्रेन, मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहता हूँ।' मास्टर ब्रेन सावधानी से सोफे पर बैठ गया। वह व्यक्ति सामने बैठता हुआ बोला—

'मैं तुमको शराब व सिगरेट के लिए इसलिए नहीं पूछूंगा कि मैं जानता हूँ कि तुम इन दोनों वस्तुओं का प्रयोग जरूरत पड़ने पर ही करते हो, आदी नहीं हो।' मास्टर ब्रेन ने कोई उत्तर नहीं दिया तो वह फिर कहने लगा—

'वैसे मेरा नाम टामी है। लेकिन लोग टाम व टाम्सन के नाम से भी जानते हैं। मगर मेरा उस टामी से कोई नाता नहीं जो तुम्हारे हाथों मर गया। हालाँकि मुझमें उस टामी से अधिक प्रतिभायें हैं।' उसने अपने बारे में बताया और मास्टर ब्रेन उसे आश्चर्य देखने लगा। उसकी एक प्रतिभा थी विचारों को पढ़ने की शक्ति, और मास्टर ब्रेन के लिए यह बात बहुत बुरी थी।

'अब तुम यह बताओ कि तुम उस गरीब का पीछा क्यों कर रहे थे?' टामी ने पूछा।

'यदि तुम वास्तव में मेरे विषय में कुछ जानते हो तो तुम्हें यह प्रश्न नहीं करना चाहिए।'

'ओह हाँ, यह तो मैं भूल ही गया था कि तुम मास्टर ब्रेन हो। एक ऐसा अपराधी जो स्वयं अपराधियों का शत्रु हो। खुद को सोशल रिफार्मर कहते हो।'

'तुम्हारा विचार ठीक है टामी।'

'शुक्रिया मास्टर ब्रेन, मगर मैं तुम्हें केवल एक बात बताना चाहता हूं कि मैं उन अपराधियों में से नहीं जो अपने शत्रुओं को ऐसा मौका देते हैं जो वह भाग निकलने में सफल हो सकें। मैं तुरन्त मार देने पर ही विश्वास रखता हूं और मारने को मैं रिवाल्वर का भी प्रयोग नहीं करता बल्कि ऐसे जहरों का प्रयोग करता हूं जो केवल मौत हैं मौत के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हैं।' मास्टर ब्रेन सोच रहा था कि वह अवसर पाते ही उस पर छलांग लगा देगा किन्तु वह ऐसा न कर सका क्योंकि टामी ने उसका यह विचार पढ़ लिया था। वह चौकन्ना होकर बोला—

'यह कोशिश बेकार है।' मगर इस बार मास्टर ब्रेन ने अपने निश्चय पर काबू रखा तथा उस पर छलांग लगा ही दी। उसने रिवाल्वर चलाने की चेष्टा की मगर सफल नहीं हो सका, और रिवाल्वर छिटककर दूर जा पड़ा। मास्टर ब्रेन उसके ऊपर चढ़ बैठा, किन्तु टामी ने उसके घूंसे के बावजूद उसकी गर्दन पर हाथ डालकर दबाना शुरू कर दिया। जब मास्टर ब्रेन को अपना दम घुटता-सा जान पड़ा तो उसने उसकी दोनों कलाइयां पकड़ लीं और अब उसे पता चला कि उसके हाथ लोहे की सलाखों के समान पतले तथा दृढ़ हैं। [illegible] हुआ तो वह व्यक्ति गर्दन धीरे-धीरे [illegible] गया। मास्टर ब्रेन को कष्ट हो रहा था। अतः उसने उसकी कलाइयां छोड़ दीं तथा दोनों अंगूठे उसकी [illegible] में [illegible] दिये। यह तरकीब [illegible]

और वह गर्दन छोड़कर आंखें मलता रह गया। उसे; काफी कष्ट हो रहा था। मास्टर ब्रेन ने एक ठोकर रसीद की तो वह चिल्लाकर एक ओर हो गया। किन्तु फिर वह गेंद की भांति उछला और मास्टर ब्रेन से टकराया। मगर अगली टक्कर में ही मास्टर ब्रेन ने उसे झुकाई दे दी और वह हवा में लहराता हुआ दीवार से टकराया और भिचे हुए चूहे की तरह चिल्लाया। इसके साथ ही उसने उछलकर छत से लटका हुआ पंखा पकड़ लिया और फिर विचित्र ढंग से मास्टर ब्रेन के माथे पर ठोकर मारी। ठोकर कुछ ऐसी ही थी कि उसकी चीख निकल गई। उसने एक ठोकर और लगाई, मास्टर ब्रेन को चक्कर आ गया। और वह घबराकर धड़ाम से गिरा। दूसरे ही क्षण टामी ने उसे पकड़ा और दूसरे कमरे में घसीट लाया फिर फर्श पर डाल दिया और कहा—

अब मैं तुझे एक ऐसा विष पिलाऊँगा जिसे पीने के कुछ देर बाद तेरे शरीर पर आब्ले उभर आयेंगे और यह आब्ले फूटकर पीप छोड़ने लगेंगे। दुनियां तो दुनियां तू स्वयं अपने से घिन करने लगेगा मगर मौत तुझे उस समय तक नहीं आयेगी जब तक तू अपने हाथों अपना गला नहीं दबायेगा।

इतना कहकर वह तेज-तेज पग उठाता हुआ बाहर निकल गया। मास्टर ब्रेन ने गर्दन उठाकर देखा तो द्वार बन्द हो चुका था और कमरे से भागने का कोई मार्ग नहीं था। उसने सबसे पहिले अपने को संयत किया फिर सोचने लगा। फिर उसने अपने जूते की एड़ी टटोली। मास्टर ब्रेन के जूते की एड़ी में एक ऐसा छेद था जिसमें वह ऐसी छोटी-छोटी वस्तुयें रखा करता था जो प्रायः ही उसकी जान बचाने का साधन बनती थीं।

कुछ देर पश्चात दरवाजा खुला। टामी दो पहलवान जैसे आदमियों के साथ भीतर आया। पीछे एक अर्धनग्न लड़की भी थी जिसके हाथ में एक कप था।

'मास्टर ब्रेन !' टामी अपना रिवाल्वर नचाकर बोला—'क्या तू सहर्ष यह जहर पीने को तैयार है या फिर मैं उन लोगों से कहूं कि वह तेरी तिक्का बोटी कर डालें।' मास्टर ब्रेन ने जल्लाद जैसे आदमी की ओर देखा वह दोनों जैसे स्टील के बने प्रतीत होते थे। क्योंकि मास्टर ब्रेन का सिर अब भी भन्ना रहा था इसलिए वह लड़ना नहीं चाहता था।

'बोलो।' टामी ने फिर पूछा।

'मैं विष पीना चाहता हूं।' मास्टर ब्रेन द्रुत स्वर में बोला।

'कप इसे दो।' टामी ने लड़की से कहा और कप उसने मास्टर ब्रेन को दे दी। मास्टर ब्रेन ने कप उठाकर ज्योंही मुंह से लगाया टामी बोला—

'यदि तू मुझे इतना बता दे कि तेरी दौलत का खजाना कहां है तो मैं शायद तुझे जीवित छोड़ दूं।'

'नहीं, मैं यह नहीं बता सकता।'

'मगर यह तो सोच कि तेरी मौत के पश्चात वह तेरे किस काम का…?'

'किसी अपराधी के हाथों जुर्म के लिए उपयोग में आने से यही अच्छा है कि मेरी दौलत किसी के हाथों न लगे।'

'मास्टर ब्रेन मैं समझता था कि तू बुद्धिमान मुजरिम है मगर तू भी मूर्ख ही निकला।'

'मैं मूर्ख तो ठीक हूं।'

'तो फिर पीले जहर।' वह बोला और मास्टर ब्रेन ने कप उठाकर एक बार सबकी ओर देखा और फिर गटगट विष पी गया। शायद टामी को इस बात पर आश्चर्य था क्योंकि वह आश्चर्य से उसे देख रहा था। विष पीने के पश्चात मास्टर ब्रेन ने कप फेंक दिया और कहा—

'अब जाओ और मुझे मरने दो।'

'हाँ, थोड़ी देर पश्चात मेरे आदमी तुझे घसीटकर सड़क पर डाल देंगे।' टामी ने कहा और अपने साथियों को बाहर जाने का संकेत किया। जब वह चले गये तो मास्टर ब्रेन से बोला—

'मैं अपने शत्रुओं को बचाव का मौका नहीं देता। इस विष से अब मैं भी तुझे बचा नहीं सकता।'

इतना कहकर वह बाहर निकल गया। मास्टर ब्रेन फर्श पर लेट रहा था।

नौ

टामी एक ऐसे कमरे में आया जहाँ मद्धम बल्ब जल रहा था। यहां कुर्सी पर एक आदमी पहिले से बैठा था। टामी को भीतर आता देख वह खड़ा हो गया। टामी उसके समीप आया और बोला—

'बैठ जाओ।' फिर वह स्वयं भी एक कुर्सी पर बैठ गया।'

'क्या लाये हो आज?' टामी ने पूछा।

'आज कुछ नहीं मिला।'

'क्यों?'

'क्या यह जरूरी है कि मैं सदा कुछ लेकर ही आऊँ?'

'हाँ यह जरूरी है।' टामी के स्वर में कुछ वार्निंग सी थी।

'मिस्टर टामी! मैं इस प्रकार दबाव में आकर काम नहीं करता हूं…।'

'क्यों?'

'इस तरह के काम दबाव डालकर नहीं किये जाते। इस प्रकार के कामों में अवसर देखा जाता है और मौका पाते-ही काम होता है।'

'मैं समझा, मगर मौके की तलाश का प्रयत्न तो करो।'

'वह मैं हर समय करता हूं।'

'अच्छा एक बात बताओ।' टामी कुछ सोचकर बोला। सामने बैठा हुआ आदमी कुछ सोचने लगा। कुछ देर रुककर टामी ने उससे पूछा—

'सलोमी तुम्हें कहाँ मिली थी ?'

'सलोमी ?' वह आदमी बड़ी जोर से चौंका।

'हाँ, मैं उसी सलोमी की बात कर रहा हूं जो कुछ दिन तुम्हारे साथ रह चुकी है ?'

'म...मगर...क्या तुमने मुझे इसीलिए बुलाया है ?'

'हाँ, यह ज्ञात करना बड़ा जरूरी है।'

'लेकिन क्यों ?'

'सवालात नहीं करो, मेरी बात का उत्तर दो।'

'यह मेरा निजी मामला है इसका उत्तर देना न देना मेरी इच्छा पर है।'

'यह ठीक है।' मगर मैं तुमको कुछ बातें और बता दूं।' टामी, रुका और बड़ी गम्भीरता से जेब में हाथ डालकर सिगार निकाला। मुँह में लगाकर लाइटर से उसे सुलगाया और दो-तीन कश लेने के पश्चात बोला—

'एक पतला सा लम्बा व्यक्ति तुमसे मिला होगा। उस वक्त उसके चेहरे पर मूँछे थीं हाँलाकि उसकी यह मूछें नकली थीं। वह गोरी जाति का व्यक्ति था।'

'जी हाँ, मगर क्या तुम मेरी निगरानी कर रहे हो ?'

'यही समझ लो, मगर यह न भूलो कि मैं थोड़े बहुत विचारों को

पढ़ने की विशेषता रखता हूं ।'

'अच्छा तो फिर ?'

'उसने भी तुमसे सलोमी के सम्बन्ध में पूछा था ?'

'हाँ पूछा था ।'

'तुमने उसे क्या बताया ?'

'मैंने उसे बताया कि सलोमी बीमार थी । मैंने उसे अस्पताल में दाखिल कराया था । वहाँ उसकी हालत अधिक बिगड़ गई । डाक्टर उसके पेट का आपरेशन करना चाहते थे मगर उसकी हालत इतनी खतरनाक थी कि आपरेशन नहीं किया जा सका ।'

'उसकी लाश का क्या हुआ ?'

'मेरे लिए यह बड़ी मुश्किल थी । क्योंकि सलोमी विदेशी थी ईसाई थी मगर एक पादरी की मदद से उसे कब्रिस्तान में दफनाने का काम हो सका ।'

'यह सब तुमने उस पतले-दुबले व्यक्ति से कहा था ?' टामी बोला, 'फिर उसने क्या जवाब दिया ?'

'उसने बताया कि वह सलोमी का भाई था उसने मुझे शुक्रिया कहा और चला गया ।'

'यहां तुम झूठ बोल रहे हो ।'

'क्यों ?'

'उसने तुमसे पूछा था कि क्या सलोमी कुछ दे गई है और तुमने कहा कि कुछ दे नहीं गई बल्कि उसका थोड़ा-सा सामान था । वह सामान तुमने उस आदमी को दे दिया ।'

'हाँ ।'

'उस रात तुम्हारे कमरे की तलाशी ली गई ?'

'हां किसी ने उसी रात को कमरे की तलाशी ली थी ?'

'और तलाशी लेने वाला वही व्यक्ति था ।'

'क्यों ?'

'क्योंकि वह सलोमी का भाई नहीं एक जासूस था।'

'जासूस !' वह व्यक्ति बड़ी जोर से चौंका।

'हाँ, वह एक विदेशी जासूस था। उसे किसी चीज की तलाश थी। वह यही ज्ञात करना चाहता था कि सलोमी जो एक ,भगोड़ी अपराधी थी उसने वह कीमती रहस्य कहाँ छुपाया।

'रहस्य ?'

'और मैं भी यही पता करना चाहता हूं कि वह रहस्य उसने तुमको बताया अथवा नहीं।'

'नहीं, सलोमी ने मुझे कुछ नहीं बताया।' वह व्यक्ति डर गया—'उसने मुझे बताया था कि वह एक टूरिस्ट है मगर कुछ गुंडे उसे छेड़ रहे हैं। उसने आत्महत्या करनी चाही थी और मैंने उसे बचा लिया। फिर वह मेरे साथ रही। कुछ दिन पश्चात उसके पेट में तेज दर्द उठा और वह बार-बार मेरे आग्रह पर भी अस्पताल जाने को तैयार न हुई। आखिर बीमारी इतनी बढ़ गई कि वह बेहोश हो गई। मैं बेहोशी में ही उसे अस्पताल ले गया जो डाक्टरों ने बताया कि उसकी एक छोटी आँत जिसे एमिडिक्स कहते हैं फट गई तथा तेट में विष फैल चुका है। वह उसका आपरेशन करने की इच्छा रखने पर भी आपरेशन न कर सके और वह मर गई।'

'उसने तुमसे अपने अपराधी जीवन के विषय में कुछ नहीं बताया था ?'

'नहीं।'

'क्या तुम्हें पता है कि उन जासूसों ने उसकी कब्र तक खुदवाकर फिर उसकी तलाशी ली थी ?'

'नहीं।' वह व्यक्ति बोला।

'यदि वह रहस्य तुम्हारे पास है तो तुम मुझे दे दो क्योंकि जब तक

वह तुम्हारे पास रहेगा तुम्हारी जान-जोखिम में रहेगी। तुम उससे कोई लाभ भी नहीं उठा सकते। यदि तुमने वह मुझे दे दिया तो मैं तुमको बहुत धन देकर अपनी बन्दिश से भी स्वतन्त्र कर दूंगा।'

'मैं सत्य कहता हूं कि सलोमी ने मुझे कुछ नहीं बताया। तुम तो विचार तक पढ़ सकते हो क्या इतनी सी बात ज्ञात नहीं कर सकते।'

'कर सकता हूं, मगर सलोमी ने तुम्हारे दिमाग पर अधिक प्रभाव नहीं छोड़ा, इसलिए उसके सम्बन्ध में तुम्हारा हर विचार कमजोर व अधूरा है। मैं कमजोर विचार नहीं पढ़ सकता।'

'और इसी बात से तुम अनुमान लगा सकते हो कि मेरे पास कोई चीज नहीं है।'

'अच्छा सुनो।' टामी ने कहा—'वह दुबला-पतला व्यक्ति तो चला गया मगर अब मास्टर ब्रेन तुम्हारे पीछे लग गया है। और वह तुम्हारी निगरानी करता हुआ ही यहाँ तक आ पहुँचा है।'

'मास्टर ब्रेन!' वह व्यक्ति चौंका।

'हाँ मास्टर ब्रेन! मगर मैंने उसे विष पीने को विवश कर दिया। अब वह सड़क के किनारे अचेत पड़ा होगा। प्रातः जब उसे होश आयेगा तो दो बातें विदित होंगी। एक तो उसका शरीर पीप उगलने वाले आवलों से भरा होगा। दूसरे यह कि यह बिल्डिंग एकदम खाली पड़ी होगी।'

'मगर मास्टर ब्रेन को मुझ पर शक कैसे हुआ?'

'उसके हाथ तुम्हारा फोटो लग गया है।'

'मेरा फोटो?'

'हाँ, और एक भयानक खेल खेला गया।'

'तुमने उसे शूट क्यों नहीं किया?'

'मैं गोलियाँ नष्ट करने पर विश्वास नहीं रखता। मैंने उसे ऐसा जहर दिया है जिसका उपचार इस संसार में तो है नहीं।'

'किन्तु वह बोल तो सकता है क्या वह मेरे व तुम्हारे बारे में पुलिस

को बता नहीं सकता ?'

'नहीं।'

'क्यों…?'

'क्योंकि उसकी जीभ पर भी पीप उगलने वाले आब्ले हो जायेंगे और वह जीभ तक नहीं हिला सकेगा। पीप और खून उसके हलक से होकर पेट में भरता चला जायेगा और फिर बड़ी वीभत्स रूप में उसकी मौत होगी। उसका माँस व हड्डियाँ धीरे-धीरे गल-गलकर पानी बन जायेंगी और वहाँ से इतनी दुर्गन्ध उठेगी कि लोग समीप तक जाना गवारा नहीं करेंगे।'

'उफ!' वह व्यक्ति झुरझुरी लेकर बोला।

'अब मैं तुम्हें एक सुझाव देना चाहता हूं।'

'बोलो।'

'फिलहाल तुम बड़े सावधान रहोगे।'

'अब मुझे यही विचारना पड़ेगा।'

'इसके अलावा कुछ दिनों के लिए तुम वह मकान छोड़ दो।'

'किन्तु मैं कहाँ जाऊँ ?'

'कहीं भी, किसी होटल में भी ठहर सकते हो।'

'मगर…।'

'रकम की चिंता न करो' यह लो दस हजार।' टामी ने जेब में हाथ डालकर सौ-सौ के नोटों की एक गड्डी उसकी ओर बढ़ाकर कहा—'मुझे पता है कि सलोमी सोने के कुछ पत्र तुमको दे गई है, मगर खैर हिसाब बाद को होगा, मुझे सलोमी की दी हुई रकम से कोई सरोकार नहीं।'

'ठीक है।'

'यदि तुमसे सलोमी के बारे में कोई कुछ भी पूछे तो तुम उसे टाल कर-मुझसे सम्पर्क साधोगे और जो उत्तर मैं दूंगा वही तुम उसको

दोगे। सलोमी के बारे में मालूम करने वाले न केवल तुम्हारे वरन हमारे भी दुश्मन हैं।'

'अच्छा, ठीक है।' वह व्यक्ति खड़ा हो गया।

'सतर्कता बरतना ज़रूरी है. मैं तुम्हें बड़ा आदमी बनाना चाहता हूं।'

'बड़ा आदमी ?' उसने कसैला सा मुँह बनाया।

'जब मैं यहाँ से जाऊँगा तो तुम्हें बहुत सा धन दे जाऊँगा।'

'मैं ऐसी जिन्दगी से ऊबता जा रहा हूं।'

'तुम पागल हो।'

'अपराध करना मेरी प्रकृति नहीं।'

'इसे तुम अपराध नहीं एडवेंचर कहो...एडवेंचर।'

'क्या अब मैं जाऊं ?'

'हाँ...सलोमी के बारे में जो कुछ कहा है उसे याद रखना।' टामी बोला और वह व्यक्ति तेजी से बाहर निकलता गया।

टामी इस कमरे से निकलकर दूसरे कमरे में आया। यहाँ आकर उसने शराब पी तथा सोचने लगा।

'सलोमी...आखिर उसने वह रहस्य कहाँ छुपा रखा है। कहीं न नदी में तो नहीं गिर पड़ा जहाँ कूदकर उसने जान देनी चाही थी। यही बात होगी...अन्यथा वह राज उसे अवश्य मिलता अवश्य मिलता।' वह सोचता रहा।

फिर उसने आराम कुर्सी पर बैठकर आगे पैर फैलाये और आँखें बन्द लीं।

दस

टॉमी के आदमी मास्टर ब्रेन को बड़ी बेदर्दी से घसीटकर गेट के बाहर ले आये और सड़क के किनारे एक पेड़ के नीचे पटक दिया। इसके पश्चात वे चले गये। मास्टर ब्रेन वहीं पड़ा रहा और जब उसे पूर्ण इतमीनान हो गया कि उसकी निगरानी नहीं की जा रही है तो उसने अपनी हलक में दो उँगलियां डालकर कोई चीज पकड़कर बाहर खींच ली। साथ ही मुँह सामने की ओर झुकाया और पतली झिल्ली की एक थैली सी उसके हलक से बाहर खिचती चली आ रही थी और पिया हुआ जहर जमीन पर गिर रहा था।

थोड़ी ही देर में झिल्ली की थैली बाहर आ गई। मास्टर ब्रेन ने उसका सारा जहर अच्छी तरह से जमीन पर गिराया फिर उठकर ऊंची इमारत की ओर बढ़ा जो सड़क के किनारे दूसरी ओर थी। यहां एक नल था। नल के नीचे पहिले उसने अच्छी तरह से मुँह साफ किया और फिर ढेर सा पानी पीकर हलक में उंगली डालकर उल्टी कर दी। इस प्रकार उसका पेट अच्छी तरह धुल गया। फिर उसने झिल्ली की थैली को भीतर-बाहर से धोकर अच्छी तरह से साफ किया और तह कर ली। अब वह एक छोटी सी पुड़िया बन गई थी। जूते की एड़ी में गुप्त खाने में रखकर वह आश्वस्त हो गया।

झिल्ली की यह विशेष थैलियां वस्तुतः उसने किसी ऐसे ही मौके के लिये बनाई थी। वह उस झिल्ली को हलक द्वारा पेट में दाखिल कर लेता था। उसका ऊपरी छोर हलक में श्वसन नली के अलावा हर

जगह चिपक जाता था। इस प्रकार वह जो कुछ भी खाता-पीता वह सब इसी थैली में जाता था। इस प्रकार वह इस घातक विष से सुरक्षित था।

इस सारे काम से निबटने के पश्चात् वह सड़क के किनारे पेड़ की ओट में खड़ा हो गया। बड़ी देर बाद जब वह रहस्यमय छाया वहां से बाहर निकली जिसका पीछा करता हुआ वह यहाँ तक पहुँचा था तो वह अपने स्थान से निकला तथा उसके समीप आकर बोला—

'मिस्टर!'

सुनकर वह साया एकदम चौंककर उसे देखने लगा।

'मैं गुप्तचर विभाग से सम्बन्धित हूं।'

'आप?'

'मैं जानता हूं तुम अपराधी नहीं हो।'

'जी!' वह साया इसके सिवा कुछ न कह सका। उसके स्ना[illegible] खिंच रहे थे और वह बहुत अधिक बौखलाहट अनुभव कर रहा था।

'टामी एक अपराधी है···यदि तुमने उससे किनारा न किया [illegible] वह तो कदाचित पुलिस को चकमा देकर निकल भी जाये। मगर [illegible] फांसी के तख्ते तक अवश्य पहुँच जाओगे।'

'फांसी···।'

'हाँ, मौत का सबसे भयानक रूप।'

'मगर···।'

'मुझे तुम्हारे गठीले बदन व जवानी पर तरस आता है।'

'जी···।'

'हां···मैं तुमको टामी के अपराधी हाथों से छुड़ाकर देश [illegible] राष्ट्र का एक हीरो बना देना चाहता हूं।'

'लेकिन···।' उसके स्नायु अब तक असयंत थे।

'मैं तुम्हारी सहायता करना चाहता हूं बशर्ते कि तुम मेरा [illegible]

मानों।'

'मुझे क्या करना होगा ?'

'अब तुम अपने फ्लैट में नहीं जाओगे...वहाँ तुम्हारे प्राणों को खतरा है। हो सकता है टामी ही तुम्हारी हत्या कर डाले।'

'फिर कहाँ जाऊँ ?'

'तुम इस फ्लैट पर मेरी प्रतीक्षा करो।' मास्टर ब्रेन ने जेब से एक कार्ड निकालकर दिया उस पर एक पता लिखा हुआ था। कार्ड लेकर वह प्रश्नसूचक दृष्टि से उसे देखने लगा।

'यह मत भूलना कि मेरे आदमी छाया की भाँति तुम्हारे पीछे लगे हुए हैं। फरार होने का हर प्रयास न केवल असफल रहेगा बल्कि फिर तुम फाँसी के अधिकारी भी होगे। इसके अलावा टामी को जब यह ज्ञात होगा कि पुलिस तुम्हारी निगरानी कर रही है तो वह तुम्हें सबसे बड़ा संकट समझकर समाप्त कर देगा। अब तुम्हारे पास बचाव का एक यही मार्ग है वह यह कि तुम मेरा कहा मान लो।'

'ठीक है...मैं समझ रहा हूं...मैं निर्दोष हूं।'

'मैं वचन देता हूं कि तुम्हें बचा लूंगा।' मास्टर ब्रेन ने उसका कंधा थपकते हुए कहा और उसे कुछ ढांढस बंधा।

'जाओ और मेरी प्रतीक्षा करो।' मास्टर ब्रेन फिर बोला और वह व्यक्ति चल पड़ा। मास्टर ब्रेन बड़ी देर तक उसे देखता रहा। जब वह अन्धेरे में दृष्टि से ओझल हो गया तो वह अपनी जगह से आगे बढ़ा।

टामी की कोठी के बहुत से कमरों की बत्तियाँ बुझ चुकी थीं। मास्टर ब्रेन बरामदे में आया और बड़ी सावधानी से दरवाजा खोला और भीतर घुसकर देखने लगा।

टामी आराम कुर्सी पर आधा लेटा हुआ था उसके छोटे-छोटे पाँव आगे की ओर फैले हुए थे। आँखें बन्द थीं। एक हाथ बगल में था वहां

एक रिवाल्वर रखा हुआ था।

मास्टर ब्रेन मुस्कुराया फिर उसने अपनी मास्टर गेंद निकाली और टामी के बाँये कंधे पर भरपूर वार किया। गेंद लगते ही टामी बड़ी जोर से कुर्सी पर उछाला। उसके गले से विचित्र सी ध्वनि निकलने लगी और वह अपना कंधा दवाये समूचे कमरे में बन्दरों के समान नाचने लगा।

'मुझे मास्टर ब्रेन कहा जाता है टामी!' मास्टर ब्रेन बोला और टामी ने पहली बार उसे ध्यानपूर्वक देखा।

'तुम?' फिर वह चकित होकर बोला।

'हाँ तुम्हारा पिलाया विष बेकार सिद्ध हुआ है।'

'नहीं···यह कैसे संभव है?'

'इसलिए कि मेरा नाम मास्टर ब्रेन है।'

'बको मत।' वह झल्लाकर बोला। फिर अपने रिवाल्वर की ओर झपटा जो फर्श पर पड़ा हुआ था। मास्टर ब्रेन ने अपनी मास्टर गेंद का प्रयोग किया। गेंद रिवाल्वर पर लगी और रिवाल्वर फर्श पर फिसलता हुआ एक टेबिल के नीचे चला गया। गेंद का अगला प्रहार टामी की गर्दन पर हुआ। टामी की गर्दन टेढ़ी हो गई और वह जोर जोर से चिल्लाने लगा। इसके साथ ही वह कौतूहलवश गेंद को भी देख रहा था जो एक मजबूत लचीली रबर से मास्टर ब्रेन की कलाई में बंधी हुई थी। जब वह गेंद फेंकता था तो प्रहार करने के पश्चात् गेंद रबर द्वारा फिर वापस उसके हाथ में आ जाती थी। टामी इस गेंद के कारनामे को देखकर अत्यन्त चकित था। उसकी चोट भी बड़ी करारी होती थी।

'टामी···अब मैं तुम्हारी पसलियाँ तोड़ूँगा।' मास्टर ब्रेन बोला और उछल-उछलकर गेंद से उस पर वार करने लगा। टामी भी उछल उछलकर स्वयं को बचाने के प्रयत्न कर रहा था मगर वह सफल न

हुआ और अन्ततः कमरे के एक कोने से लगकर खड़ा हो गया। उसका साँस लेने का ढंग बता रहा था कि उसकी कुछ पसलियाँ सचमुच टूट गई हैं।

'तुम क्या चाहते हो ?' आखिर उसने हाँफती हुई आवाज में पूछा।

'मैं तुम्हारा और कचूमर निकालना चाहता हूं।'

'क्यों ?'

'क्योंकि तुम मेरे देश में अपराध कर रहे हो।'

'मैं चला जाऊँगा।' टामी बोला।

'नहीं।' मास्टर ब्रेन ने कहा फिर गेंद से उसके घुटने पर हमला किया। चोट इतनी करारी थी कि टामी बड़ी जोर से चिल्लाया और एक टांग पर खड़ा होकर काँपने लगा।

'दीवार की ओर मुँह करके खड़े हो जाओ।' मास्टर ब्रेन ने आदेश दिया और वह दुःखी सूरत बनाकर घूम गया। मास्टर ब्रेन ने जेब से छोटी सी रेशमी सुतली निकाली और उसके हाथ पीठ पर बांधकर कहा—

'मेरे संग चलो।'

'कहाँ ?' टामी ने बड़ी मुश्किल से पूछा।

'घबराओ नहीं...मैं उस समय तक तुम्हें पुलिस में नहीं दूंगा जब तक तुम्हारे पेट से एक-एक बात न उगलवा लूँ।'

वह दोनों बाहर आ गये और मास्टर ब्रेन को उसे अपनी कार तक लाने में कोई कठिनाई नहीं हुई। वह उसे कार में—पिछली सीट पर डालकर बोला—

'यह मास्टर ब्रेन की कार है। यदि तुमने थोड़ी भी गड़बड़ी की तो एक बटन दबाते ही तुम भस्म हो जाओगे।' इतना कहकर उसने कार स्टार्ट की। अब वह बड़े वेग से कार चला रहा था। पन्द्रह मिनिट पश्चात् उसने एक छोटे से फ्लैट के सामने कार रोकी व टामी को कार

से नीचे उतारा।

'भीतर चलो।' टामी ने कोई उत्तर न दिया और भीतर आ गया। भीतर आकर मास्टर ब्रेन ने कमरे में रोशनी की तो टामी यह देखकर चकित रह गया कि कमरे के बीच में इतना बड़ा लोहे का पिंजरा रखा हुआ है जिसमें एक आदमी सहज ही बंद हो सके। मास्टर ब्रेन ने टामी को पिंजरे में ढकेलकर द्वार बन्द किया फिर बोला—

'तुम इस पिंजरे से उस समय तक नहीं निकल सकते जब तक मैं न चाहूं। यह कमरा साउंडप्रूफ भी है इसलिए तुम्हारा चीखना चिल्लाना व्यर्थ होगा। मैं तुमसे बाद में बात करूंगा।' इतना कहकर वह बाहर निकला और द्वार बन्द कर दिया।

अब वह बड़ी तेजी से कार चला रहा था। लगभग बीस मिनिट पश्चात् वह उस जगह पहुंच गया जहाँ उसने उस साये को भेजा था। इस फ्लैट में रोशनी थी सो उसने अनुमान लगा लिया कि वह व्यक्ति भीतर मौजूद है···द्वार पर आकर उसने दस्तक दी तो भीतर से पूछा गया, 'कौन ?'

'मैं···जिसने तुमको यहाँ भेजा है।'

'अच्छा।' फिर कुछ देर पश्चात दरवाजा खुला और मास्टर ब्रेन भीतर गया। उसने स्वयं दरवाजा बन्द किया और एक कुर्सी पर बैठता हुआ बोला—

'बैठो।' वह व्यक्ति बैठ गया।

'सबसे पहिले मैं तुम्हें यह बताना चाहूंगा कि टामी इस समय मेरे कब्जे में है।'

'क्या सच ?'

'हाँ···इसलिए अब तुम सुरक्षित हो···दूसरी बात यह कि गुप्तचर विभाग से मेरा कुछ सम्बन्ध नहीं है।'

'क्या ?' वह बड़ी जोर से चौंका।

'और···मेरा नाम मास्टर ब्रेन है ।'

'मास्टर ब्रेन !' वह बौखला गया ।

'हां···और यदि तुम मेरे बारे में जानते होगे तो तुमको ज्ञात होगा कि मैं हर उस अपराधी को बचाने का प्रयत्न करता हूं जो सच्चे मन से अपने अपराधों से तोबा कर लेता है । मैं उनकी सहायता भी करता हूं तुम्हें यह भी विदित होगा कि मैं जिसके पीछे पड़ जाता हूं वह फिर बच नहीं सकता । मैं तुम्हारे पीछे उस समय से लगा हुआ हूं जबसे तुम्हारा एक चित्र मुझे एक सन्देहजनक औरत के पर्स से मिला है । तुम्हारे चित्र का महत्व तब और भी बढ़ गया जब वह औरत···उसका एक साथी जिसने उसे चित्र दिया था । काफी हंगामे के पश्चात्त कत्ल हो गये ।

'मास्टर ब्रेन·· प्लीज मुझे बचा लो ।' वह व्यक्ति रुंधे हुए स्वर में रो उठा । मास्टर ब्रेन ने उसे तसल्ली न देकर रोने दिया । जब वह काफी रो चुका तो मास्टर ब्रेन ने कहा—

'हां···अब मुझे सब कुछ बता डालो ।'

वह व्यक्ति अटक-अटककर उसे बताने लगा । उसमें बहुत सी भयानक अपराधी कहानियों के अलावा इश्क मुहब्बत के किस्से भी थे तथा सलोमी का उल्लेख भी था । मास्टर ब्रेन सलोमी के उल्लेख में ही अधिक रुचि ले रहा था । उस व्यक्ति ने सलोमी के विषय में टामी का मत तथा दिलचस्पी भी बताई ।

'सलोमी कौन से अस्पताल में एडमिट हुई थी ?' मास्टर ब्रेन ने प्रश्न किया ।

'सरकारी अस्पताल में ?'

'जनाना सर्जिकल वार्ड में दाखिल हुई होगी ।'

'हां···वह बोला ।

'ठीक है मैं चैक करूंगा ।' मास्टर ब्रेन ने कहा और फिर उसे समझाने लगा ।

'तुम टामी के चंगुल में अधिक नहीं फंसे हो···और अब जबकि टामी मेरी कैद में है तुम सुरक्षित हो। जाओ और नेक जीवन व्यतीत करो।'

'मैं शादी करके नेक जीवन ही बिताऊंगा। टामी ने मुझे दस हजार रुपया दिया है इससे पहले भी वह काफी रकम दे चुका है। मैं इससे अपनी शिक्षा पूण कर सकता हूं।'

'यदि तुम ऐसा कर सको तो मुझे खुशी होगी।' मास्टर ब्रेन फिर उठकर खड़ा हो गया।

'जब तक कोई अच्छा प्रवन्ध न हो सके तुम यहाँ रह सकते हो।' उसने बाहर निकलते हुए उस व्यक्ति से कहा और बाहर आ गया।

रात आधी से अधिक बीत चुकी थी और वह नींद व थकन अनुभव कर रहा था इसलिए उसने टामी की मिजाज पुर्सी का विचार फिलहाल छोड़ दिया और आराम करने के लिये कार मकान की ओर दौड़ा दी।

ग्यारह

प्रातःकाल मास्टर ब्रेन की आँख काफी देरी से खुली। सूर्य की किरणें खिड़की के कांच से छनकर उसके कमरे में आ रही थीं और प्रकाश के सुन्दर वृत्त उसके पलंग पर भी पड़ रहे थे। एक बुलबुल खिड़की के कांच से टकराकर भीतर आने को फड़फड़ा रही थी। उसकी मोहक बोली से मास्टर ब्रेन के कानों में घंटियाँ सी बज उठी थीं और वह अंगड़ाई लेकर उठ बैठा। उसने खिड़की की ओर देखा और

मुस्कुराकर उठ गया। सबसे पहले उसने खिड़की खोली। बुलबुल फुदक कर भीतर आ गई और चहचहाती हुई कमरे में इधर से उधर उड़कर उसके कंधे पर बैठ गई। मास्टर ब्रेन ने प्यार से अपना मुँह उसकी ओर किया तो बुलबुल ने उसके होठों से अपनी चोंच मिलाई और उड़ गई। मास्टर ब्रेन मुस्कुराने लगा। वह फिर उसके कंधे पर आ बैठी और अपनी चोंच उसके कान से लगाकर कुछ जैसे कहने लगी। वह अपनी जगह से हटा और पलंग के पास रखी टेबिल की ड्राज खोलकर एक बिस्कुट निकालकर चूरा किया और अपनी हथेली पर रखकर बुलबुल को खिलाया। बुलबुल उसके हाथ पर बैठकर बिस्कुट का चूरा खाने लगी।...

इसके पश्चात मास्टर ब्रेन ने चूरा मेज पर डाल दिया और बुलबुल वहीं बैठ गई। वह स्वयं बाथरूम में चला गया। दैनिक कर्मों से निबटकर वह व्यायाम के कमरे में पहुँचा। यहाँ प्रत्येक प्रकार के व्यायाम का प्रबन्ध था। उठाने के लिए हैवी वेटस थे। लोहे के गोले थे जिन्हें फेंककर बांहों की ताकत बढ़ाई जा सकती थी। रेत से भरे हुए थैले थे जिन पर घूंसेबाजी का अभ्यास किया जाता था। निशानेबाजी का प्रबन्ध था...जमनाष्टिक की व्यवस्था थी और इसी प्रकार के अनेकों प्रबन्ध थे।

डेढ़ घंटे तक कसरत करने के पश्चात उसका नौकर भीतर आ गया और दोनों जूडों का अभ्यास करने लगे। इस प्रकार दो घंटे के पश्चात् जब सारा शरीर पसीने से नहा गया तो वह बाहर निकला। पसीना पोंछा और थोड़ा विश्राम करके स्नानगृह में चला गया।

गर्म पानी में आध घंटा नहाने के पश्चात् वह बड़ी ताजगी तथा जवानी अनुभव कर रहा था। तत्पश्चात वह पूजा के कमरे में आया। यहां प्रत्येक धर्म के धार्मिक ग्रन्थ थे। उसने प्रत्येक ग्रन्थ का कुछ भाग पढ़ा फिर हाथ जोड़कर अपनी आँखें ऊपर की ओर उठाकर कहा।

'ए परमात्मा...सृष्टि के रचीयता व पालक मैं तेरा बन्दा हूं। मुझे मानव-सेवा करते रहने की शक्ति प्रदान कर और मेरे पैर इस सदमार्ग पर कभी न डगमगायें।' इसके पश्चात वह नाश्ते के कमरे में आ गया। यहां नाश्ते के साथ हर अखबार भी था और बहुत से समाचारों पर लाल निशान लगे हुए थे। नाश्ते में शहद, मक्खन, अंडे, दूध, गोश्त के अतिरिक्त बादाम व डबल रोटी भी थी। फलों का रस भी था।

नाश्ता करते में उसने लाल चिन्हित सारे समाचार पढ़े। यह चिन्ह उसके नौकर ने लगाये थे जो गूंगा बहिरा था। मास्टर ब्रेन उसे जीरो कहता था और हाथ के इशारों से उससे बातें करता था। वैसे जीरो को होंठ के हिलने से बात समझने में निपुणता प्राप्त थी। वह बात करने वाले के होठों को देखकर बता सकता था कि उसने क्या कहा है। वह लिख पढ़ भी सकता था और इस सारे काम की समझ उसे मास्टर ब्रेन ने दी थी। मास्टर ब्रेन को उस पर बड़ा भरोसा था यों भी जीरो को कदाचित अपने मालिक की असलियत का ज्ञान नहीं था।

नाश्ते से निबटकर वह फोन वाले कमरे में आया। फोन उठाकर उसने इंसस्पैक्टर शर्मा का नम्बर मिलाया। उसे पता था कि शर्मा अब तक अपनी डयूटी पर आ गया होगा। घंटी अधिक देर तक नहीं बजी। दूसरी ओर से शर्मा ने ही फोन उठाया—

'गुड मार्निंग चीफ।' मास्टर ब्रेन ने शरारती स्वर में कहा।

'गुड मार्निंग!' शर्मा ने उत्तर दिया।

'आप कैसे हैं?'

'ठीक हूं...क्यों?'

'मैंने सुना था आपके पेट में दर्द हो रहा है?'

'क्या तुमको पता है तुम किससे बात कर रहे हो?'

'हां...शायद इन्स्पैक्टर शर्मा से।'

'फिर तुम्हें इतनी बदतमीजी करने का साहस कैसे हुआ!'

'इन्स्पैक्टर शर्मा क्या बदतमीजी पर भी तुम्हारा अधिकार है ?'

'है ।' वह झल्लाकर बोला ।

'मैं तो यह मालूम करना चाहता था कि तुम्हें उस लड़की की लाश मिली ?'

'मगर तुम हो कौन ?'

'चिन्ता न करो'''मैं कातिल नहीं हूं ।'

'फिर कौन हो ?' शर्मा चिल्लाया ।'

'इस प्रकार चिल्लाओगे तो नाश्ता समय से पहले पच जायेगा—मंहगाई का जमाना है खाना शीघ्र नहीं पचना चाहिए ।'

'बदतमीज जंगली ।' शर्मा चिल्लाया—

'इस समय मुझे तुम्हारी बेवसी पर हँसी आ रही है ।'

'यदि तुम मेरे सामने होते तो तुम्हें शूट कर देता ।'

'मैं हजारों बार तुम्हारे सामने आता हूं ।'

'तुम'''मास्टर ब्रेन !' इन्स्पैक्टर एकदम चौंककर बोला ।

'शायद अब तुम सिर पर बादाम रोगन की मालिश कराने लगे हो, इसलिए थोड़े बुद्धिमान होते जा रहे हो ।'

'मैं तुम्हें सचमुच किसी दिन शूट कर डालूंगा ।'

'बहुत से लोग यही करते व कहते चले आते हैं तथापि मैं अब तक जीवित हूं ।'

'तुमने मुझे फोन क्यों किया था ?'

'ताकि तुम्हें सूचित कर सकूं कि शीघ्र ही एक प्रसिद्ध अपराधी तुम्हारे हवाले करने वाला हूं ।'

'अपराधी !'

'हां'''वही जिसने होटल शबनम में हत्या की थी । वही जिसने उस जासूस लड़की व उसके साथी को मारा । वही जो यहां अनेक अपराधी कार्य कर रहा है । उसे सलोमी की खोज भी थी ।

'सलोमी ?'

'हाँ वही सलोमी जो एक अस्पताल में मर गई। कदाचित तुम्हें उसके बारे में कुछ नहीं पता।'

'नहीं···मुझे कुछ नहीं पता वह कौन थी ?'

'स्थिति ऐसी है कि तुम विश्वास न करोगे···सो छोड़ो।'

'मगर तुम किसी मुजरिम की चर्चा कर रहे थे।'

'हाँ उसका नाम टामी है।'

'टामी ?'

'हाँ···मगर यह वह बन्दर टामी नहीं है वह तो जमीन में जीवित गाड़ा जा चुका है।' मगर इसकी हरकतें उस टामी से कहीं अधिक खतरनाक हैं।'

'और वह इस समय कहाँ है ?'

'मेरी कैद में।'

'मास्टर ब्रेन···तुम्हें अपराधियों को अपनी कैद में रखने का क्या हक है ?'

'इन्सपैक्टर शर्मा··· यह मेरा अपना क़ानून है। मैं मनुष्य को मनुष्यता पर तौल कर अपना कानून बनाता तथा दोषी होने पर सजा देता हूं और तुम मेरे इस कार्य को अपराधिक कार्य कहते हो।'

'मगर अपराधी को दंड देने के लिए विधि विधान तथा अदालतें भी हैं।'

'मुझे इससे इनकार नहीं···मगर वहां मुजरिम को मनुष्यता तथा स्थिति को तुला पर नहीं तोला जाता बल्कि गवाहों की गवाही को तुला पर तौला जाता है। यह तो···और···तुम भी जानते होंगे कि गवाह खरीदे भी जा सकते हैं तुम स्वयं भी अपने बहुत से केस मजबूत बनाने के लिए झूठे गवाह पैदा कर चुके हो। कानून का इतिहास साक्षी है कि कानून ने कभी-कभी भारी भूल की है···और निर्दोषों को सजायें—बल्कि

मृत्यु दंड तक दिये हैं। फिर वहाँ गवाहों के अतिरिक्त वकीलों तथा पैसों की आवश्यकता होती है। मेरा देश गरीबों का देश है धन कहाँ से आये।'

'तुम समझते हो कि तुम जो कुछ करते हो ठीक करते हो।'

'हाँ...और इस बात का विश्वास तुम्हें भी है...मैं अपने अन्तःकरण की आवाज पर कार्य करता हूं। उन अपराधियों को सुधरने का मौका भी देता हूं, जो सच्चे मन से अपराधों से तोबा कर लें।'

'तुम बकवास करते हो।'

'बको मत...अभी तुम रणधीर मैन्शन के पीछे सड़क पार वाली कोठी में जाकर देखो।

'क्यों वहाँ क्या है ?'

'टामी वहीं कैद है। वैसे तो मुझे विश्वास है कि उसके साथी फरार हो गये होंगे...मगर फिर भी।'

'सुनो मास्टर ब्रेन...शराफत इसी में है कि यदि टामी अपराधी है तो उसे मेरे हवाले कर दो।'

'शर्मा...इस बार मैं यह त्रुटि नहीं करूंगा तुम मुजरिमों की देख भाल नहीं कर सकते......बहुधा अपराधी तुम्हारे कब्जे से निकल भागे हैं।'

'अच्छा मैं देखूंगा !' शर्मा झल्ला पड़ा और मास्टर ब्रेन ने फोन बन्द कर दिया।

इसके पश्चात उसने कपड़े बदले और बाहर आ गया। गैरेज से कार निकाली और सड़क पर दौड़ा दी। अब वह उसी ओर जा रहा था जहां उसने टामी को बन्द कर रखा था।

जब उसने फ्लैट के सामने कार रोकी तो इस बात का आभास हुआ कि भीतर कुछ गड़बड़ है। सो वहीं सावधानी से उतरकर भीतर घुसा। द्वार बन्द था। द्वार खोलकर जैसे ही वह भीतर घुसा एक गोली

सनसनाती हुई उसकी कनपटी के निकट से निकल गई। यदि उसे द्वार खोलकर किनारे से लगकर भीतर घुसने की आदत न होती तो और द्वार के बीच से वह भीतर घुसा होता तो उसकी खोपड़ी में छेद हो गया होता। वह सम्हला और शीघ्रता से भीतर दीवार के साथ चिपक कर खड़ा हो गया। दो फायर हुए और दोनों गोलियाँ दरवाजे के बीच में से निकली चली गईं। मास्टर ब्रेन समझ गया कि यह मैकेनकी सिस्टम से किये गये फायर हैं। सामने जंगला अपने स्थान पर मौजूद था किन्तु पिन्जरे की सलाखें सामने की ओर घूमी हुई थीं और उसमें टामी न था। वह पिन्जरे के पास आया तथा झुककर सलाखों को देखने लगा। उन्हें जड़ पर से काटा गया था। वहीं एक कागज पड़ा था। मास्टर ब्रेन ने ज्यों ही कागज उठाया तो पता चला कि वह एक धागे से बंधा हुआ है और धागे का दूसरा छोर एक सफेद सी गेन्द से बन्धा हुआ है क्योंकि धागे को झटका लग चुका था इसलिए वह समझ गया कि यह सब क्या है? फिर पल भर के दसवें भाग में वह जमीन पर लेटकर दूसरी ओर करवट लेने लगा। तत्क्षण एक जोर का धमाका हुआ—वह सफेद गेन्द जोर से फट पड़ी और धरती हिल गई। दीवारें गिरने लगीं। उसने बड़ी कठिनाई से कोने की ओर छंलाग मारी क्योंकि छत गिर रही थी। यदि वह ऐसा न करता तो दबकर मर गया था।

छत गिरी और वह कोने में दुबका पड़ा रहा—दीवारें भी गिर पड़ीं उस पर भी दीवार का कुछ भाग गिरा किन्तु थोड़ी सी चोट के सिवा उसे कोई बड़ा घाव नहीं लगा।

जब मकान गिरने का हंगामा समाप्त हो गया तो वह धीरे-धीरे अपने स्थान से हटकर बाहर निकल आया। सबसे पहिले उसने अपने पर से धूल झाड़ी और घावों को देखा। सिर पर दो गूमड़े निकल आये थे तथा छोटे से घाव से रक्त बह रहा था। कंधे व कमर पर चोट कम लगी थी। रान तथा पिंडली भी घायल हुई थीं और उसके जोड़ों में दर्द

उठ रहा था ।

धूल झाड़ने तथा अपने घावों का अवलोकन करने के पश्चात उसे इतमीनान हुआ कि वह जीवित है व चोटें कम ही लगी हैं । फिर उसने बिल्डिग पर दृष्टिपात किया । उसका बीच वाला कमरा बिल्कुल ध्वस्त हो गया था । फिर वह अधिक देर वहाँ नहीं ठहरा, क्योंकि लोग वहाँ एकत्र हो सकते थे ।

अपनी कार तक वह लड़खड़ाता हुआ पहुँचा । उसे स्टार्ट किया और सड़क पर दौड़ा दिया । जब वह अपने मकान पहुँचा तो शान्ति की सांस ली । सर्व प्रथम उसने घावों को मरहम पट्टी की और फिर उस कागज को देखने लगा जो उसे वहाँ मिला था । उस पर लिखा था—

'मास्टर ब्रेन'''पहिले तो तुम इस कागज का लेख पढ़ने के लिए जीवित ही नहीं बचोगे और तुम्हारी कब्र इसी इमारत में बन जायेगी, फिर भी यदि तुम किसी प्रकार बच भी गये'''क्योंकि मैंने सुना है कि तुम बच भी जाया करते हो'''तो इतना याद रखना कि अब तक तुम मेरे शत्रुओं की लिस्ट में नहीं थे । मगर क्योंकि तुमने मेरे मामलों में स्वयं टाँग अड़ाई है इसलिए मैंने तुम्हारा नाम अब अपने दुश्मनों की लिस्ट में सबसे ऊपर लिख लिया है । मैं ऊपर लिखे हुए नामों को मिटाना सबसे आवश्यक समझता हूं'''इसलिए पहिली ही फुरसत में मेरे रिवाल्वर की एक गोली तुम्हारे भेजे में प्रवेश करेगी तुम्हारे विषय में मैं न तो कोई झंझट मोल लूंगा और न कुछ लिहाज करूंगा न कोई विचार। इसलिए तुम अपनी मौत की प्रतीक्षा करो !।

फकत तुम्हारा दुश्मन
—टामी

पढ़ने के पश्चात मास्टर ब्रेन ने इस कागज को नष्ट कर दिया ।

बारह

रात काफी घनी अन्धेरी थी मगर इसाइयों के कब्रिस्तान के ऊँचे-ऊँचे पेड़ होने से यहाँ अन्धकार और भी अधिक था। इसके रिक्त यह जगह नगर से काफी दूरी पर थी और इसके आस-पास न होने के कारण निर्जन भी। चारों ओर भयानकता व्याप्त थी।

कब्रिस्तान का बड़ा गेट सड़क से काफी दूरी पर था। सड़क गेट के बीच चौड़ा मगर टूटा-फूटा रास्ता बना था। रास्ते के ओर बेर की झाड़ियाँ उग रही थीं।

गेट के भीतर दायीं ओर एक छोटा-सा मकान था, मकान की खप्परें की थी। इस मकान का द्वार कब्रिस्तान की ओर खुलता तथा एक खिड़की बाहर की ओर थी। मकान के सामने संगमरमर अनेक सिलें पड़ी हुई थीं। गेट के दूसरी ओर एक गोदाम जिसमें मुर्दों को ढोने वाली गाड़ियाँ थीं, जिसे चार आदमी चला थे। इसके अतिरिक्त यहाँ छोटे बड़े कई ताबूत भी रखे थे।

मगर इस समय अंधकार में सब-कुछ एक भयानक मुर्दे के ही प्रतीत हो रहा था। कब्रिस्तान का बूढ़ा कब्र खोदने वाला अपनी कोठरी में बैठा हुक्का पी रहा था। छत से बिजली का मद्धम बल्ब लटक रहा था।

पीटर को इस कब्रिस्तान में कब्रें खोदते हुए लगभग बीस वर्ष गए थे। जब वह जवान था तो उसने एक काली भुजंग औरत से कर ली थी। लोग कहते थे कि वह काली भुजंग औरत एक

साथ भागकर आई थी। फिर वह मर्द हैजे से मर गया। यह काली औरत एक दो बार अपने पति की कब्र पर आई और पीटर से नजरें लड़ गईं। फिर लोगों ने इस काली भुजंग औरत को उसकी कोठरी में देखा। उसकी शादी नहीं हुई थी किंतु वह उसके साथ रहने लगी थी। औरत को पान खाने की आदत थी सो पान खाने वह एक पनवाड़ी की दुकान पर आया करती थी। एक मुसलमान लड़के से उसका याराना हो गया···और वह एक दिन उसे लेकर भाग गया। लोगों का विचार था कि वे दोनों बम्बई भाग गये हैं क्योंकि औरत को फिल्मों में काम करने का भी बड़ा चाव था।

उस दिन के पश्चात् से पीटर खामोश रहने लगा था और बुढ़ापा बड़ी तेजी से उस पर छाने लगा था। अब उसका मौन रहना बड़ा प्रसिद्ध था। वैसे भी कब्रिस्तान में बात करने कौन आता···और मुर्दे बात किया नहीं करते सो उसे चुपचाप रहने की आदत पड़ गई थी। दिन के समय कुछ चरसिये तथा जुआरी यहाँ आकर जुआ खेला करते थे। उनके मतानुसार जुआ खेलने को यह स्थान काफी सुरक्षित था। पुलिस का विचार था कि पीटर मादक पदार्थों को कब्रों में छुपाने में उनकी सहायता करता है क्योंकि उन लोगों से उसे अच्छी आमदनी होती थी।

आज रात वह अपनी छोटी-सी पेटी में रखे नोट गिनकर हुक्का पीने बैठा ही था कि द्वार पर दस्तक हुई।

'कौन है ?' पीटर ने पूछा—

'मैं हूं···!'

'मैं कौन भई ?'

'पीटर···दरवाजा तो खोलो।'

'क्या काम है ?'

'एक आवश्यक काम है।'

'कब्र खोदने वाले से इस समय तुम्हारा क्या काम हो सकता है। यह तो तुम्हें पता होगा कि सूरज डूबने के पश्चात् ईसाईयों के मुर्दे दफन नहीं होते।'

'तुम दरवाजा तो खोलो यार।'

'अच्छा ठहरो!' वह बोला और फिर हुक्का एक ओर रखकर उठा और द्वार खोल दिया। अगले ही क्षण एक व्यक्ति भीतर घुस आया और बोला—

'आओ बैठो।'

'काम क्या है?'

'बताता हूं बैठो तो।'

पीटर एक ओर पास आकर बैठ गया। वह व्यक्ति भी एक पुराने स्टूल पर बैठ गया। पीटर उसे घूर रहा था।

'मैं एक लेखक हूं तथा भूतों पर एक कहानी लिख रहा हूं। वह कहानी तुम्हारे जैसे एक कब्र खोदने वाले के आस-पास घूमती है। इसलिये मैंने सोचा कि तुमसे कुछ जानकारी प्राप्त कर लूं।'

'किन्तु इस समय पता है क्या बज रहा है।' पीटर ने कहा और जेब से एक पुरानी पाकेट वाच निकालकर टाइम देखकर बोला—'एक बज रहा है।'

'मुझे पता है मगर कहानी का मौका ही ऐसा है। मैं यह बात करना चाहता हूं कि ऐसे समयों में तुम्हारी अनुभूतियां कैसी होती हैं? क्या तुम्हें डर नहीं लगता?'

'डर!- पीटर जोर से हँसा—'इसमें डर की क्या बात है।'

'इन रूहों इत्यादि से।'

'भई यह रूहें स्वयं मनुष्य से डरती हैं।'

'तुम एक नई बात बता रहे हो।' वह व्यक्ति भयभीत स्वर में बोला—पीटर अपना हुक्का पीता रहा।

'अच्छा मिस्टर पीटर क्या तुमने कभी कोई रुह देखी है ?'

'हाँ ! कई बार ।'

'क्या सचमुच ।'

'हाँ ! मैंने उनको कई बार देखा है ।'

'तुमको कैसा लगा ?'

'कैसा भी नहीं···वह मुझे तंग करना चाहती हैं । मैंने उन्हें झिड़क दिया ।'

'क्या आत्माएँ भी भेस बदल लेती हैं ?'

'हां !'

'क्या तुमने कोई ऐसी घटना देखी है ?'

'हाँ ! एक बार मैंने एक चुड़ैल जैसी रूह को झिड़क दिया । वह नाराज होकर चिल्लाती हुई भाग गई । किन्तु शीघ्र ही काली बिल्ली के रूप में आ गई । मैं समझ गया सो मेरे देखते ही देखते वह एक बुढ़िया बन गई । मैं फिर भी डरा नहीं तो उसके पाँव लम्बे होते चले गये । उसका एक पाँव बकरी का था और एक सिंह का । इसी प्रकार एक हाथ बकरे के खुर की तरह था दूसरा सिंह के पंजे की तरह, फिर उसनें दोनों हाथ फ़ैलाये और उसके हाथ लम्बे होते गये । वह बुरी तरह से बढ़ रहे थे, किन्तु मैं भयभीत नहीं हुआ । उसका विचार था कि डर के मारे मैं अचेत हो जाऊंगा ।'

'क्या तुमको उससे बिल्कुल डर नहीं लगा ?'

'नही ! उसके हाथ मेरी गर्दन में आये और मैंने उन्हें झटक दिया । फिर जेब से माचिस निकाली और जला दी । जलती हुई माचिस देखकर वह भागी और चिल्लाई ।

'मैं तुझे देखूंगी···मैं तुझे देखूंगी ।'

'मान लो यदि तुम डर जाते तो ?'

'तो मैं पागल हो जाता ।'

'कमाल है। मैं तो यह सुनकर ही डर रहा हूं।'

'ऐसी कई घटनायें हैं। एक बार कुछ आत्माएं एक दुष्टात्मा को दफन करने लाईं। वे एक गाड़ी में आई थीं लाश तावूत में थी। मगर मैंने उन्हें लाश दफन करने की अनुमति नहीं दी। तब उन्होंने अपना रंग दिखाना शुरू किया। कभी आग, कभी बिजली कभी भेड़िया बनती रहीं मगर मैं नहीं डरा आखिर में वह चली गई।'

'गाड़ी सहित।'

'हाँ...बस पलक झपकते में गायब हो गईं।'

'कहाँ?'

'हवा में मिल गईं।'

'क्या कभी किसी अच्छी आत्मा से भी बातचीत हो सकी।'

'हाँ...कई बार।'

'वह क्या कहती हैं?'

'कुछ नहीं...आ जाती हैं हाल पूछती हैं और चली जाती हैं।'

'सुना है रूहें छुपे खजाने का पता तथा लाटरी का नम्बर भी द दिया करती हैं।'

'नहीं...यह गलत है। हाँ इतना अवश्य है कि किसी खजाने से सम्बन्ध उनसे हो तो वह उसका पता वता सकती हैं। वह अपने कातिल का पता भी बता देती हैं।'

'क्या किसी आत्मा ने अपने कातिल का पता भी कभी बताया है।'

'हाँ...!'

'मुझे बताओ।'

'व्यर्थ...इससे क्या लाभ।'

'मिस्टर पीटर! तुमको डर क्यों नहीं लगता।'

'शुरू में लगता था। मगर धीरे-धीरे यह डर कम होता गया। मैं बीस वर्षों से इसी कोठरी में हूँ। मेरा सम्पर्क मुर्दों तथा मुर्दों के

रूहों से ही है इसलिये डरने का कोई कारण दिखाई नहीं देता।'

'तुम्हारे साहस की प्रशंसा करनी पड़ती है। अच्छा क्या तुम मुझे कोई रूह दिखा सकते हो ?'

'कठिन है···रूहें प्रत्येक व्यक्ति को दिखाई नहीं पड़तीं। जैसे यदि मैं किसी रूह से बात कर रहा हूं और वह मुझसे बात कर रही है तो मैं उसे देख सकता हूं और उसकी आवाज मैं ही सुन सकता हूं। आप यद्यपि मेरे पास खड़े हैं। मुझे देख सकते···मेरी आवाज सुन सकते हैं। मगर यह आवश्यक नहीं कि उस आत्मा को देख सकें···उसकी बात सुन सकें।'

'क्या ऐसा भी होता है ?'

'हां···और इसीलिये लोगों को मेरी बात का विश्वास नहीं होता।'

'लोग यह भी कहते हैं कि यह सब दिमाग की खराबी तथा नजरों का धोका भी होता है।'

'लोग बकते हैं।'

'अच्छा मुझे रूह दिखाओ।' वह बोला—

'आओ···!' पीटर खड़ा हुआ। यह व्यक्ति भी खड़ा हो गया और बोला—

'मगर मैं देखूंगा दूर से···मुझे डर लगता है।'

'मेरे साथ डरने की कोई बात नहीं है।' पीटर बोला और द्वार खोलकर बाहर आ गया। बाहर वही कब्रिस्तान वाला अन्धकार था। पीटर ने इधर उधर देखा और फिर चौंककर बोला—

'वह देखो···वहां कुछ रूहें क्या कर रही हैं ?' उसने दूर तक संकेत किया। वहां सचमुच कुछ मानव छायाएं कब्र खोदती हुई दृष्टिगोचर हो रही थीं।

'क्या वे आत्माएं हैं ?'

'हाँ !'

'वहाँ वह क्या कर रही हैं।'

'कदाचित किसी की कब्र खोद रही हैं।'

'किसकी है ?'

'बताता हूं···।' वह बोला और कुछ गिनने लगा। फिर कुछ हि- सा लगाकर बोला—

'यह सलोमी नामक एक लावारिस लड़की की कब्र है।'

'क्या कल प्रातःकाल तुमको यह कब्र खोदी हुई मिलेगी ?'

'नहीं···कब्र समतल होगी।' फिर उन लोगों में कोई बातचीत हुई। रूहें कब्र के भीतर घुसकर कुछ कर रही थीं। पीटर उनके निक- जाना चाहता था किन्तु उस व्यक्ति ने मना कर दिया। रूहों का वह बड़ी देर तक चलता रहा। फिर रात के इस भयानक सन्नाटे में फायर हुए। यह दोनों चौंक उठे।

'क्या यह भी इन्हीं का काम है ?' इस व्यक्ति ने प्रश्न किया।

'शायद !' पीटर ने उत्तर दिया।

फिर उन्होंने देखा कि कब्र खोदने वाली रूहें भाग रही हैं। दो बार फायर और हुए। इसके पश्चात् कुछ रूहें दीवार फांद भीतर प्रविष्ट हुईं और कब्र की ओर भागने लगीं।

'यह तो कुछ और ही घपला है।' पीटर बोला और चिल्लाया 'कौन है ?' इसके साथ ही वह कब्र की तरफ भागा। किन्तु गोली शोर करती हुई आई और उसके सीने में घुस गई। पीटर चीख गिर पड़ा। वह व्यक्ति गेट की ओर भागा···साथ ही वह सोच था कि वह उसे नाहक ही बाहर निकालकर लाया। आखिर उस जिम्मेवारी यहीं तक थी कि वह पीटर को उस समय तक बातों उलझाये रखे जब तक कि उसके साथी अपना काम समाप्त न कर लें किन्तु वह गोलियाँ चलाने वाले कौन लोग थे ? क्या हमारे वैरी ?

वह यही सोचता हुआ सड़क पर आ गया और एक कार ने उसे अपने भीतर कर लिया। फिर कार सड़क पर दौड़ने लगी।

तेरह

मास्टर ब्रेन टहलता हुआ उस मेज तक पहुँचा जिस पर एक लड़का एक लड़की बैठे हुए थे। इन लोगों ने इसे अप्रिय भाव से देखा किंतु वह वहाँ बैठ चुका था।

'आप शायद सभ्यता से विहीन आदमी प्रतीत होते हैं।' लड़की तीखे स्वर में बोली—

'जी नहीं···आपका विचार गलत है मास्टर ब्रेन गम्भीरता से बोला—

'क्या बिना पूछे बैठना यहाँ असभ्यता नहीं है ?'

'परिस्थिति वश नहीं।'

'आप यहाँ से उठ जाइये।' वह लड़की जोर से बोली---

'मैं नहीं उठ सकता।'

'तो हम ही उठ जाते हैं।'

'नहीं···आप लोग भी बैठे रहें।'

'क्या मतलब ?'

'मेरा जीवन संकट में है···यदि आप या मैं यहाँ से उठ गये तो दूसरे ही क्षण मैं मुर्दा होऊँगा।' मास्टर ब्रेन ने धीमे स्वर में कहा और दोनों उसे चकित होकर देखने लगे।

'मिस्टर आप भी कदाचित कुछ परेशान लगते हैं ?' मास्टर ब्रेन

ने उस आदमी से कहा ।

'नहीं तो ।'

'मैं उस बड़े से सिर और छोटे-छोटे पैरों वाले आदमी से भयभी[illegible] हूं ।' उसने कहा तथा आँखों से एक ओर संकेत किया । मर्द ने [illegible] ओर देखा और उसका चेहरा एकदम श्वेत पड़ गया ।

'क्या तुमको भी उसी से खतरा है ?'

'न न...नहीं तो ।'

'तुम झूठ बोलते हो ।'

'मगर तुम कौन हो...?' लड़की ने पूछा ।

'मैं तुम्हारा हमदर्द हूं ।'

'हमें किसी की हमदर्दी की आवश्यकता नहीं ।

'चलो कोई बात नहीं ।' मास्टर बेन ने कहा फिर उसे लगा [illegible] उस बड़े सिर वाले ने इस आदमी को कोई संकेत किया । संकेत प[illegible] ही आदमी व्याकुल हो गया और झिझककर बोला—

'मैं अभी आता हूं ।'

'मगर मुझे छोड़कर कहाँ जाना चाहते हो ?'

'अभी आता हूं...तुम यहीं बैठो ।' वह बोला और उठकर बा[illegible] की ओर चला गया । मास्टर बेन ने देखा कि वह बड़े सिर वाला [illegible] उठकर उसके साथ बाहर निकल गया । लड़की मास्टर बेन की मौजूद[illegible] से कुछ परेशान हो गई और वहाँ से उठने की चेष्टा करने लगी ।

'बैठी रहिये ।' मास्टर बेन बोला—

'क्यों ?'

'बाहर फिलहाल आपके जीवन को खतरा है ।'

'आप हैं कौन ?'

'मैं पुलिस का आदमी हूं ।'

'और यहाँ किसने भेजा है ?'

'प्रिया ने।'

'प्रिया ने...।' वह चौंकी—'वह मुझसे क्या चाहती है ?'

'वह आपकी भलाई चाहती है।'

'भलाई चाहती है या कोई धंधा कर रही है ?'

'यह सब मुझे नहीं मालूम।'

'अच्छा !' वह मुँह बनाकर रह गई।

'मिस्टर नरेन्द्र को आप कब से जानती हैं ?'

'क्यों...?'

'मैं वसे ही पूछ रहा हूं।'

'कई वर्षों से।'

'क्या आपका विवाह होने वाला है।'

'जी हाँ !'

'बधाई हो।'

'आप कहना क्या चाहते हैं ?'

'मैं यह ज्ञात करना चाहता हूं कि क्या नरेन्द्र ने आपको पिछले दिनों कुछ बताया है।'

'वह तो प्रतिदिन ही कुछ न कुछ बताता है।'

'कोई ऐसी बात जो बड़ी विचित्र लगी हो।'

'यही कि प्रिया उससे शादी करना चाहती है।'

'और नरेन्द्र क्या चाहता है।'

'वह मुझसे प्रेम करता है।'

'तब तो आप भाग्यशाली हैं।'

'शुक्रिया ! मगर अब आप यहाँ से उठ जायें।'

'क्या उसने आपको कोई चीज दी ?'

'नहीं।'

'आप यकीन से कह सकती हैं ?'

'जी हाँ'''आप तो इस प्रकार कह रहे हैं जैसे मैं मुजरिम हूं।'

'नहीं'''यह मतलब तो नहीं मेरा।'

'तो फिर कृपया आप उठ जायें।'

'यदि आप चाहें तो यहाँ से चली जायें मैं नहीं उठूंगा।'

'मैं तुम्हें वेटरों से उठवाकर फिकवा दूंगी।' वह कटु स्वर में बोली और मास्टर ब्रेन ने उठते हुए कहा—

'अगर आप हसीन न होतीं तो मैं नाराज हो जाता।' इतना कहकर वह बाहर आ गया। उसका रुख अंधकार में खड़ी पंक्तिबद्ध कारों की ओर था। नरेन्द्र यहाँ कहीं नहीं दीख रहा था। काफी देर पश्चात् वह लड़की बाहर निकली और सीधी अपनी कार की ओर बढ़ी। कार में बैठकर कार स्टार्ट की। मास्टर ब्रेन ने छलांग लगाई और डिग्गी में जा घुसा। कार वेग से दौड़ रही थी।

अकस्मात वह चौंकी, क्योंकि उसे पिछले शीशे में वही बड़ा सा सिर दिखाई दे रहा था। उसने घूमकर देखा तो वह हंस पड़ा तथा गुर्राकर बोला—

'मेरा नाम टामी है। इस समय मैं तुम्हारे उन विचारों को भी पढ़ सकता हूं जिन्हें तुम छुपाना चाहती हो।'

'क्या?' वह फिर चौंकी।

'हाँ, मैं विचार पढ़ने का विशेषज्ञ हूं।'

वह बौखला उठी और उसके मस्तिष्क में उसके छुपे हुए विचार घूमने लगे। वह प्रयत्न कर रही थी कि उन्हें भुला दे मगर टामी ने उसे चौकन्ना कर दिया था इसलिये विचार आते चले जा रहे थे। छुपे हुए विचारों को अचेतन से चेतन में लाने की यह मनोवैज्ञानिक विधि थी। टामी इसमें पूर्ण रूपेण सफल होकर बोला—

'गाड़ी मेरे संकेत पर चलाओ वर्ना मैं गोली मार दूंगा। अगले चौक से दायीं ओर मोड़ लेना।'

'क्यों ?'

'सवालात मत करो, वरन् अपने अतीत के बारे में सोचो।'

'शटअप !' वह झल्लाकर बोली।

'व्यर्थ है। मुझे सब कुछ ज्ञात होता जा रहा है। मेरे हाथ में रिवाल्वर है। मैं नरेन्द्र की हत्या कर सकता हूं तथा तुम्हारी भी।'

'तुम ईडियट हो।'

'गाड़ी मोड़ लो।' उसने रिवाल्वर की नाल उसकी गुद्दी से लगा दी। विवशतः उसने गाड़ी की दिशा बायीं ओर मोड़ ली। कुछ देर पश्चात् उसने आदेश दिया—

'गाड़ी रोक लो।'

'तुम मुझ कहाँ ले जाना चाहते हो ?' गाड़ी को किनारे से लगाती हुई वह बोली।

'चिन्ता न करो। मैं तुम्हारे शरीर को हाथ भी नहीं लगाऊँगा।'

'तमीज से बात करो।'

'मैं तुम्हारे विषय में सब कुछ तुम्हारे ही विचारों से जान गया हूं।'

'वह तो ठीक है, मगर अब तुम मुझसे क्या चाहते हो ?'

'उस बिल्डिंग में चलो।'

'क्या तुम यहीं नहीं पूछ सकते ?'

'अच्छा, यह बताओ नरेन्द्र से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ?'

'वह मेरा मंगेतर है।'

'क्या वास्तव में तुम उससे शादी कर रही हो ?'

'हाँ।' वह भयातुर स्वर में बोली और टामी जोर से हँस पड़ा।

'तुम हँस क्यों रहे हो ?'

'कुछ नहीं, मैं यह ज्ञात करना चाहता हूं कि क्या नरेन्द्र ने कोई वस्तु तुम्हारे पास अमानत तो नहीं रखी। मेरा अभिप्राय दिल जैसी निकम्मी वस्तु से नहीं।'

'नहीं, उसने मुझे कोई चीज नहीं दी, जो आता है यही पूछता है।'

'और कौन पूछ रहा था?'

'एक पुलिस आफिसर।'

'पुलिस आफिसर!' वह चौंका, 'कहाँ मिला था?'

'वही जो हमारे समीप बैठा था।'

'और वह मैं हूं।' मास्टर ब्रेन डिग्गी में से निकलकर बोला और साथ ही अपनी फौलादी गेंद का प्रहार किया। टामी की चीख निकल गई। वह बड़ी तेजी से एक ओर भागा। मास्टर ब्रेन को पता था कि टामी बड़ी तेजी से भागता है, इसलिए उसने उसका पीछा नहीं किया। फिर वह कार में प्रवेश करके लड़की से बोला—

'मिस कोमल, बैठ जाइये।' लड़की भी बैठ गई।

मास्टर ब्रेन ने कार स्टार्ट की और घुमाकर वापसी के लिए दौड़ा दी। रास्ते में उसने कहा—

'यह पश्चिम का नामी मुजरिम टामी है।'

'टामी, क्या वही टामी जो बन्दर की नस्ल से है और मास्टर ब्रेन के सिवाय किसी से नहीं डरता।'

'नहीं, वह टामी नहीं। एक अर्सा हुआ वह तो जीवित गढ़ गया था। यह दूसरा टामी है। मगर यह भी उसी की तरह शैतान है।'

'किन्तु तुम हो कौन?'

'मैं, कदाचित् तुम मुझे प्रिंस कहना पसन्द करोगी।'

'अर्थात, तुम···तुम मास्टर ब्रेन हो?'

'जी हाँ।'

'प्रिन्स, क्या सच ?'

'अब मैं कैसे विश्वास दिलाऊँ।'

'प्रिन्स, तुमने मेरी जान बचाई है। मैं किस प्रकार तुम्हारा शुक्रिया अदा करूं।' वह उसके बिल्कुल समीप खिसक आई।

'कोमल जी, आपकी शादी मि० नरेन्द्र से तय हो गई है। मैं आपके लिए पराया मर्द हूँ।'

'प्रिन्स, मैं जर्मनी में पैदा हुई तथा पली बढ़ी हूँ। मैं माडर्न लड़की हूँ।' उसने कहा।

'यदि आप अलग नहीं हुईं तो मैं यहीं पर उतर जाऊंगा।' वह बोला और वह खिसियाकर अलग हो गई।

चौदह

वे सब लोग पहले से लान में मौजूद थे। सारा वातावरण जोर-जोर के शोख व चंचल ठहाकों तथा हँसने की आवाजों से गूंज रहा था। फिजा में क्रीम पावडर की मिली जुली सुगन्धि बसी हुई थी। भड़कीले वस्त्रों व तंग पतलूनों ने ऐसा दृश्य प्रस्तुत कर रखा था जैसे पतली पतली सूखी लकड़ियों के बीच फूल बिखरे पड़े हों। ऊंचे बाल, फूले बाल, कटे हुए बाल, पोनी टेल तथा पफ सब कुछ मौजूद था। खुले हुए उभरे व पिचके सीने तथा गदराये हुये शरीर। मचलते हुये अरमान एवं फिसलती हुई नजरें।

यह सब कुछ इसलिये था कि यहाँ कालेज के लड़के लड़कियाँ मौजूद थीं और वह जगह मिनिस्टर गोबिन्द पाटिल साहब की कोठी के

पीछे का वह सुन्दर लान था जिसके बीच में एक तालाब भी था। तालाब में रंग बिरंगी मछलियाँ तैरती रहती थीं। सुना जाता था कभी-कभी उनकी दोनों जवान लड़कियाँ भी इस स्वीमिंग पू मछलियों के साथ कपड़े उतारकर तैरती हैं।'

'नरेन्द्र अब तक नहीं आया।' एक लड़के ने ऊंचे स्वर में प्रिय पूछा। यह प्रिया मि० पाटिल की बड़ी लड़की थी जिसकी सुन्दर चंचलता की चर्चा कालेज से लेकर शहर तक थी। वह बार-बार की ओर देख रही थी।

'क्या उसे बताया था ?' एक लड़की ने प्रिया से पूछा।

'हाँ, आज सवेरे मैंने उसे याद भी दिलाया था।' वह चलो बोली।

'फिर वह क्यों नहीं आया ?'

'पता नहीं।'

'वह कोमल भी तो अब तक नहीं आई ?' इसी लड़ कहा।

'हाँ।'

'कहीं नरेन्द्र उसी के साथ न चला गया हो।'

'क्या ?' प्रिया ने चौंककर उसकी ओर देखा।

'सुना जाता है कि नरेन्द्र व कोमल मैरिज करने वाले हैं।'

'क्या यह बात नरेन्द्र ने बताई थी ?'

'नहीं। उसने अभी तक कुछ नहीं कहा। वैसे वह दोनों अधिक साथ-साथ ही देखे जाते हैं।'

'नहीं।' प्रिया को मानो आघात सा पहुंचा।

'तो फोन क्यों नहीं कर लेतीं।'

'पहले मैं नरेन्द्र को फोन करती हूँ।' वह बोली फिर अपनी सहे का हाथ पकड़कर भीतर चली गई। यहाँ मौजूद बाकी लोग गप्पों

इतने मगन थे कि किसी ने उसकी ओर कुछ ध्यान नहीं दिया। वह दोनों भीतर उस कमरे में पहुँचीं जहाँ फोन रखा था। प्रिया ने एक नम्बर डायल किया और प्रतीक्षा करने लगी।

'जरा रूम नम्बर फाइव से मिलायें।' आपरेटर की आवाज सुनकर वह बोली। फिर बड़ी देर तक सुनती रही।

'क्या घंटी बज रही है?' उसकी सहेली नें प्रश्न किया।

'हाँ, घंटी तो बज रही है मगर कोई उठा नहीं रहा। कदाचित वह अपने कमरे में नहीं है।' प्रिया बोली और कुछ देर और प्रतीक्षा करने के पश्चात् फोन रख दिया।

'अब तनिक कोमल को फोन मिलाना।'

'क्यों?' प्रिया ने कौतूहल भरे स्वर में कहा।

'अरी भोली, कोमल भी अपनी कोठी में है या नहीं।'

'वह न हुई तो?'

'तो वह नरेन्द्र के साथ है।'

'बकवास।'

'ठहर।' उसकी सहेली ने कहा और फिर रिसीवर उठाकर स्वयं नम्बर डायल करने लगी। शायद दूसरी ओर से फौरन किसी ने फोन उठा लिया। पूछा गया—

'कौन?'

'मैं कोमल की एक सहेली बोल रही हूँ। क्या कोमल वहाँ है?'

'जी नहीं।' दूसरी ओर से शायद कोई नौकर बोल रहा था।

'कहाँ गई है?'

'मि० पाटिल के मकान पर।'

'कब?'

'आधा घंटा हुआ।'

'आधा घंटा ।'

'जी हुजूर ।'

'क्या अपनी ही कार में गई हैं ?'

'जी हाँ ।'

'अकेली ही ।'

'जी नहीं ।'

'फिर किसके साथ हैं ?'

'नरेन्द्र साहब के साथ ।'

'क्या ?'

'जी हां, उन्हीं के संग गई हैं ।'

'नरेन्द्र साहब वहाँ कब आये थे ?'

'वह तो लंच के समय ही आ गये थे ।'

'लंच वहीं किया था ?'

'जी हाँ ।'

'अच्छा ।' उसने फोन रखकर एक गहरी साँस ली और अर्थपूर्ण दृष्टि से प्रिया की ओर देखा ।

'क्या समझीं ?'

'कुछ नहीं ।' प्रिया ने उदास स्वर में कहा जैसे वह सब कुछ समझ गई हो ।

'नरेन्द्र ने लंच भी वहीं किया था और आध घंटा पहले दोनों एक-साथ यहाँ के लिए चल पड़े हैं ।'

'किन्तु अब तक तो उन्हें यहाँ पहुँच जाना चाहिये था ।'

'जल्दी की आवश्यकता ही क्या है ?'

'तू कहना क्या चाहती है ?'

'नरेन्द्र कोमल का हो गया ।'

'म···मगर मुझमें कमी क्या है ?'

'प्रिया तू सुन्दर है···कोमल भी बड़ी हसीन है···तू दौलतमन्द है कोमल बहुत दौलतमन्द है। तेरे डैडी केवल मिनिस्टर हैं और कोमल का बाप एक बहुत बड़ा व्यापारी···धनाढ्य है।'

'शटअप!' प्रिया ने मन्द स्वर में कहा तथा बाहर की ओर देखने लगी। इतने में पोर्टिको में एक कार आकर रुकी।

'लो वह आ गये—जाओ उनका स्वागत करो।' उसकी सहेली ने कहा किन्तु प्रिया अपनी जगह से नहीं हिली बल्कि खिड़की में से झांक-कर ही नरेन्द्र व कोमल को कार में से निकलता देखती रही—दोनों बड़े प्रसन्न जान पड़ते थे। नरेन्द्र ने कोमल का हाथ पकड़कर कार से बाहर खींच लिया वह उससे लिपट सी गई। फिर वह दोनों उसी रास्ते पर चलने लगे जो उन्हें लान में पहुँचाता था।

'देख लिया?' प्रिया की सहेली ने कहा।

'कुछ भी हो।' प्रिया ने कुछ निर्णायत्मक भाव से कहा।

'क्या?'

'नरेन्द्र कोमल से शादी नहीं कर सकेगा।'

'तू हाथ मलती ही रह जायेगी।'

'मैं कोमल या फिर नरेन्द्र को ही कत्ल कर दूंगी।'

'मिनिस्टर की बेटी जो ठहरी।'

'शटअप!' प्रिया गुर्राई।

'पागल नहीं बन···तुझे लड़कों की क्या कमी है।'

'यह कमी की बात नहीं···प्रतिष्ठा की बात है।'

'लड़कियों की भी कोई इज्जत होती है।'

'क्या बकती है···तू!'

'प्रिया डार्लिंग···मोडर्न युग के चक्कर में आकर हम लड़कियों की इज्जत के परखच्चे उड़ चुके हैं।'

'तू बड़ी निर्लज्ज है।'

'यह भी वर्तमान प्रगति की कृपा है'''पश्चिम की शान है।'

'मूड ठीक नहीं है।' प्रिया बोली और लान की ओर चली।

'इस पार्टी पर रहम करना।' उसकी सहेली बोली।

'मैं इतनी कमीनी नहीं। समझी!' वह चिल्लाई।

'समझ गई'''' सहेली ने स्मित हास्य से कहा और प्रिया के पीछे चलने लगी। सारा लान तालियों की ध्वनि से गूँज रहा था।

नरेन्द्र अलग खड़ा हुआ मुस्करा रहा था तथा कोमल उसके खड़ी ताली बजा रही थी। वे सब अपनी-अपनी जगह खड़े थे। ता समाप्त होते ही प्रिया नरेन्द्र के पास गई और नकली मुस्कराहट के बोली—

'हैलो'''नरेन्द्र।'

'हैलो प्रिया डार्लिंग'''अब तक तुम कहां थीं?' नरेन्द्र उसका दबाते हुए बोला।

'मैं तुमको फोन करने को गई थी?'

'ओह'''

'तुम इतनी देर में कैसे आये।'

'कोमल के यहाँ पहुँच गया था वहाँ हम दोनों रमी खेलते रहे बस थोड़ी सी देर हो गई।'

'हालांकि तुम्हें पता था कि यहाँ सब तुम्हारी प्रतीक्षा कर होंगे।'

'आई एम सौरी डार्लिंग'''' वह बोला और उसकी वह लट आँख पर लटक रही थी हटा दी।

'अब पार्टी शुरू करो भई।' किसी ने ऊँचे स्वर में कहा।

'आप लोगों को यह पता ही है कि नरेन्द्र मेरा दोस्त है।' प्रिया बोली।' फबती कसी और कोमल जो उनके पीछे खड़ी उसे घूरकर देखने लगी।

'अच्छा... आप लोग यह भी समझ सकते हैं।' प्रिया ने झिझकते हुए स्वर में कहा—और अब कोमल कभी नरेन्द्र को देखती थी कभी प्रिया को।

'आप लोगों को ज्ञात ही है कि मिस्टर नरेन्द्र मिस्टर युनिवर्सिटी के बाद मिस्टर सिटी की प्रतियोगिता में भी प्रथम आये और अब भरत कुमार की प्रतियोगिता में भाग लेने जा रहे हैं। उनके शरीर को देखकर आप लोग भी अनुमान लगा सकते हैं कि वह 'भरत कुमार' प्रतियोगिता में भी प्रथम आयेंगे। आज की यह पार्टी मैंने मिस्टर नरेन्द्र की इस शानदार सफलता की खुशी में दी है। वह चुप हुई और सारा लान फिर तालियों से गूँज उठा।

'मैं मिस प्रिया का शुक्रिया अदा करता हूं।' नरेन्द्र बोला। फिर वे सब उस लम्बी-चौड़ी टेबिल की ओर बढ़े जहाँ मिठाईयाँ सजी हुई थीं।

'अरे वह हार।' किसी ने कहा। फिर एक लड़का एक हार लेकर नरेन्द्र की ओर दौड़ा और उसके गले में पहिना दिया। तत्पश्चात सब लोग खाने-पीने में लग गये। कोमल लड़कों-लड़कियों में मिल गई और प्रिया नरेन्द्र के आस-पास नाचती रही। फिर मौका पाकर वह नरेन्द्र से बोली—

'मैं तुमसे एक खास बात करना चाहती हूं।'

'अभी?'

'हाँ।'

'बोलो।'

'इधर आओ।' वह उससे कुछ अलग लेजाकर बोली।

'कोमल से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?'

'सम्बन्ध?' वह बौखला उठा। फिर कुछ देर पश्चात बोला—मैं क्या जवाब दूँ?'

'हकीकत बता दो।'

'कोई विशेष बात नहीं।'

'फिर वहाँ लंच कैसा था ?'

'उसने भी मेरी सफलता की खुशी में लंच दिया था। बस।'

'सुना है तुम उससे मैरिज करने वाले हो ?'

'मैरिज...?' वह फिर बौखलाया।

'हाँ, यह अफवाह काफी गर्म है।'

'प्रिया, तुम बड़ी शक्की स्वभाव की लड़की हो। अब तक तुम न जाने कितनी लड़कियों के बारे में कह चुकी हो कि मैं उनसे शादी करने वाला हूं, परन्तु मैं अब तक कुंवारा ही हूं।'

'कोमल की बात अलग है।'

'वह कैसे ?'

'वह सुन्दर भी है, धनवान भी।'

'यह तो मुझे भी पता है, और तुम्हारा मतलब है मुझे धन का लोभ है ?'

'हाँ !'

'प्रिया, क्या तुम्हें पता है कि तुम क्या कह रही हो ?'

'मैं सच कह रही हूं, और यह भी बताना चाहती हूं कि यदि तुमने उससे शादी की तो मेरा व कोमल का जो हश्र होगा वह तो होगा ही मगर मैं तुम्हें कत्ल भी कर दूँगी। याद रखना मैं मिनिस्टर की बेटी हूं।'

'शट-अप !' नरेन्द्र जोर से चिल्लाया।

'यू...शट-अप...!' प्रिया को भी क्रोध आ गया।

'मैं थप्पड़ मार दूँगा।' नरेन्द्र दांत किटकिटाकर बोला। वहां मौजूद सब लड़के लड़कियाँ सन्नाटे में आ गये। कोमल उनके पास आकर पूछने लगी—

'क्या बात है ?'

'तुम हमारे बीच में टाँग मत अड़ाओ।' प्रिया ने उसे बुरी तरह लताड़ दिया। कोमल के अतिरिक्त सब उसे साश्चर्य देखने लगे। कोमल कदाचित खून का घूंट पीकर रह गई थी।

'कोमल, यह हम दोनों को कत्ल करना चाहती है।' नरेन्द्र ने ऊँची आवाज में बताया इस प्रकार कि सब सुनलें।'

'कत्ल...!' सब लोगों में सनसनी दौड़ गई।

'क्यों ?' कोमल ने पूछा।

'यह इन्हीं से पूछो ?' नरेन्द्र ने कहा और कोमल के साथ ही सब लोग प्रिया की ओर देखने लगे। प्रिया ने कोई उत्तर नहीं दिया बल्कि दूसरी ओर देखने लगी। इतने में प्रिया की वही सहेली आई और उसे एक ओर लेजाकर कुछ समझाने लगी।

शनः-शनः माहौल पर वही शोखी आ गई। वैसे कोमल सावधान थी। नरेन्द्र मौन था और प्रिया भीतर ही भीतर जल-भुन रही थी। ठहाके उठने लगे थे।

'मि० नरेन्द्र।' प्रिया की सहेली ने नरेन्द्र के पास आकर कहा और नरेन्द्र उसकी ओर देखने लगा।

'प्रिया अपने किये पर लज्जित है।'

'कोई बात नहीं।'

'क्या आपको पता है कि मिठाई की टेबिल पर रखा हुआ गुलाब के फूलों का गुलदस्ता किसने रखा है।'

'प्रिया ने रखा होगा।'

'विचार सही है, तो उसे शायद यह भी मालूम होगा कि वह केवल आपके लिए हैं क्योंकि आपको गुलाब के फूल बड़े पसन्द हैं।'

'जी हाँ, गुलाब के फूल मुझे बेहद प्रिय हैं।'

'क्या आप प्रिया से अप्रसन्न हैं ?'

'नहीं तो।'

'प्रिया को इस बात का विश्वास दिलाने के लिए वह गुलदस्ता स्वीकार करिये।'

'क्या मतलब ?'

'प्रिया लज्जित है और सामने नहीं आ रही है। उसका कहना है यदि आपने गुलदस्ता स्वीकार कर लिया तो उसे विश्वास हो जायेगा कि आप अब भी उससे प्रेम करते हैं।'

'वह पगली है।' नरेन्द्र हंसा और उस टेबिल की ओर बढ़ा जिस पर गुलदस्ता रखा था। प्रिया की सहेली ने व्यंग्य भाव से मुस्कुराकर उसकी ओर देखा, फिर कोमल की ओर। जो अपनी किसी सहेली को अपनी बड़े नगीने वाली अंगूठी दिखा रही थी और उसकी सहेली बड़े ध्यान से अंगूठी को छू-छूकर देख रही थी। इसके पश्चात प्रिया की सहेली ने प्रिया की ओर देखा जो दूर खड़ी नरेन्द्र को देख रही थी। प्रिया की सहेली उसकी ओर बढ़ी और पास आकर बोली—

'सीधा हो गया।'

'क्या ?'

'वह तुझसे अब भी प्यार करता है।'

'हुम।' वह भीतर की ओर बढ़ी। उसकी सहेली उसके साथ थी। वह दोनों लान पार करके पिछले बरामदे में आ गये।

'क्या मुलाकात नहीं करेगी ?'

'नहीं।'

'क्यों ?'

'वह नाराज है।'

'पागल है तू, वह ठीक कहता था।'

'क्या ?'

'तुझे पगली बता रहा था।'

'सचमुच···मैं बेकार ही पागल हो गई थी।'

'मैं ऐसी चाल चलूँगी कि कोमल को पता पड़ जायेगा।'

'मेरा तो जी करता है कि चुड़ैल का गला दबा दूँ।' वह बोली और ठीक इसी समय लान में एक नारी चीत्कार सुनाई पड़ीं। दोनों चौंक कर लान की ओर देखने लगीं। एक लड़की मुँह फाड़े फिर से चीख रही थी। उसकी आँखों में आश्चर्य तथा भय भरा हुआ था।

इन दोनों की समझ में नहीं आया कि वह क्यों चिल्लाई थी। किन्तु लान में मौजूद सब लोगों का ध्यान उस लड़की की ओर खिंच गया और सब उसी ओर देखने लगे जिधर वह देख रही थी। साथ ही बहुत सी चीखें उठीं और वे सब एक ओर को भागे।

'क्या हुआ ?' प्रिया ने कहा।

'मेरा तो दिल धड़क रहा है।' उसकी सहेली बोली।

'नरेन्द्र···!' प्रिया का स्वर काँप गया—सहेली ने कुछ उत्तर न दिया।

'उसे कुछ हो गया ?' प्रिया पुनः बोली और उसी ओर भागी।

सब लोग मिठाई वाली टेबिल के गिर्द एकत्र हो गये थे—प्रिया ज्योंही वहाँ पहुंची, कोमल की हृदय विदारक चीख सुनाई पड़ी।

'नरेन्द्र···नरेन्द्र···यह तुझे क्या हो गया ?' वह बार बार कहती जाती थी और एकदम रोने लगी थी। प्रिया ने जब यह सुना तो उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा—तथा हाथ पांव निर्जीव से हो गये। वह चलने में लड़खड़ा रही थी और माथे पर ठडे पसीने की बूंदें उभर आई थीं।

जब वह बौखलाये हुए लोगों के बीच से निकलकर वहाँ आई तो उसकी चीख निकल गई। दोनों हाथ उसके चेहरे के सामने इस प्रकार आ गये मानों उसने अन्धेरे व एकान्त स्थान में भयानक चुड़ैल को देख लिया हो। फिर उसने विस्फारित नेत्रों से नरेन्द्र को देखा।

नरेन्द्र घास पर चित पड़ा हुआ था उसका एक हाथ सीने पर दूसरा

बाहर की ओर फैला हुआ था। पैर भी इधर-उधर फैल रहे थे। कोमल उसके गले से लिपटी सिसक-सिसक कर रो रही थी। प्रिया ने नरेन्द्र को देखा फिर वह बड़ी फुर्ती से भीतर की ओर भागी उसकी दिशा फोन की ओर थी···उसने अपने फैमली डाक्टर को फोन किया—फिर वापस आ गई। वह सचमुच बड़ी व्याकुल दिखाई दे रही थी—उसके हाव-भाव बता रहे थे कि उसका दिमाग काम नहीं कर रहा है।

'नरेन्द्र मर गया—नरेन्द्र मर गया···!' जब वह निकट पहुंची तो उसे सरसराते हुए अनेक स्वर सुनाई पड़े। पहिले वह ठिठकी, फिर आगे बढ़कर नरेन्द्र पर झुककर बोली—

'नहीं···नहीं···नरेन्द्र तुम मर नहीं सकते—तुम मर नहीं सकते।' स्वर ऐसा था जैसे वह पागल हो गई हो। सब लड़के-लड़कियाँ शांत खड़े हुए इनको देख रहे थे। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि उन्हें क्या करना चाहिए।

कुछ देर पश्चात डाक्टर आ गया तो लोग हिले और वहाँ से अलग अलग होने लगे। सबके मुँह पर हवाइयां उड़ रही थीं···लड़कियां तो काँपने तक लगी थीं। डाक्टर ने पहिले प्रिया को फिर कोमल को नरेन्द्र के ऊपर से अलग किया, फिर उसका निरीक्षण करने लगा। दस मिनिट तक डाक्टर ने नरेन्द्र का निरीक्षण किया और जब वह चुपचाप होकर खड़ा हो गया तो सब समझ गये कि वह क्या कहना चाहता है।

'डाक्टर साहब···प्लीज बताइये।' प्रिया ने डाक्टर का हाथ पकड़ कर कहा।

'मेरे साथ आओ।' डाक्टर ने कहा और कोठी की ओर चल पड़ा। प्रिया उसके साथ-साथ चल रही थी।

'मिस्टर पाटिल कहाँ हैं?' बरामदे में आकर डाक्टर ने पूछा।

'क्लब गये हैं।'

'फोन करके उन्हें तुरन्त बुलाओ।'

'क्यों ?'

'नरेन्द्र की हत्या की गई है।'

'हत्या ! क्या वह मुर्दा है ?'

'हाँ...' डाक्टर ने गम्भीर स्वर में कहा और प्रिया ने अपनी उंगलियाँ दांतों में दवा लीं। वह अपनी चीखों को रोककर सिसक उठी ।

'क्या तुम्हें क्लब का फोन नम्बर मालूम है ?'

'हाँ !' वह बड़ी कठिनाई से बोली और फोन नम्बर बता दिया। डाक्टर उसे वहीं छोड़ फोन वाले कमरे में चला गया।

मिस्टर पाटिल को फोन पर सारे हालात बताकर उसने फोन रख दिया। अब वह वापस लौट रहा था। प्रिया बरामदे से निकलकर फिर नरेन्द्र की लाश के पास आकर कभी उसे देखती थी और कभी कोमल को जो पास खड़ी हुई अब भी रो रही थी।

'डाक्टर ने क्या बताया ?' प्रिया की सहेली ने सहमे हुए स्वर में पूछा।

'क...कत्ल ?'

'कत्ल...' एक संग बहुत सी चीखें निकलीं और फिर सबकी दृष्टि प्रिया की ओर उठ गईं। वे लोग उसे घृणा भरी तथा प्रश्नसूचक दृष्टि से देख रहे थे। जैसे सबको विश्वास था कि कातिल वही है...प्रिया ने उन सबकी ओर देखा, फिर उन नजरों की ताब न लाकर चिल्लाकर कहा—

'तुम लोग मुझे इस प्रकार क्यों देख रहे हो ?'

'तुमने नरेन्द्र की हत्या कर डाली। किसी लड़के ने सरसराते हुए स्वर में कहा।

'मैंने हत्या नहीं की।' वह चिल्लाई, फिर अपनी कोठी की ओर भागी किन्तु बरामदे में ही वह पाटिल साहब से टकरा गई। उन्हें देख कर उसने बौखलाये हुये स्वर में कहा—

'डैडी···मैंने कत्ल नहीं किया—मैंने कत्ल नहीं किया···' फिर वह अपने पिता के सीने से लिपटकर सिसक-सिसक कर रो उठी। मिस्टर पाटिल थोड़ी देर तक सीधे खड़े रहे फिर उसे पुचकारते हुए बोले—

'घबराओ नहीं···सब ठीक हो जायेगा···' यह कहकर उन्होंने प्रिया को अलग किया तथा इन्स्पेक्टर शर्मा को संकेत किया। इन्स्पेक्टर शर्मा अपनी पूरी फोर्स समेत सीधा चला आया था। कदाचित उसे मिस्टर पाटिल ने ही वहाँ पहुँचने का आदेश दिया था।

'तुम कार्यवाही आरम्भ करो।' मिस्टर पाटिल ने शर्मा से कहा और वह आगे बढ़ा। वह सीधा लाश के समीप आया तथा दूसरे लोगों से बोला—

'आप लोग दूर हो जायें।' सब दूर खड़े हो गये।

पहिले उसने लाश का निरीक्षण किया फिर समीप पड़े गुलदस्ते को देखने लगा जो नरेन्द्र से कुछ समीप ही पड़ा था। इसके पश्चात वह सीधा खड़ा होकर पाटिल से सम्बोधित हुआ—वह प्रिया को साथ लिए निकट आ गये थे।

'सर···दो बातें हो सकती हैं, एक तो यह कि या तो नरेन्द्र साहब ने स्वयं आत्मघात किया है···या उनकी हत्या की गई है।'

यह सुनकर गोविन्द पाटिल साहब के चेहरे पर कई सलवटें उभर आईं···फिर वह गम्भीर स्वर में बोले—

'इन्स्पेक्टर शर्मा···तुम अपनी कार्यवाही शुरू करो—यदि यह कत्ल है तो कातिल को फांसी मिलनी ही चाहिये।'

'बहुत अच्छा जनाब।'

'तुम्हारी मदद के लिए मैं एस० पी० साहब को भी बुलाये लेता हूं।'

'जी···!' शर्मा चौंका मगर उसमें इतना साहस कहाँ था कि मिनिस्टर साहब से कुछ कह सके, फिर उन्होंने कुछ कहने का मौका भी नहीं

दिया, क्योंकि वह प्रिया को वहीं छोड़कर अपनी कोठी की ओर चले गये।

'मैं आप सबके बयान लेना चाहता हूं।' शर्मा बोला—'इसलिये आप सब कृपया एक ओर को हो जायें—मैं बारी-बारी से सबको बुलाऊँगा।' इतना कह कर उसने सिपाहियों को संकेत किया और उन्होंने सब लोगों को एक ओर कर दिया। वह स्वयं एक कुर्सी टेबिल लेकर एक ओर बैठ गया। और एक व्यक्ति को आने का संकेत किया। यह एक लड़का था।

इस लड़के ने अपने बयान में सब कुछ बताते हुए यह भी बताया कि प्रिया ने नरेन्द्र को कत्ल की धमकी दी थी। उसने यह भी बताया कि नरेन्द्र पहिले प्रिया से प्रेम करता था किन्तु कुछ दिनों से वह कोमल के साथ देखा जा रहा था और यह अफवाह बड़ी गर्म थी कि शीघ्र ही वे दोनों शादी करने वाले हैं, कोमल के डैडी राजी थे।

इसके पश्चात शर्मा ने दूसरों के बयान भी लिए तो उसकी खोपड़ी नाच उठी। क्योंकि सबके बयान एक जैसे थे। जिससे प्रकट था कि प्रिया ने जलन के कारण नरेन्द्र की हत्या कर डाली। वह जानता था कि प्रिया मंत्री महोदय की लड़की है और मंत्री महोदय अपनी पुरानी गुंडागर्दी तथा दादागिरी के लिए प्रसिद्ध थे। साथ ही उसे यह भी पता था कि वह उनके एक संकेत मात्र पर इन्स्पेक्टर से सिपाही बनाया जा सकता था। इसलिए सब सोच विचार कर उसकी खोपड़ी जोर-जोर से नाच उठी। किन्तु सबके बयान लिखना अनिवार्य था।

अभी बयान समाप्त नहीं हुए थे कि इलाके के एस० पी० के आने की सूचना मिली तो शर्मा बौखला गया। मगर जब उसे पता चला कि एस० पी० साहब मिनिस्टर साहब के साथ बातों में व्यस्त हैं तो उसे कुछ इतमीनान सा हुआ। इतने में एक नौकर ने कहा—

'एस० पी० महोदय ने वे सारे बयान मँगाये हैं जो लिखे जा चुके हैं ?'

'लो···' शर्मा ने जल्दी से बयान लिखे कागज उसकी ओर बढ़ाये और जब नौकर चला गया तो शाँति की सांस ली। इसके उपरांत कोमल की बारी आई तो शर्मा ने उससे पूछना शुरू किया।

'आप मिस्टर नरेन्द्र को कब से जानती हैं ?'

'तीन वर्ष से।'

'आपका उससे क्या सम्बन्ध था ?'

'वह मेरे मंगेतर थे।'

'यह शादी आपके डैडी की सहमति से होने वाली थी ?'

'बिल्कुल।'

'आपके और बहिन भाई हैं।'

'जी नहीं···मैं अकेली हूं।'

'आज नरेन्द्र आपसे कब मिले ?'

'क्योंकि क़ल ही वह मिस्टर सिटी की प्रतियोगिता जीते थे इसलिए मैंने इस खुशी में उन्हें लन्च पर बुलाया था।'

'आपके डैडी भी थे।'

'जी हाँ···हालांकि वह लंच घर पर नहीं लेते मगर आज इस विशेष अवसर पर वह विशेष रूप से आये थे।'

'अच्छा···क्या मिस्टर नरेन्द्र कुछ परेशान से थे।'

'जी नहीं···वह बड़े प्रसन्न थे और सारी दोपहर मुझे बताते रहे कि वह भारत कुमार की प्रतियोगिता जीतकर फिल्मों में काम करेंगे। मेरे डैडी उसके लिए एक ऐसी फिल्म बनाने को तैयार हो गये जिसमें वह हीरो का रोल अदा करता।'

'क्या आप भी इस फिल्म में काम करतीं ?'

'शायद !'

'क्या आपको विदित था कि प्रिया भी नरेन्द्र में रुचि लेती है ?'

'जी हाँ···मगर नरेन्द्र उसे केवल दोस्त समझता था।'

'क्या प्रिया उससे शादी करना चाहती थी ?'

'शायद।'

'आज क्या हुआ ?' शर्मा ने पूछा और उत्तर में कोमल ने वही सब कुछ बता दिया जो हुआ था···यह बयान दूसरे बयानों जैसा ही था।

'क्या आप कोई ऐसा कारण बता सकती हैं जिससे नरेन्द्र ने आत्म हत्या की हो ?'

नहीं···जहाँ तक मेरा विचार है नरेन्द इतना निश्चिन्त व प्रसन्न था कि ऐसे व्यक्ति कठिनाई से ही मिल सकेंगे। उसे जीवन से बेहद प्रेम था और वह जीवित तथा खुशी-खुशी जीवित रहना चाहता था।'

'वह कहाँ रहता था ?'

'ताराबाई होस्टल के कमरा नम्बर पाँच में रहता था।'

'वह कहाँ का निवासी था ?'

'वह गोलादर के जागीरदार का बेटा था और यहाँ कालेज में शिक्षा प्राप्त करने आया था। आजकल एम. ए. फायनल का विद्यार्थी था।

'क्या कभी आप उसके माता-पिता से भी मिलीं ?'

'जी हाँ···एक बार वह शहर आये थे तो मैं उनसे मिली थी। वे उसी होटल में ठहरे थे।'

'आपका विचार है कि नरेंद्र आत्महत्या नहीं कर सकता ?'

'जी हाँ।'

'इसका मतलब तो यह हुआ कि आप सोच रही हैं कि नरेन्द्र की हत्या की गई है।'

'जी···यह पता चलाना कानून का काम है।' वह गम्भीरता से

बोली।

'आप जा सकती हैं।' शर्मा बोला और फिर प्रिया की उस सहे[illegible]
की बारी आई जो इस खेल में काफी भाग ले चुकी थी।

'आप भी अपना बयान दे डालिये।' शर्मा ने कहा और वह अट[illegible]
अटक कर सब कुछ बताने लगी।

'आपका मतलब है कि प्रिया ने नरेन्द्र से कहा था कि अगर [illegible]
कोमल से शादी की तो वह दोनों को समाप्त कर देगी।' उसकी [illegible]
सुनकर शर्मा ने प्रश्न किया।

'जी हां···हकीकत यही है।'

'आप जानती हैं कि आप क्या कह रही हैं!'

'मैं सच बोल रही हूं।'

'अच्छा फिर?'

"फिर प्रिया शीघ्र ही संयत हो गई। यह उसकी आदत थी कि [illegible]
गुस्सा होकर शीघ्र ही संयत हो जाती थी। वह नरेन्द्र को बहुत प्या[र]
करती थी। नरेन्द्र ने प्रतियोगिता जीती थी और इसी उपलक्ष में प्रि[या]
ने कालेज के लड़के लड़कियों को यह पार्टी दी थी। उसे कदापि गुस्[सा]
न आता मगर किसी ने उससे कहा था कि नरेन्द्र कोमल से मैरिज क[र]
रहा है। फिर नरेन्द्र समय पर नहीं आया। उसे शायद यह व्यंग्य बु[रा]
लगा और उसने कोमल को फोन किया तो ज्ञात हुआ कि नरेन्द्र तं[ब]
के टाइम से उसके साथ है और इस समय कार में घूम रहा है। अत[:]
उसे क्रोध आ गया। कदाचित वहां आने के पश्चात नरेन्द्र ने भी कुछ
बेरुखी प्रकट की और इस बात ने आग पर घी का काम किया फि[र]
उन दोनों में झड़प हो गई। सबको प्रिया का व्यवहार अखरा किन्तु
किसी ने कुछ न कहा।

स्वभावत: प्रिया संयत हो गई और अपने किये पर शर्मिन्दा होने
लगी। किन्तु अब उसमें इतना साहस न था कि भरी मेहफिल में नरेन्द्र

से माफी माँग सके। फिर उसे इस बात का भी ज्ञान नहीं था कि नरेन्द्र ने उसके रवैये का क्या प्रभाव लिया है अतएव उसने मुझे बुलाकर कहा कि मैं नरेन्द्र से कहूं कि वह उसे क्षमा कर दे और यदि उसने दिल साफ कर लिया है तो गुलाब का गुलदस्ता लेकर सूँघे।'

'इस बात का मतलब?' शर्मा चौंका।

'नरेन्द्र को लाल गुलाब के फूल बड़े प्रिय थे। जब इस रंग के गुलाब देखता तो किलकारी मारकर हँसता तथा बच्चों की भांति उछल उछलकर प्रसन्न होता था। प्रिया को उसकी यह हँसी बहुत भली लगती थी। पहिले उसके उद्यान में गुलाव की दो-चार झाड़ियाँ थी मगर नरेन्द्र की पसन्द ज्ञात होने के उपरान्त उसने लाल गुलाबों की कई क्यारियाँ लगवा दी थीं और वह दोनों उन क्यारियों के बीच बड़ी-बड़ी देर तक बैठे रहा करते थे।'

'आप व्यर्थ ही बात को लम्बा किये जा रही हैं-' शर्मा उसके विस्तृत बयान से तंग आकर बोला।

'नहीं...मैं गुलाब के दस्ते की बात बता रही हूं क्योंकि इस बात का साफ हो जाना जरूरी है।'

'क्यों?'

'क्योंकि इससे मेरा भी सम्बन्ध है?'

'आपका सम्बन्ध?'

'हाँ...मैंने नरेन्द्र से कहा था कि वह गुलाब के फूलों के इस दस्ते को सूँघकर यह जाहिर करे कि उसे प्रिया से कोई शिकायत नहीं है।'

'आपका विचार है कि वह फूलों के सूँघने से मरा?'

'यह मैं नहीं जानती...मगर वह फूल सूँघने के बाद ही गिरा था।'

'आपको कैसे पता?'

'मैं देख रही थी कि वह फूल सूँघता है या नहीं?'

'अच्छा फिर ?'

'मैं पहले बता रही थी कि नरेन्द्र को लाल गुलाब के फूल बड़े पसंद थे और यह गुलदस्ता प्रिया ने अपने बाग के फूलों द्वारा स्वयं अपने हाथ से केवल नरेन्द्र के लिए बनाया था। उसका विचार था कि वह गुलदस्ता देखते ही उसे उठाकर चूम लेगा, सीने से लगा लेगा। इससे प्रिया को आत्मिक हर्ष होता।'

'अर्थात् प्रिया ने आपसे कहा था कि आप नरेन्द्र से गुलदस्ता सूंघने को कहिये ?'

'जी हां।'

'किन्तु आप क्यों चिंतित थीं ?'

'इसलिए कि अब जबकि यह बात बताई जा चुकी है कि नरेन्द्र को गुलदस्ते की ओर मैंने भेजा था। यदि प्रिया इस बात से मना कर दे कि उसने मुझसे कहा था कि मैं नरेन्द्र को गुलदस्ते की ओर भेजूं तो मेरी पोजीशन बड़ी सन्देहजनक हो सकती है और मैं मंत्री महोदय की बेटी नहीं कि बच सकूं।' यह बात उसने व्यंग्य से कही और शर्मा अप्रिय सा मुंह बनाकर रह गया। फिर वह उठ गई और शर्मा ने प्रिया को बुलाया। प्रिया काफी उदास थी उसका सुन्दर मुखड़ा सफेद पड़ गया था और शरीर कांप रहा था।

'मिस प्रिया···क्या आपने नरेन्द्र को कत्ल की धमकी दी थी?'

'जी···मुझे कुछ याद नहीं।'

'क्या आपने अपनी सहेली मिस आराधना से कहा था कि वह नरेन्द्र से गुलाब का गुलदस्ता सूंघने के लिए कहे।' उसकी सहेली का नाम आराधना था।

'मुझे कुछ नहीं पता ?'

'क्या आप बता सकती हैं कि नरेन्द्र की हत्या किसने की है!'

'नहीं।'

'क्या नरेन्द्र ने आत्महत्या की ?'

'शायद ।'

'बयानों के प्रकाश में जाहिर हो जाता है कि हत्या आपने की है ।'

'मैंने हत्या नहीं की···!' वह दोनों मुट्ठियां टेबिल पर मारकर चिल्लाई और शर्मा फिर बौखला उठा। इतने में एक नौकर ने आकर शर्मा से कहा—

'जनाब···आपको एस. पी. साहब व साहब बुलाते हैं।' साहब से उसका अभिप्राय मन्त्री महोदय से था। शर्मा सब कागज समेटकर उसके साथ कोठी की ओर चल दिया। सिपाही अब भी वहीं खड़े थे और उन की मौजूदगी ने एक लाश के साथ इन सबको सन्नाटे की स्थिति में कर दिया था।

भीतर प्रवेश करके शर्मा ने एस. पी. तथा मंत्री महोदय को सैल्यूट झाड़ा और सीधा तनकर खड़ा हो गया। वे दोनों दो आराम कुर्सियों पर बिराजे हुए थे।

'बैठो इन्स्पैक्टर शर्मा।' मि० गोविन्द पाटिल ने कहा और शर्मा कुछ झिझकता सा एक स्टूल पर बैठ गया।

'दिखाओ।' एस. पी. ने कागजों की ओर संकेत किया। शर्मा ने लिखित बयानों के बाकी कागजात भी उन्हें दे दिये। एस. पी. बयानों को पढ़ने लगा और मि० पाटिल शर्मा से बोले—

'शर्मा साहब···मेरा विचार है आप बड़ी मेहनत से काम कर रहे हैं।'

'ज···जी···हां···।' शर्मा बौखला गया। वह कहता भी क्या फिर वह स्टूल पर इतनी जल्दी-जल्दी पहलू बदलने लगा कि स्टूल उलट पड़ा और वह गुवार खाकर फुर्ती से खड़ा हो गया। अब वह उन दोनों को इस प्रकार देख रहा था मानो चोरी करते हुए पकड़ा गया हो। मारे झेंप तथा शर्म के मुँह लाल हो रहा था। एस. पी. ने उसे घूरा और

मि० पाटिल केवल मुस्कुरा दिये।

'कुर्सी पर बैठो।' गोविन्द पाटिल ने कहा और शर्मा जल्दी से कुर्सी पर बैठ गया। पाटिल साहब ने फिर कहा—

'आप काफी मेहनत से काम करते हैं···कितने वर्ष हो गये इन्स्पैक्टरी करते हुए आपको?'

'सात वर्ष।'

'तब तो आपको अब तक तरक्की मिल जानी चाहिये थी।'

'जी, जी हां।'

'कौन सा नगर पसन्द है आपको?'

'अपना नगर किसे पसन्द नहीं होता।'

'गुड···।' पाटिल साहब ने जेब से डायरी निकाली और कलम लिखने लगे।

'इन्स्पैक्टर शर्मा···तरक्की व बदली।' फिर डायरी जेब में रख ली। तरक्की का नाम सुनते ही शर्मा भीतर ही भीतर इतना प्रसन्न हुआ कि उसका दिल धड़कने लगा। रक्त का संचालन तीव्र हो उठा। उसके स्नायु काबू में न रहे सो वह कुर्सी सहित कांप रहा था।

'इस केस के सम्बन्ध में तुम्हारा क्या विचार है?' पाटिल साहब ने शर्मा से पूछा।

'स···स ··सर·····सर···।' वह हकला गया।

'बोलो बोलो···तुम कानून के रक्षक जो हो।'

'ज···जी ··मगर···मगर।'

'इन्स्पैक्टर शर्मा···बोलो!'

'ज ··प्रिया···!'

'प्रिया को क्या हुआ?'

'बयानों के अनुसार प्रकट होता है कि वह प्रिया···प्रिया कातिल है।'

'बकवास !' मि० पाटिल ने कहा फिर जोर से हँस पड़े। उनको हँसता देखकर शर्मा की जान में जान आई। वह अपने को सम्हालने व पसीना पोंछने की चेष्टा करने लगा।

'प्रिया मेरी बच्ची है, मैं उसे इससे अधिक जानता हूं। वह तो चींटी तक नहीं मार सकती।'

'जी हाँ···जी हाँ।'

'उसने नरेन्द्र की हत्या नहीं की।'

'आप ठीक कहते हैं सरकार···वैसे आराधना भी संदेहजनक है।'

'इन्स्पैक्टर शर्मा—संदेहजनक कोई नहीं। नरेन्द्र ने आत्महत्या की है।' गोविन्द पाटिल ने कहा और जेब से डायरी निकालकर देखते हुए बोले।

'तुमने अपने शहर का नाम तो बताया ही नहीं।'

'रामपुर···सर !'

'ओह···नवाबों का नगर था।' मि० पाटिल बोले फिर रामपुर शहर का नाम डायरी में लिख लिया।

'सर···यह आत्महत्या का केस तो लगता नहीं है।' शर्मा फिर सहमकर बोला।

'यह सरासर आत्महत्या का केस है।' अचानक एस. पी. ने काग़जों का अध्ययन छोड़कर निर्णयात्मक स्वर में कहा। शर्मा चौंककर सविस्मय उसकी ओर देखने लगा।

'मगर सर हालात···?'

'शर्मा···क्या तुम मुझसे अधिक तजुर्बेकार हो ?' एस. पी. ने गुर्राकर कहा।

'न···नहीं सर !'

'क्या तुम मुझसे अधिक जानते हो ?'

'नहीं जनाब !'

'मैंने इन सारे बयानों को ध्यान से पढ़ा है । प्रत्येक बयान से स्पष्ट है कि नरेन्द्र ने आत्महत्या की है ।'

'बिल्कुल'''आप कहते हो तो की होगी ।'

'होगी नहीं'''की है'''सुनो—नरेन्द्र एक आवारा लड़का था । उसे प्रिया से प्रेम था न किसी से, बल्कि एक कोठे वाली औरत से उसके सम्बन्ध थे । वह अपने जीवन से तंग आ गया था बस उसने आत्महत्या कर ली और इस ढंग से की कि इस हंगामे में पुलिस का उसके विगत जीवन की ओर ध्यान ही नहीं गया । वह मर गया । बस'''इससे अधिक कुछ नहीं है । तुम स्वयं ही सोचो प्रिया उसकी हत्या क्यों करती ?'

'एस० पी० चुप हुआ और शर्मा गर्दन हिलाकर बोला—

'आप ठीक कहते हैं साहब !'

'यह तो आत्महत्या का केस है श्रीमान ।' फिर एस० पी० ने मि० गोविन्द पाटिल से कहा—

'मुझे तो पहिले ही पता था । वह अब तक प्रिया से काफी रुपया ले चुका था । मुझें यह भी ज्ञात है कि वह तंग आ गया था । उसने मुझसे भी कई बार कहा था कि वह आत्महत्या कर लेगा । मैंने सदा उसे समझाया । मैं चाहता था कि वह कुछ बन जाये'''मगर'''आखिर उसने आत्महत्या कर ही ली ।'

'जी हाँ ।' शर्मा बड़े जोर से बोला ।

'यह कागजात आप अपने पास रखें ।' एस० पी० ने बयानों के सारे कागज गोविंद पाटिल को दे दिये और उठकर शर्मा से बोला—

"मेरे साथ आओ ।' शर्मा उसके साथ बिल्कुल मूर्खों जैसा चल पड़ा ।

'लाश को उठवा दो ।' एस० पी० ने कहा ।

'जी हां'''मैंने गाड़ी मंगवाई है ।'

'मिनिस्टर महोदय तुम पर काफी मेहरबान हैं।'

'यह सब आपकी कृपा है सर।'

'यह तुम्हारी अपनी योग्यता है...यह आत्महत्या का केस है।'

'मैं समझ रहा हूं सर।'

'कल मंत्री महोदय ने तुम्हें चाय पर बुलाया है।'

'धन्यवाद!'

'क्या तुम सब कुछ अकेले ही सम्हाल सकते हो?'

'जी हां।'

'अच्छा तो फिर मैं चलता हूं।' एस० पी० ने शेकहैंड के लिये हाथ बढ़ाया। शर्मा ने उनसे हाथ मिलाया। उसे एस० पी० के रवैये पर कौतूहल था। उसका पिछला अनुभव बड़ा कसैला तथा कड़वा था। एस० पी० चला गया और शर्मा लाश को वहाँ से उठवाने की व्यवस्था करने लगा।

गाड़ी आ गई थी। जब लाश हटाई जा चुकी और सारे लड़के-लड़कियां भी चले गये तो कोमल प्रिया के निकट आकर गम्भीर स्वर में बोली—

'यदि तुम्हें हत्या ही करनी थी तो मेरी हत्या करतीं। उस बेचारे को कत्ल क्यों किया?' इतना कहते-कहते उसकी आवाज रुंध गई। प्रिया ने भयभीत आँखों से उसे देखा फिर बोली—

'मैं भगवान की सौगन्ध खाकर कहती हूं मैंने उसे कत्ल नहीं किया?'

'यदि तुम मुझे पहले ही यह बता देतीं तो मैं तुम्हारे मार्ग से स्वयं ही हट जाती।'

'मैं कहती हूं मैंने उसे कत्ल नहीं किया।'

'वैसे इस बात का विश्वास कर लो कि नरेन्द्र तुमसे प्रेम कभी नहीं करता था।' वह तुमको दोस्त से अधिक कुछ नहीं समझता था, कुछ

नहीं।'

'तुम्हें कुछ नहीं पता कोमल तुम्हें कुछ नहीं पता।'

'नरेन्द्र ने मुझे सब कुछ बताया था।'

'सब कुछ ?'

'हाँ तुम्हारे व अपने सम्बन्धों के बारे में।'

'क्या उसने यह बताया था कि वह पिछली गर्मियों में मेरे साथ नैनीताल गया था ?'

'नहीं।'

'क्या उसने यह भी बताया था कि होटल ग्रांड में उसने एक कमरा स्थाई रूप से किराये पर ले रखा था ?'

'नहीं···यह नहीं बताया।'

'उसने यह भी बताया था क्या कि हम सूरज कुंड के अन्त में बनी झोपड़ियों में से एक झोंपड़ी में जाया करते थे ?'

'नहीं।'

'उसने यह भी नहीं बताया होगा कि वह मुझसे शादी करने का वादा कर चुका था।'

'क्या उसने सचमुच कभी ऐसा वादा किया था ?'

'सौ बार···कोमल सैंकड़ों बार।'

'तो क्या···तो क्या वह मुझे धोका दे रहा था ?'

'कोमल कदाचित तुम्हें यह नहीं पता कि मुझसे पहिले उसके संबंध कोठे पर बैठने वाली एक औरत से भी थे। मैंने बड़ी कठिनाई से उसे रास्ते से हटाया था।'

'कोठे पर बैठने वाली औरत···रंडी !'

'हाँ।'

'यह झूठ है।'

'यह सच है मगर इस वक्त मैं इसे साबित नहीं कर सकती और

शायद अब इसकी आवश्यकता भी नहीं है।'

'प्रिया तुम झूठ बोल रही हो।'

'पुलिस को विश्वास है कि नरेन्द्र ने आत्महत्या की है।'

'आत्महत्या ?' कोमल सोच में पड़ गई।

इतने में गोविंद पाटिल वहाँ आ गये।'

'क्या हाल है कोमल ?'

'ठीक हूं।'

'भीतर आओ···।' उन्होंने कहा। दोनों उनके साथ भीतर की ओर बढ़ीं। गोविंद पाटिल बोले—

'उन हालात का पता चल गया है जिनमें फँसकर नरेन्द्र ने इस कापाई ढंग से आत्महत्या कर ली। वह अव्वल दर्जे का फ्राड था।'

उन दोनों ने कोई उत्तर नहीं दिया। फिर कोमल कोठी से बाहर निकल गई। गोविंद पाटिल प्रिया को समझाने लगे। कुछ देर पश्चात शर्मा भीतर आकर बोला—

'लाश जा चुकी है सर।'

'गुड··· इन्स्पैक्टर शर्मा तुमने बड़ी होशियारी से काम किया।'

धन्यवाद श्रीमान !'

'कल तुम चाय पर अवश्य आना।'

'धन्यवाद श्रीमान !'

'और देखो अखबार वालों से सावधान रहना, कहीं वह व्यर्थ ही इस केस में तुमको उलझाने की कोशिश न करें।'

'मैं उनको हवा तक नहीं आने दूंगा।'

'गुड···गुडलक !' गोविंद पाटिल ने कहा तथा शर्मा बाहर निकल गया। वह शर्मा को जाता हुआ देखते रहे।

पन्द्रह

इंस्पेक्टर शर्मा जब मि० गोविंद पाटिल की शानदार कोठी से बाहर निकला तो अपनी तरक्की के सपने देख रहा था। वह जानता था कि जब वह अपने ही नगर में डी० एस० पी० होकर जायेगा तो लोग उसे चौंक-चौंककर किस प्रकार देखेंगे। आश्चर्य चकित होंगे, मैं उन सबको जेल में ठूंस दूंगा। इतना सोचकर वह मुस्कराया। और फिर हवा में मुक्का लहराकर बोला—

'हूं···मैं डी० एस० पी० हूं।'

'जी!' अचानक एक आवाज सुनकर वह चौंका तथा देखने लगा। उसके सामने एक आदमी खड़ा था। शर्मा ने बुरा-सा मुंह बनाकर उसे घूरा फिर उसे स्मरण हुआ कि यह आदमी भी पार्टी में था। मगर इसके साथ ही उसे अपनी खोपड़ी में सनसनाहट सी होती जान पड़ी क्योंकि उसे याद आया कि इस आदमी ने अपना बयान नहीं दिया था।

'तुमने अपना बयान नहीं दिया?' आखिर शर्मा गुर्राते हुए स्वर में बोला—

'ज···ज···जी हां···।'

'क्यों···?'

'असल···असल में मैं घबरा रहा हूं।' वह आदमी घबराकर बोला।

'क्यों···?'

'बात ही कुछ ऐसी है।'

'क्या बात है ?'

'मुझे नरेन्द्र के बारे में आवश्यकता से अधिक जानकारी है ।'

'क्या···?'

'जी हाँ···।'

'मगर तुमने अपना बयान क्यों नहीं दिया ?' शर्मा ने दाँत पीसकर कहा ।

'मैं डर रहा था ।'

'किससे ?'

'कातिल से···।'

'कातिल···?'

'जी हाँ, वही जिसने नरेन्द्र की हत्या की है ।'

'सुनो मिस्टर···नरेन्द्र की हत्या नहीं की गई बल्कि उसने आत्म-हत्या की है ।'

'यह आपको कैसे मालूम ?'

'मैं पुलिस इंस्पेक्टर हूं, जासूस हूं···समझे, डी० एस० पी० होने वाला हूं ।'

'तब तो बधाई हो ।' उस आदमी ने कहा और अपना हाथ शेकहैंड के लिए बढ़ा दिया । शर्मा ने भी हाथ बढ़ाया और फिर उसके मुँह पर आड़ी-तिरछी रेखायें उभर आईं क्योंकि मर्द ने उसका बुरी तरह पंजा दबा दिया था । और शर्मा की बाँह में करंट सा दौड़ गया ।

'छोड़ो यार ।' वह झेंपकर बोला और आदमी ने पूरा जोर लगाने के पश्चात हाथ छोड़ दिया । शर्मा जोर-जोर से हाथ झटक रहा था साथ ही मारे क्रोध के उसका मुँह लाल हो उठा ।

'तुम अत्यन्त बदतमीज आदमी हो ।' वह गुर्राया ।

'मैंने क्या किया श्रीमान ।'

'मेरा पंजा तोड़कर रख दिया ।'

'नहीं तो।' उस आदमी ने विस्मय प्रकट किया।

'शट-अप···जंगली!'

'मेरा नाम सतीश है।' वह आदमी बोला—'और मैं मिस्टर नरेन्द्र की मौत के सम्बन्ध में न केवल अपना बयान देना बल्कि अनेक नई बातें भी बताना चाहता हूं।'

'तो बताओ।'

'यहां नहीं, कहीं अलग चलकर।'

'क्यों?'

'क्या पता कातिल को मुझ पर सन्देह हो जाये और वह बड़ी सुन्दरता से मेरा भी सफाया कर डाले।'

'अच्छा आओ मेरी जीप में।' शर्मा ने कहा और दोनों जीप में बैठ गये। शर्मा स्वयं जीप चलाने लगा।

'आप कहां ले जा रहे हैं?'

'थाने! उससे अच्छा कौन-सा स्थान हो सकता है?'

'मैं सोचता था कि किसी होटल में चलें डिनर भी हो जायेगा, डिनर का टाइम भी हो गया है।'

'नहीं, मैं तुम्हें थाने ही ले चलूंगा ताकि यदि तुमने कोई गलत बयान दिया तो हवालात में बन्द कर सकूं।'

'तो फिर मैं अपने अंकल आई० जी० को फोन कर दूं नहीं तो वह फिक्र करेंगे। आजकल मैं उन्हीं के पास ठहरा हूं।'

'आई० जी साहब···?' शर्मा बड़े जोर से चौंका।

'मेरे अंकल हैं।'

'ओह···।' शर्मा बोखला गया।

'वैसे मैं भी तुम्हारे काम से प्रभावित हुआ हूं। सिफारिश करूंगा कि तुमको डी० एस० पी० बना दिया जाये।'

'धन्यवाद जनाब···वाई दा वे आपको कौन-सा होटल पसन्द है

मि० सतीश !' शर्मा नर्म पड़ गया।

'गुडलक ठीक रहेगा।'

'यदि डिनर मेरी ओर से हो तो आपको कोई आपत्ति तो नहीं ?'

'नहीं आपत्ति तो कोई नहीं, मगर मैंने पहिले प्रस्ताव किया था।'

'आपकी मर्जी।'

फिर दोनों मौन हो गये, और जीप होटल गुडलक के सामने रुक गई। उतरकर दोनों भीतर पहुँचे। यहाँ आकर सतीश ने काउंटर पर खड़े-खड़े ही एक नम्बर मिलाया, फिर कुछ देर प्रतीक्षा करने के पश्चात बोला—

'अच्छा तुम हो, देखो मैं सतीश बोल रहा हूं। आई० जी० साहब से बोलो कि मुझे कुछ बात करनी है।'

वह प्रतीक्षा करने लगा और शर्मा का चेहरा फीका पड़ गया। वह घबरा रहा था कि कहीं उसकी शिकायत न हो जाये, इसलिए वह और पास आकर काँपती आवाज में बोला—

'सतीश साहब ! मेरी शिकायत न करना।'

'कौन अंकल।' वह बोला—'जी मैं सतीश बोल रहा हूं, आज मैं घर पर डिनर नहीं लूंगा शायद मैं देर से भी लौटूं। जी हाँ मैं इंस्पेक्टर शर्मा के साथ हूं, जी हां बड़े ईमानदार व चतुर इंस्पेक्टर हैं। जी हाँ केस सुलझा लिया। आत्महत्या···अंकल प्लीज मैं एक बात कहूं, हां··· असल में इंस्पेक्टर शर्मा मेरे बड़े अच्छे मित्र हैं। जी हाँ मैं उन्हें काफी समय से जानता हूं। प्लीज, अंकल उनका प्रमोशन···तरक्की···क्या कहा कर, कर देंगे। ओह थैंक यू अंकल···यू आर ग्रेट···जी···? जी हाँ—मैं उनसे कह दूंगा कि वह बंगले पर आपसे मिल लें। आप निश्चित रहें मैं इस बात को राज ही रखूंगा। जी ? जी हाँ···दस-ग्यारह बजे तक पहुँच जाऊँगा···बाई···बाई···।' उसने रिसीवर रख दिया।

शर्मा का दिल जोरों से धड़क रहा था। चेहरा लाल पड़ गया था हाथ-पांव कांपने लगे। यह सब तरक्की के सपने देखने की खुशी में था।

'आओ···इधर आओ।' वह प्रकम्पित स्वर में सतीश से बोला और उसे केबिन की ओर ले जाने लगा। दोनों केबिन में आ गये तो सतीश बैठ गया। और शर्मा बौखलाकर अपने आप वेटर की ओर दौड़ा और उसे लम्बे-चौड़े खाने का आर्डर देने लगा। इसके पश्चात वह आकर बैठा और बोला—

'मैं किस मुँह से आपको धन्यवाद कहूं।'

'इसकी कोई जरूरत नहीं।' सतीश ने कहा।

'आप नरेन्द्र की हत्या के बारे में कुछ बता रहे थे ?'

'हाँ···नरेन्द्र ने आत्महत्या नहीं की अपितु उसे कत्ल किया गया है। मैं वहीं था, मैंने उसे गौर से देखा था कि वह फूल सूंघते ही मर गया।'

'किन्तु इस प्रकार वह आत्महत्या भी कर सकता था ?'

'कोई भी व्यक्ति इस तरह आत्महत्या नहीं करता।' सतीश बोला—'यहां कुछ बातें सामने आती हैं। एक तो यह कि प्रिया ने पहिले से फूलों में सूंघने वाला विष लगा रखा था। दूसरे यह कि उसकी सहेली ने विष लगाया हो या फिर भीड़ में से किसी ने भी। क्योंकि वह गुलदस्ता उस टेबिल पर रखा था जिस पर मिठाईयां सजी थीं और हम सब एक साथ मिठाई लेने गये थे। उस समय कोई भी गुलदस्ते पर जहर लगा सकता था।'

'मगर कौन···?'

'प्रिया···नम्बर एक की कातिल हो सकती है। प्रिया की सहेली आराधना या फिर और कोई। आराधना भी नरेन्द्र को काफी प्रेम भरी नजरों से ताक रही थी।'

'मानलो यदि इनमें से कोई भी कातिल नहीं है तो फिर ?'

'तब'''फिर भी नरेन्द्र ने आत्महत्या नहीं की।'

'इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता सतीश बाबू ! वह मर गया और बस—।'

इतने में वेटर व्यंजनों से भरी थाली लेकर आया और जब वह पूरी टेबिल विविध भोजनों की प्लेटों से भरकर चला गया तो सतीश बोला—

'इतना ढेर सा खाना कौन खायेगा ?'

'यह तो कुछ भी नहीं है जनाब।' शर्मा खुशामद भरे स्वर में बोला।

'पुलिस वालों के लिए कुछ नहीं होगा किंतु मेरे लिए तो अधिक है।'

'अब तो आ गया खाना ही पड़ेगा।' शर्मा ने कहा फिर तब तक अपना हाथ रोके रहा जब तक सतीश ने खाना शुरू नहीं किया। फिर वह भी जुट गया। खाने के समय उनके बीच साधारण बातचीत हुई। शर्मा इतना प्रसन्न था कि जरा-जरा सी बात पर जोर-जोर से हंस पड़ता था।

जब खाना समाप्ति पर आया तो सतीश बोला—

'मैं यह बताना भूल गया कि कल तुम अंकल की कोठी पर चले जाना।'

'क्यों'''?' शर्मा ने जान बूझकर पूछा।

'तरक्की की बात करनी है न, उन्होंने कल किसी टाइम बुलाया है'''।'

'धन्यवाद मैं पहुँच जाऊँगा।'

'यह याद रखना कि अंकल तनिक खुशामद पसंद हैं, दूसरे यह कि इस बात की किसी को भनक तक न लगे।'

'मैं मूर्ख नहीं हूं सतीश साहब !' शर्मा अकड़कर बोला।

'मानलो कि यदि नरेन्द्र ने आत्महत्या की है तो क्यों की ?' सतीश ने फिर शोशा छोड़ा।

'परिस्थितियों से तंग आकर।'

'इसका सुबूत'''जहाँ तक मेरा विचार है तो कोमल इतनी मोटी मुर्गी थी जो उसके संकेत मात्र पर सोने के अंडे दे सकती थी।'

'छोड़िये साहब !'

'और यदि उसे कत्ल किया गया है तो किसने किया व क्यों ?'

'मैं पता चलाऊँगा।'

'मेरे पास एक उत्तर है।' सतीश बोला—'प्रिया नरेन्द्र से प्यार करती थी किन्तु नरेन्द्र कोमल से न केवल प्रेम करने लगा था बल्कि यह अफवाह तक जोरों पर थी कि वह उससे विवाह भी कर रहा है। क्या प्यार की आग में जलकर और अन्धी होकर प्रिया ने ही तो उसकी हत्या नहीं कर डाली ?'

'सतीश साहब ! प्रिया एक मिनिस्टर की बेटी है। वह ऐसा नहीं कर सकती।'

'क्यों'''क्या मिनिस्टरों के बेटे-बेटियाँ आकाश से उतरते हैं।'

'आप यही समझ लें।'

'इंस्पेक्टर ! आप कदाचित पिछली शताब्दी के व्यक्ति हैं।'

'यह भी ठीक है।'

'मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूं कि प्रिया कातिल है।'

'मानलो वह कातिल है भी तो क्या हो सकता है ?'

'फांसी हो सकती है।'

'सतीश बाबू, अभी आप विद्यार्थी हैं, अनुभवहीन है, मन्त्रियों के बेटे-बेटियों को फांसी नहीं होती।'

'क्यों क्या फांसी का फंदा उनके लिए नहीं बनाया गया ?'

'नहीं, वह अपराधियों, कातिलों के लिए बनाया गया है।'

'मगर वह शायद न अपराध करते हैं न कत्ल।'

'हाँ, यही समझलो, उनका अपराध भी एक राजनैतिक अदा होता है और राजनैतिक अदा को क्षमा ही कर दिया जाता है।'

'किन्तु यह एक गणतंत्र देश है। यहाँ की अदालतें एक खुदमुख्तार संस्था हैं जिस पर राजनीति, मिनिस्टरों और लीडरों का प्रभाव नहीं होता।'

'होता है या नहीं इस विषय में मैं कुछ नहीं कहूंगा मगर यह जरूर कहूंगा कि देश का संविधान, पालिसी और ढंग गणतंत्री होने से कुछ नहीं होता। इसके लिए नैतिकता का ऊँचा होना तथा दिलों का गणतंत्रीय होना अनिवार्य है। बदकिस्मती से हमारे चरित्र इतने ऊँचे नहीं हैं कि हम गणतंत्र के हकदार हो सकें। इसलिये हम लोकतंत्र की तरक्की के लिए नहीं बल्कि बिगाड़ के लिये प्रयोग करते हैं। इसलिए हमारे दिमाग गणतंत्र या लोकतंत्र विहीन विचारों से भरे हुए हैं।'

'तुम ठीक कहते हो इंस्पेक्टर शर्मा!' सतीश उसे ध्यान से देखता हुआ बोला।

'हमारे देश का न्याय जगत विख्यात है। अगर बात न्यायालय पहुंचे तब न्याय हो। मान लिया कि प्रिया ही कातिल है तो विधानानुसार उसे कानून के हवाले करना चाहिए। मगर मु े विश्वास है कि केस अदालत तक पहुँचते-पहुंचते ही समाप्त हो जायेगा।'

'यदि तुम प्रयत्न करो तो यह केस सही रूप में अदालत तक पहुँच सकता है।'

'क्या तुम मेरी मट्टी पलीद करना चाहते हो?'

'क्या मतलब?'

'मंत्री महोदय के एक संकेत मात्र पर मुझे बिना पट्टी का सिपाही बनाया जा सकता है।'

'तुम डरते हो इंस्पेक्टर !'

'सभी डरते हैं।'

'तुम्हारे भीतर साहस नहीं है।'

'यह साहस की बात नहीं समूचा सामाजिक ढांचा ही ऐसा है।'

'कमाल है।' सतीश हाथ मलके रह गया और शर्मा क्योंकि बात खत्म करना चाहता था सो उसने वेटर को बिल लाने के लिए कहा। वेटर बिल ले आया और शर्मा को भारी बिल चुकाने के लिए अपना पर्स खाली करना पड़ा। फिर वे बाहर आ गये।

'आइये मैं आपको बंगले तक छोड़ आऊँ।'

'नहीं शर्मा साहब मेरी गर्ल फ्रैंड क्लब में मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी।' वह हंसकर बोला और शर्मा ने हाथ हिलाकर अपनी जीप की ओर जाते हुए कहा—

'गुडलक, मिस्टर सतीश !'

'थैंक यू शर्मा ! कल अंकल से अवश्य मिल लेना।'

अब शर्मा की जीप काफी दूर निकल गई तो वह बड़ी जोर से हंसा और बोला—

'बेटा शर्मा ! तुम मास्टर ब्रेन को पहिचान लेने के पश्चात उसे तगड़ा डिनर नहीं खिलाते। और अब कल आई. जी. की कोठी पर तुम्हारी जो दशा होगी वह तुम्हें आजीवन याद रहेगी। मास्टर ब्रेन जिन्दाबाद !' उसने अपना कंधा अपने हाथ से थपथपाया क्योंकि वह स्वयं मास्टर ब्रेन था।

बाहर आकर उसने एक टैक्सी को संकेत दिया। टैक्सी में बैठकर उसने ड्राइवर को एक पता बताया और टैक्सी चलने लगी।

जब टैक्सी गन्तव्य स्थान पर पहुँचकर रुकी तो किराया चुकाकर वह पैदल ही चल पड़ा। कुछ देर पश्चात वह एक कोठी में प्रविष्ठ हुआ। यह उसकी अपनी कोठी थी जिसे वह कभी-कभी उपयोग में लाया

करता था। यहाँ आकर उसने अपना कालेज के विद्यार्थियों वाला वेश उतारा और तंग वस्त्र पहिने। साथ ही अपनी मास्टर ब्रेन वाली पेटी कसी और बाहर आकर गैरेज से कार निकाली।

फिर उसकी कार सड़क पर वेग से दौड़ रही थी। कुछ देर पश्चात् उसने कार को सड़क किनारे झुके हुए पेड़ के नीचे रोका और उतर गया। चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था। वह पैदल ही एक ओर चलने लगा। दस मिनट पश्चात् वह तारावाई होस्टल के सामने मौजूद था।

कई कमरों पर आधारित इस दो मंजिली बिल्डिंग के कई कमरों की कई खिड़कियों में अंधेरा था। कहीं-कहीं प्रकाश की झलक मिलती थी। वह आगे बढ़ता हुआ पिछले भाग की दीवार के पास पहुंचा और एक पाइप द्वारा ऊपर चढ़ने लगा। यह पाइप छत तक चला गया था। मास्टर ब्रेन छत पर आ गया। यहाँ उसे छत के किनारे-किनारे एक ऐसी जगह आना पड़ा जहाँ निचले कमरे की खिड़की थी। वह इस खिड़की द्वारा भीतर कूदना चाहता था किन्तु खिड़की तक उतरना कठिन था। सो उसने जेब से एक डोरी निकाली उसे पानी की टंकी के पाइप से बाँधकर दूसरा छोर खिड़की की ओर लटकाया और उसके सहारे उतर गया। खिड़की खुली हुई थी इसलिये उसे भीतर कूदने में कोई कठिनाई नहीं हुई। किन्तु भीतर कूदते ही एक आदमी भूखे भेड़िये के समान उस पर झपटा···बस फिर दोनों एक दूसरे से गुंथ पड़े। इसके साथ ही कमरे में प्रकाश फैल गया। मास्टर ब्रेन ने अपने ऊपर होने वाले प्रहार को बचाकर देखा कि वह एक लड़की थी। उसका हाथ अब भी स्विच पर था। वह उसे आश्चर्य से देख रही थी। उससे भिड़ जाने वाला व्यक्ति लम्बा चौड़ा और काफी तगड़ा आदमी था। उसकी चौड़ी-चौड़ी कलाइयाँ तथा मोटी-मोटी उंगलियाँ बता रही थीं कि वह एक ही घूंसे में आदमी की खोपड़ी पिलपिली कर सकता है। इसलिये मास्टर ब्रेन काफी सावधान था। दोनों में घूंसेबाजी होने लगी। मास्टर ब्रेन

जो प्रहार करता वह तो प्रहार था ही मगर उस व्यक्ति का जो घूंसा मास्टर ब्रेन पर पड़ा वह लोहे के हथौड़े की भांति था।

'यह कौन है लकी ?' लड़की ने पूछा जो स्विच बोर्ड के निकट खड़ी सकौतूहल मास्टर ब्रेन को देख रही थी।

'कोई भी हो डार्लिंग। मैं अभी इसकी हड्डी पसली ठिकाने लगाये देता हूं।' उस आदमी ने कहा उसका नाम लकी था या फिर यह उसका प्यार का नाम भी हो सकता था।

लकी ने किसी सांड की तरह मास्टर ब्रेन के ठोकर मारी और वह दीवार से टकराया। मास्टर ब्रेन की खोपड़ी चकरा गई...शरीर झनझना उठा। मगर उसके होश ठिकाने थे। वह जानता था कि लकी का दूसरा प्रहार क्या होगा। और फिर वही हुआ जो वह चाहता था अर्थात लकी ने अपने सिर की टक्कर इस प्रकार मारनी चाही कि मास्टर ब्रेन का पेट फट जाये। मगर वह सरक गया और लकी का सिर बड़े जोर से दीवार से टकराया। सिर का टकराना था कि वह बड़ी जोर से चिंघाड़कर सिर दबाये हुए खड़ा हुआ तथा चकराने लगा। बस इसी समय मास्टर ब्रेन ने उस पर घूंसों की वर्षा कर डाली। लकी इधर से उधर लड़खड़ा रहा था। प्रत्येक घूंसे पर उसके कंठ से एक विचित्र-सी गड़गड़ाहट निकलती जैसे उसके सीने में कोई समुद्र चाय के पानी की तरह खौल उठा हो। मास्टर ब्रेन ने उसे नचा डाला।

लड़की अब भी स्विच के पास खड़ी थी। उसे इतना अचम्भा था कि वह मुंह बाये रह गई थी। उसके चेहरे पर भय छाने लगा था। शायद जो कुछ भी हो रहा था वह उसकी आशा के बिल्कुल विपरीत हो रहा था।

'लकी ! क्या हो गया तुमको।' आखिर वह चिल्लाई और लकी को यह आवाज सुनकर मानो होश आ गया। उसने अपना शरीर मिट्टी में लोटने वाले उस सांड की तरह हिलाया जो शरीर पर से धूल झाड़ता

है। फिर हलक से गुर्राता हुआ भयानक स्वर निकाला और दोनों हाथ फैलाकर मास्टर ब्रेन की ओर पागल हाथी की तरह बढ़ा। उसका गाल...गाल के ऊपर तक उभरी हुई हड्डी पर से फट गया था तथा होंठ पर दायीं ओर गोश्त लटक रहा था। कनपटी पर बहने वाला रक्त बता रहा था कि उसका सिर ऊपर से जख्मी हुआ है। इस हालत ने उसे एक भयानक शैतान बना डाला।

उसे देखकर मास्टर ब्रेन पीछे को हटने लगा... उसका विचार था कि वह फिर उसे एक बार दीवार वाली चोट पहुँचायेगा। किन्तु इस बार लकी ने एक ओर दांव मारा, और बड़ी सुन्दर झुकाई देकर उसे कंधे पर उठा लिया। मास्टर ब्रेन को लगा कि वह किसी देव के कँधे पर सवार है। लकी ने उसे घुमाया और धड़ाम से फर्श पर दे मारा। मगर मास्टर ब्रेन तो जमनास्टिक का विशेषज्ञ था उसने अपने शरीर को लचीला करके ऐसी एक करवट ली कि रबर के पुतले की भाँति उछलकर खड़ा हो गया। लकी को कदाचित इस बात पर हैरत थी सो वह कुछ पल तक ठगा सा रह गया। इसी बीच मास्टर ब्रेन ने उसे बड़ी फुर्ती से अपनी कमर पर लादकर फर्श पर दे पटका। लकी की डकार-सी निकल गई और वह उठने की चेष्टाएँ करने लगा। मास्टर ब्रेन ने उसके गुर्दों की जगह दो-चार इस प्रकार की ठोकरें जड़ीं कि वह आहत गैंडे के समान करवटें लेने लगा। उसके कण्ठ से भयानक आवाजें निकल रही थीं। तीव्र वेदना के बाद भी वह फिर खड़ा हो गया किन्तु मास्टर ब्रेन ने उसे बड़ी सफाई से अपने हाथों पर सिर से ऊँचा उठाकर नचा दिया।

उस लड़की ने जब यह देखा तो मारे अचम्भे तथा डर के उसकी चीख निकल गई और उस वक्त जबकि मास्टर ब्रेन ने लकी को फर्श पर फेंका तो चिल्लाकर गहरी-गहरी साँसें होने लगा। अब शायद उसमें उठने तक की ताकत नहीं थी।

'श···श···शूट !' आखिर वह पीड़ा में डूबे स्वर में बोला और लड़की ने रिवाल्वर निकालने के लिये गरेबान में हाथ डाला तो मास्टर ब्रेन ने चीते की तरह उस पर छलांग लगाई। लड़की उसे इस प्रकार अपने ऊपर आता देख बड़ी जोर से चिल्लाई और भागने का प्रयत्न करने लगी, मगर मास्टर ब्रेन के हाथ में उसकी कलाई थी। एक ही झटके में लड़की गगनभेदी चीख मारती हुई दूर फर्श पर गिरी और रिवाल्वर भी उसके हाथ से निकल गया। उसका घुटना बुरी तरह घायल हो गया था और वह अपनी टाँग तक हिलाने में बड़ा कष्ट अनुभव कर रही थी।

यह संयोग ही था कि लड़की का रिवाल्वर लकी के पास गिरा। उसने रिवाल्वर झपटा और फुर्ती से मास्टर ब्रेन को निशाना बनाकर बोला—

'अपने हाथ ऊपर उठालो···वर्ना मैं शूट कर डालूँगा।'

'क्या तुम मेरे हाथों से मरना ही चाहते हो।' मास्टर ब्रेन ने कहा।

'अपने हाथ ऊपर उठालो।' वह बोला और विवशतः मास्टर ब्रेन ने अपने हाथ ऊपर उठाकर कमरे पर एक उचटती-सी दृष्टि डाली··· इस लड़ाई ने कमरे का दृश्य ही बदल डाला था, मगर फिर भी बिल्कुल स्पष्ट दीख रहा था कि उन दोनों ने कमरे में एक-एक इंच की तलाशी ले डाली है। यह भी स्पष्ट था कि वे दोनों तलाशी लेने में दक्ष हैं··· मास्टर ब्रेन को अपनी पीठ पर सरसराहट-सी अनुभव हुई तथा उसने सामने लगे चित्र के काँच पर लड़की की छाया देखी। वह एक छोटा-सा खंजर लिये उसके पीछे आ गई थी। कदाचित वह एक ही बार में उसका काम तमाम करना चाहती थी।

'तुम कौन हो ?' लकी ने पूछा।

'क्या तुम मेरा नाम सुन सकोगे ?' मास्टर ब्रेन ने पूछा।

'तुम ऐसे कौन अफलातून के बच्चे हो।'

'लड़कियाँ मुझे प्रिंस आफ नाइट व आदमी मुझे मास्टर ब्रेन कहते हैं।'

'तुम...!' लकी ने विस्मय से कहा—'ठीक इसी समय भागते हुए पैरों की बाहर से आहट सुनाई पड़ी। कम से कम मास्टर ब्रेन समझ गया कि हो न हो यह रात की गश्ती पुलिस के सिपाही हैं जो कदाचित चीखें सुनकर उधर आ निकले हैं। इसके साथ ही दरवाजा भड़भड़ाने की आवाज भी आई।

'दरवाजा खोलो।' बाहर से कोई भारी स्वर में कह रहा था। यह सब खामोश खड़े रह गये। बाहर से दरवाजा भड़भड़ाया जा रहा था। अब इन लोगों ने कोई उत्तर न दिया तो मास्टर ब्रेन ने ऊँचे स्वर में कहा—

'दरवाजा तोड़ डालो।' अगले ही क्षण दरवाजे पर भारी बूटों की ठोकरें पड़ने लगीं। वह जानता था कि दरवाजा अधिक देर तक टिका नहीं रह सकता। उधर इस बात का एहसास लकी को भी हुआ तथा उसने लड़की को संकेत किया। लड़की ने चाकू वाला अपना हाथ उठाया किन्तु मास्टर ब्रेन रिवाल्वर की परवाह किये बिना बड़ी फुर्ती से घूमा तथा लड़की की कलाई पकड़ ऐसा झटका दिया कि वह पलक झपकते में ही सामने थी। बौखलाहट में लकी ने जो फायर किया तो गोली लड़की की रीढ़ की हड्डी तोड़ती हुई निकल गई। उसकी चीखों से कमरा गूँज उठा और उधर किवाड़ टूट रहे थे।

मास्टर ब्रेन ने पूरी शक्ति से लड़की को लकी पर ढकेला और आप खिड़की की ओर भागा क्योंकि दरवाजा टूट चुका था, तथा गश्ती पुलिस के सिपाही भीतर घुस पड़े थे। उधर बौखलाकर लकी ने एक फायर और किया तो एक सिपाही घायल हो गया। मास्टर ब्रेन ने खिड़की पर पहुंचते ही अपनी रस्सी पकड़ी और लटककर बन्दरों की

तरह छत पर चढ़ गया। उसके पास इतना समय नहीं था कि रस्सी को खोल सके सो उसे वहीं छोड़ वह उस पाइप तक पहुँचा जिससे वह छत पर चढ़ा था। फिर वह पाइप द्वारा बड़ी तेजी से नीचे उतर रहा था। उतरते वक्त उसने रिवाल्वर के फायर की ध्वनि के साथ बड़ी जोर की गड़गड़ाहट का शब्द सुना। फिर चीख सुनाई दी। वह समझ गया कि लकी ने या तो स्वयं गोली मारकर आत्महत्या कर ली या किसी सिपाही ने उसे शूट कर डाला है वैसे यह चीख लकी की हो।

मास्टर ब्रेन नीचे उतरा और फिर बड़ी तेजी से अपनी कार की ओर भागता चला गया। साथ ही उसे खेद भी था कि वह उस कमरे में पहुंचकर भी उसकी तलाशी नहीं ले सका।

सोलह

प्रातःकाल जब समाचार पत्र 'दोस्त' का अंक यथा समय लोगों के हाथों में नहीं पहुंचा तो उनका माथा ठनक उठा। क्योंकि वे जानते थे कि आज मास्टर ब्रेन की ओर से अवश्य कोई-न-कोई सनसनीपूर्ण लेख प्रकाशित होगा। सो उस अखबार की बड़ी तेजी से प्रतीक्षा की जा रही थी।

लगभग दस बजे हाकर 'दोस्त' की प्रतियां लिये हुए सारे नगर में चिल्ला रहे थे।

'मिस्टर सिटी श्री नरेन्द्र जी की सनसनीपूर्ण मौत। मास्टर ब्रेन क्या कहता है।' बस अखबार बिकने लगे। एक घंटे के भीतर-भीतर हाकरों के हाथ बिल्कुल खाली हो गये।

मि० गोविंद पाटिल ने जब अखबार देखा तो उनके माथे पर सलवटें उभर आईं और वह उसे उठाकर इस बयान को रुचिपूर्वक पढ़ने लगे जहां पर लिखा था—

'मि० गोविंद पाटिल की कोठी के पिछले लान में नरेन्द्र, जो सिटी कालेज में एम० ए० का छात्र भी था, के 'मिस्टर सिटी' चुने जाने पर श्री गोविन्द पाटिल की बड़ी पुत्री मिस प्रिया कुमारी पाटिल है।' छात्र-छात्राओं को एक पार्टी दी थी।

कालेज और इस पार्टी में एक लड़की मिस कोमल के संग आया था। कोमल शहर के रईस की इकलौती लड़की है और फिर नरेन्द्र अचानक ही मर गया। इन्स्पेक्टर शर्मा की तथाकथित पड़ताल का यह निष्कर्ष है कि नरेन्द्र ने आत्महत्या की है। किन्तु उसने आत्महत्या क्यों की इसका उनके पास कोई उत्तर नहीं है।'

मैंने इस विषय में अपने अनुसार जो छानबीन की है उससे पता चलता है कि मि० नरेन्द्र ने आत्महत्या नहीं की और न ही उसकी मौत स्वाभाविक है। बल्कि उसकी हत्या की गई है। विष गुलाब के उस गुलदस्ते में था जो केवल नरेन्द्र के लिये तैयार किया गया था। स्वभावानुसार नरेन्द्र ने फूलों को सूंघा और सूंघते ही गिरकर मर गया।

इससे पूर्व श्री गोविंद पाटिल की बेटी मिस प्रिया कुमारी पाटिल उसे कत्ल कर देने की धमकी दे चुकी थी तथा उनकी एक सहेली मिस आराधना का कहना है कि मिस प्रिया ने उससे कहा था कि वह मि० नरेन्द्र को फूलों का गुलदस्ता सूंघने के लिये कहे, क्योंकि नरेन्द्र से वह स्वयं नाराज थीं।

मैंने सारी स्थिति का बड़े ध्यान से अध्ययन किया और इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि नरेन्द्र की हत्या की गई है। कातिल कौन है, इसका पता लगाना पुलिस का काम है। वैसे कुछ नेतागण तथा जिम्मेवार

अधिकारी इसे आत्महत्या का केस बताकर इस केस को रफा-दफा करने तथा कातिल को बचाने का प्रयास कर रहे हैं। यदि ऐसा हुआ तो मैं पूरी तरह से मैदान में आऊंगा। पुलिस को सूचना के लिए केवल इतना निवेदन कर दूं कि नरेन्द्र का विगत जीवन बिल्कुल साफ नहीं था। वह मुजरिमों के बीच घिरा हुआ था। वह मुजरिमों में कैसे घिर गया यह एक अलग कहानी है जो समय रहते आपके सामने अवश्य आयेगी, किन्तु नरेन्द्र का विगत जीवन भी उसकी हत्या का ... की बन सकता था।

—फकत, आप सबका, अपना, मास्टर ब्रेन।

'ईडियट!' गोविंद पाटिल गुर्राकर बोले और प्रिया जो भीतर आ रही थी पूछने लगी—

'क्या बात है डैडी?'

'मास्टर ब्रेन!' मि० पाटिल ने झल्लाकर उत्तर दिया।

'क्या पकड़ा गया?'

'पकड़ा ही तो नहीं जाता कमबख्त।'

'मगर बात क्या है आखिर!'

'सब कुछ चौपट होता जान पड़ता है।'

'मगर क्यों?'

'लो पढ़ लो।' उसने अखबार प्रिया के हाथ में दे दिया और वह अखबार का वही लेख पढ़ने लगी। मारे डर तथा विस्मय के उसका रंग सफेद पड़ गया था। पैर लड़खड़ाने लगे थे।

'प्रिया, एक बात सच-सच बता?' गोविंद पाटिल ने उसे देखते हुए पूछा।

'क्या तूने नरेन्द्र की हत्या की है?'

'न···नहीं!'

'फिर किसने की?'

'म...म...मुझे नहीं पता।'

'अच्छा मैं देखूंगा। अभी तक मास्टर ब्रेन का पाला ऐसे वैसे अपराधियों से ही पड़ा होगा। राजनैतिक अपराधियों से नहीं पड़ा। मैं उसे छटी का दूध याद करा दूं तो मेरा नाम भी गोविंद पाटिल नहीं।'

'डैडी, मास्टर ब्रेन से टकराना अपने लिए संकट खड़ा करना कालेज के...'

'तुम चुप रहो श्री। अपने कमरे में जाओ और खबरदार कमरे से बाहर मत निकलना। तुमने मेरी पोजीशन अत्यधिक खराब कर डाली है। इन बातों का प्रभाव आगामी इलैक्शन पर भी पड़ेगा और ध्यान रखना यदि मैं दुबारा चुनाव लड़कर मंत्री बना तो तुम्हें कौड़ियों के मोल भी कोई नहीं पूछेगा।'

श्रिया ने कोई उत्तर नहीं दिया बल्कि वापस चली गई। गो। पाटिल ने एस० पी० का फोन मिलाया और जब एस० पी० स्वयं फोन पर आया तो बोले—

'आपने अखबार 'दोस्त' का अंक तो पढ़ लिया होगा।'

'हां।'

'यह मास्टर ब्रेन को सब कुछ ज्ञात कैसे हो गया ?'

'पता नहीं।'

'फिर अब तुम क्या कर रहे हो ?'

'मैं प्रयत्नशील रहूंगा कि वह कुछ न कर सके।'

'मगर कैसे ?'

'इसके बारे में क्या कह सकता हूं।'

'मास्टर ब्रेन के लेख में कहाँ तक सच्चाई है ?'

'मेरे विचार से शत-प्रतिशत सत्यता है।'

'तो फिर तुम एक काम करो।'

'कहिये ।'

'मास्टर ब्रेन ने नरेन्द्र के गत जीवन को अपराधी जीवन बताकर लिखा है कि यह भी उसकी मौत का कारण बन सकता है। तुम लोग भी बस यही साबित कर सकते हो ।'

'जी हाँ, मैं भी इसी नुकते पर सोच रहा हूं ।'

'मैं आई. जी. को भी फोन करता हूं ।' गोविंद पाटिल ने फोन बंद करके फिर आई. जी. को फोन किया । इन दोनों के बीच भी इसी प्रकार की बातें होती रहीं कि गोविंद पाटिल ने बीच में यह कहा—

'मेरा विचार है कि इंस्पेक्टर शर्मा एकदम मूढ़ है । क्या यह संभव नहीं कि मास्टर ब्रेन ने उसे रिश्वत देकर सब कुछ उगलवा लिया हो ।'

'हो सकता है ।' आई. जी. ने कहा—'और यह भी हो सकता है शर्मा नहीं स्वयं मास्टर ब्रेन हो ।' आई. जी. की बात सुनकर गोविंद पाटिल जोर से चौंका—

'यह भी हो सकता है वर्ना उसे यह बातें इतने विस्तार से कैसे ज्ञात होतीं ।'

फिर इनके बीच यह तय पाया कि वह फोन के बजाये अपने सामने बात करें ताकि कोई इस रहस्य को सुन न सके ।

'मैं वहीं आ रहा हूं ।' गोविंद पाटिल बोला तथा फोन रख दिया फिर तैयार होकर शोफर से गाड़ी निकालने को कहा । कुछ देर पश्चात उसकी गाड़ी आई० जी० की कोठी की ओर भागी जा रही थी ।

आई० जी० बरामदे में ही उनकी प्रतीक्षा कर रहा था । जब गोविंद पाटिल वहाँ पहुँचा तो वह उसे भीतर ले गये । समस्त दरवाजे बन्द कर दिये गये । फिर उनके बीच बातों का सिलसिला शुरू हुआ ही था कि फोन की घंटी बजी तथा स्वयं आई० जी० ने फोन उठाकर कहा—

'हैलो…!' और फिर वह सुनने लगे । मारे विस्मय के उनकी आंखें

फैल गई । और जब वह बात कर चुके तो गोविंद पाटिल ने पूछा—

'क्या बात है ?'

'मास्टर ब्रेन इंस्पेक्टर शर्मा के भेष में इधर आ रहा है ।'

'फोन करने वाला कौन था ?'

'पुलिस का एक मुखबिर ।'

'अब तो पुलिस बुलाकर उसे गिरफ्तार करने का प्रबन्ध करो ।'

'हाँ ।' आई० जी० ने कहा और फोन पर एक नम्बर मिलाया । जब लाइन मिल गई तो निर्देश देने लगा । फिर बाहर आकर दरबान से कहा—

'यदि इंस्पेक्टर शर्मा आये तो उसे भीतर आने देना ।'

तत्पश्चात उनकी मीटिंग प्रारम्भ हो गई ।

कुछ देर पश्चात इंस्पेक्टर शर्मा भीतर आया तो दरबान ने उससे कहा—

'साहब, आप ही की प्रतीक्षा कर रहे हैं और मुझसे कह गये हैं कि यदि इंस्पेक्टर शर्मा आयें तो उन्हें भीतर भेज दूं ।'

'क्या सच ?' इंस्पेक्टर शर्मा फूल गया ।'

'भला मुझे झूठ बोलने की क्या जरूरत है ।'

'भीतर और कौन है ?'

'मंत्री महोदय गोविंद पाटिल भी हैं ।'

'फिर तो दोस्त समझो कि मेरी तरक्की हो गई ।'

'क्या तरक्की की बात है ?' दरबान ने पूछा ।

'हाँ तुम नहीं समझ सकते बड़े लोगों की बात है तुम मेरे आने की उन्हें सूचना दो ।' दरबान ने भीतर जाकर सूचना दी फिर बाहर आकर उसे भीतर जाने का इशारा किया । डरता-डरता शर्मा भीतर पहुंचा । वहाँ दोनों उसे खा जाने वाली नजरों से घूर रहे थे ।

'कैसे आये ?' आई० जी० ने नियंत्रण करते हुए पूछा ।

'वह सर ! आपसे तो पहिले ही बात हो चुकी है। आपको तो ज्ञात ही है कि मैं सीनियर आदमी हूं। मगर अब से पहिले आप जैसे मेहरबान आफिसर नहीं थे सो मैं इंस्पेक्टर ... स्पेक्टर ही रह गया। आपकी दया हो गई तो मेरा प्रमोशन हो सकता है।' वह झिझक-झिझक कर बोला। और दोनों उसे घूरते रहे। कुछ देर पश्चात आई जी. ने अपना हाथ जेब से बाहर निकाला और गुर्राते हुए स्वर में बोला—

'अगर तुमने कोई भी गलत पग उठाया तो मैं शूट कर दूंगा।' उसके हाथ में रिवाल्वर था।

'ज'''ज'''मगर वह सतीश बाबू !'

'नहीं आपके भतीजे।'

'मेरा कोई भतीजा नहीं है। मास्टर ब्रेन तुम अब बुरी तरह फंस चुके हो। यह मैं हूं, और अब देखो तुम्हारा क्या हाल होता है।' उन्होंने कहा फिर संकेत किया। अनेक सिपाहियों ने अगले ही क्षण इंस्पेक्टर शर्मा को घेर लिया। वह इन सबको फटी-फटी आंखों से देख रहा था।

'जनाब मैं'''मैं इंस्पेक्टर शर्मा हूं'''।' वह बोला—'आपका सेवक'''।'

'मास्टर ब्रेन ! मेरे मुखबिर गलत नहीं हो सकते।'

'जनाब'''आपको धोका हुआ है मैं मास्टर ब्रेन नहीं। मास्टर ब्रेन ने आपको भी धोका दिया तथा मुझे भी। कृपया मुझे माफ करें।'

'शट-अप।' आई० जी० चिल्लाये। फिर अपने आदमियों को उसे ले जाने का संकेत किया। वे शर्मा को बाहर की ओर घसीटने लगे। शर्मा बार-बार चिल्ला रहा था तथा कह रहा था कि मैं मास्टर ब्रेन नहीं। मैं इंस्पेक्टर शर्मा हूं, मगर इस समय वहाँ कौन उसकी सुनने वाला था।

सिपाहियों ने उसे पहले से लाई गई एक बन्द गाड़ी में बुरी तरह ठूंस दिया। शर्मा को कुछ चोट भी लगी, किंतु वह खिसिया-खिसिया कर उन्हें गन्दी-गन्दी गालियां देता रहा। वह चुप न रह सका। वह कहता जा रहा था—

'हरामजादों मैं इंस्पेक्टर शर्मा हूं…इंस्पेक्टर शर्मा…! तुम सबको शूट कर दूंगा।'

किन्तु किसी ने उसकी एक नहीं सुनी तथा गाड़ी उसे लेकर चली गई। जब वे लोग चले गये तो आइ० जी० ने शांति की सांस लेकर कहा—

'अब देखना मैं उसे कितनी कठोर सजा दिलाता हूं।'

'कमाल कर दिया आपने तो।' गोविंद पाटिल ने कहा फिर किसी सोच में डूबा हुआ था।

'मगर मैं एक सोच रहा हूं।' कुछ क्षण पश्चात गोविंद पाटिल ने कहा—'कि कहीं वास्तव में यह इंस्पेक्टर शर्मा ही न हो।'

'क्या मतलब ?'

'क्या पता यह सब मास्टर ब्रेन का रचा हुआ स्टंट हो। उसने आपको व शर्मा को दोनों को धोखा ही दिया हो।'

'नहीं मुझे विश्वास है कि वह मास्टर ब्रेन ही है।'

'इस विश्वास का कारण ?'

'मिस्टर गोविंद पाटिल मैं मिनिस्टर नहीं आई. जी. हूं। मेरी आंखें मेरे मस्तिष्क की भांति रोशन हैं।'

'होगा…।'

'और इस मास्टर ब्रेन की वह अय्यारी तो मैं भूल सकता हूं क्या आप भी ?'

'मैं…।' गोविंद पाटिल बड़ी जोर से चौंका।

इतने में नौकर खाने-पीने का सामान ले आया, और दोनों

लड़ाने लगे। कुछ देर पश्चात गोविंद पा[illegible] ने कहा।

'हां…जी इस केस के विषय में आप क्या कर रहे हैं?'

'जो आप कहें।'

'यदि यह केस शीघ्र ही दबा नहीं तो मेरी बेटी प्रिया व्यर्थ ही फंस जायेगी। और अगले चुनाव में मेरा जीतना असम्भव हो जायेगा। और यह तो आप जानते ही हैं कि बिना मिनिस्टरी के मैं दो कौड़ी का आदमी हूं।'

'दो कौड़ी का क्यों?' आई० जी० ने हंसकर कहा।

'भई [illegible] तो जानते ही हैं कि बचपन से लेकर राजनीति में आने तक गुंडागर्दी [illegible]। तीन-चार वर्षों में दसवी पास की और कॉलेज में लड़कियों के विषय में इतने बदनाम हुए कि निकाल दिये गये। इसके पश्चात सर्विस की तलाश बेकार थी क्योंकि हम नौकरी करना ही नहीं चाहते थे। गुंडागर्दी से काफी आमदनी हो ही जाती थी। फिर एक नये राजनैतिक दल को अपना राजनैतिक महत्व बढ़ाने के लिए गुंडों की जरूरत थी तो मैं उस पार्टी का सदस्य बन गया और खूब काम किया। बहुत लूट खसोट तथा ब्लैक मेलिंग की। और जब अच्छा खासा नाम हो गया, अच्छी खासी बदनामी हो चुकी तथा राजनीति के भली प्रकार [illegible] हो गया तो हमने उस पार्टी को अलविदा कहा और इस पार्टी में घुस गये। हमें पता था कि यह पार्टी सत्तारूढ़ होगी व हम मिनिस्टर बनेंगे।'

'खूब…बड़ी रुचिकर कहानी है।'

'कहानी नही वास्तविकता है और लगभग प्रत्येक राजनैतिक लीडर की कहानी ऐसी ही होती है।'

'मान लीजिए यह पार्टी अगले इलेक्शन में सत्तारुढ़ न हुई तो?'

'आई० जी० साहब पालिटिक्स में इतने दिनों तक पापड़ बेलने के बाद हमें यह तो पहिले से ही ज्ञात हो जाता है कि कौन सी पार्टी

सत्तारूढ़ हो सकेगी...हम मौका पहल देखकर उसी के सदस्य हो जायेंगे।'

'बहुत अच्छे...आई० जी० हँसे। अर्थात् आपकी दृष्टि में, पार्टी तथा उसके नियमों का कोई मूल्य नहीं।'

डिफैक्शन...के इस युग में पार्टी व उसके सिद्धान्त धरे रह जाते हैं। आदमी वही सफल होता है जो समय की गति के साथ चलता रहे, और उसे समझता भी रहे।'

'आज आपको कुछ पिलाऊँ ?'

'नहीं...मैं कुछ चिन्तित हूं।'

'मैंने कहा न आप चिंता न करें मैं सब ठीक कर लूंगा।'

'वह तो ठीक है...तुम आई० जी० ही नहीं मेरे मित्र व राजदार भी हो।'

'थोड़ी सी हो जावे।'

'नहीं।'

'भई आप बूढ़े होते जा रहे हैं।'

'बूढ़ा...' गोविन्द पाटिल हँसा-फिर बोला—'तुमने मेरी दुखती नस को छेड़ दिया है...अच्छा लाओ।'

आई० जी० ने उठकर अलमारी से शराब की बोतल निकाली तथा दो गिलास लेकर टेबिल पर आ गये। फिर दोनों चुसकियाँ ले रहे थे। जब गोविन्द पाटिल को थोड़ा सा नशा चढ़ गया तो आई० जी ने कहा—

'यार मैं अभी बूढ़ा नहीं हुआ हूं...किन्तु भाग्य में जवान औरत नहीं।'

'यह कौन सी बड़ी बात है...बोलो कितनी औरतों का प्रबन्ध करूं।'

'क्या अनेक हैं ?'

'कहो तो लाइन लगवा दूँ···अपन भी अभी बूढ़े नहीं हुए।'

'मगर मेरे लिए वह आपत्ति तो नहीं करेगी।'

'अजी उनकी ऐसी तैसी······सालियों को भरे बाजार में नंगा कर डालूँ··· गुर्गों के हाथ भेज दूँ—मेरे तो संकेत पर नाचती है।'

'तब तो इलैक्शन में बड़ी काम आती होंगी?'

'इलैक्शन जीता ही उन लोगों के दम से है।'

'अच्छा मुझे उनके पते बता दो,' आई० जी० ने कहा।

'···तो और जब मन चाहे चले जाओ—यदि सालियाँ इंकार करें तो मेरा नाम ले ··· और यदि फिर भी मना करें तो मुझे फोन करना। दूसरे ही दिन तबियत साफ कर दूँगा।'

'पते लिखाओ···' आई० जी० ने जेब से पेन्सिल डायरी निकाल ली तथा गोविन्द पाटिल लड़कियों के पते व फोन नम्बर नोट कराने लगा।

जब यह काम समाप्त हुआ तो आई० जी० ने जेब से छोटी सी बोतल निकाली और कहा—

'ऐसी शराब आज तक नहीं पी होगी।' यह कहकर उसने कुछ बूँदें पाटिल के गिलास में टपका दीं।

'देखूँ तो···' गोविन्द पाटिल ने कहा और गटागट सारा गिलास खाली कर दिया।

'बड़ी कड़वी है साली—बिल्कुल बूढ़ी औरत की तरह।' उस पर काफी नशा चढ़ गया था।

इतने में बाहर कार के रुकने की ध्वनि हुई—आई० जी० मेज के नीचे रखा हुआ एक छोटा-सा सन्दूक उठाकर भीतर की ओर चला गया। गोविन्द पाटिल अपनी जगह खड़ा होकर स्वयं से कहने लगा।

'सालों हम मिनिस्टर हैं···' फिर वह बाहर की ओर ··· किन्तु द्वार पर उसका टकराव आई० जी० से हुआ और वह चौंककर उसे देखने लगा।

'आप ?' आई० जी० ने साश्चर्य कहा।

'तुम !' गोविन्द पाटिल उसे घूरने लगा। दोनों एक-दूसरे को घूर रहे थे फिर गोविंद पाटिल ने लड़खड़ाये स्वर में पूछा—

'तो वह कौन था ?'

'वह कौन !'

'वही जो भीतर गया।'

'भीतर ?' आई० जी० जल्दी से भीतर आये फिर तेजी से कोठी में घुसने लगे। उनके घरवाले जिनमें उनकी लड़की…नौकर… पत्नी सब ही थे हालांकि सब उनके साथ-साथ थे किंतु किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

'यह सब क्या तमाशा है ?' आखिर सिटिंग रूम में आकर उन्होंने ऊंचे स्वर में कहा—

'क्या हुआ डैडी ?' उनकी लड़की ने पूछा।

'क्या अभी यहां कोई आया था।'

'आपके व गोविन्द अंकल के अलावा कोई न था।'

'हां…हां…तुम ठीक कहती हो डार्लिंग…' गोविन्द पाटिल ने लड़खड़ाते हुए स्वर में कहा। उसे खड़ा रहना कठिन था तथा नशे के कारण आंखें लाल हो रही थीं।

'डार्लिंग…आई० जी० गुर्राये।

'हां…यह मेरी डार्लिंग हो गई…हिच्च ! आज…जवान है… हिच्च…!'

'क्या बकते हैं आप ?' लड़की एक पग आगे बढ़कर मुट्ठियां भींच कर बोली।

'बकता नहीं—मैं मिनिस्टर हूं…समझ रही हो…जल्दी शादी कर लो मुझसे।'

'शटअप !' वह बड़े जोर से चिल्लाई और आई० जी० गोविन्द

पाटिल को खूंखार दृष्टि से देखने लगे और गोविन्द पाटिल वेहया आदमियों के समान गला फाड़ फाड़कर हँस रहा था।

'क्या आपका दिमाग सही है ?' आई० जी० से रहा नहीं गया तो उसने पाटिल से कहा।

'मिस्टर आई० जी० हम मिनिस्टर हैं।'

'शटअप !' आई० जी० चिल्लाये और गोविन्द पाटिल ने उन पर हाथ छोड़ दिया किन्तु आई० जी० के एक ही घूँसे ने पाटिल को न केवल फर्श पर गिरा दिया वल्कि जबड़े की हड्डी तक हिलाकर रख दी। 'मैं तुम्हें जान से मार डालूंगा।'

'मारो तुम्हारी ही लौंडियाँ विधवा होगी श्वसुर जी।'

'आपको शर्म नहीं आती।' आई० जी० की पत्नी ने कपकपाते हुए स्वर में कहा—वास्तव में मौका कुछ ऐसा अजीव तथा नाजुक था और इस तरह पेश आया था कि सबके दिमाग सन्न होकर रह गये थे।

'मैं तुम्हें भी अपने घर ले जा सकता हूं...' पाटिल ने उठने की चेष्टा करते हुए कहा और आई० जी० को बड़ी जोर का ताव आ गया उन्होंने घूमकर एक ठोकर मारी तो गोविन्द पाटिल की चीख निकल पड़ी।

'यह मिनिस्टर है।' आई० जी० की पत्नी बौखलाकर बोलीं।

'मैं इस हराम जादे को जीवित गाड़ दूंगा।' आई० जी० फिर उस पर झपटे।

'भगवान के लिए।' मैडम आई० जी० ने उनका हाथ पकड़ लिया।

'छोड़ दो मुझे—मैं इस मिनिस्टर के बच्चे का दिमाग ठीक किये देता हूं।'

'नशा अधिक चढ़ गया है शायद।' एक नौकर ने मुस्कराते हुए स्वर में कहा।

'किसने शराब पिलाई ?' आई० जी० चिल्लाकर बोले।

'आप ही ने तो बुलाई थी ।' आई० जी० की पत्नी बोलीं ।

'मैंने' 'क्यों तुम लोगों का दिमाग खराब हो गया है । मैं तो अभी अभी बाहर से आया हूं ।'

'सर...' नौकर ने कहा और फिर सब आई० जी० को कौतूहल से देखने लगे ।

'बताओ क्या बात थी ?'

'डैडी सिटिंग रूम में आप उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे ।'

'नहीं...'

'फिर वह कौन था ?' मैडम आई० जी० ने पूछा ।

'जनाब आप ही थे खाने की ट्राली मैं लाया था ।' नौकर बोला ।

'तुम सबका दिमाग बिगड़ गया है ।' आई० जी० हाथ झटककर बोले और फिर मिनिस्टर साहब की ओर देखने लगे । मिनिस्टर के दांतों से रक्त बह रहा था । वह गुर्राती हुई आवाज में कह रहा था ।

'बेटा आई० जी० मैं भी मिनिस्टर का बच्चा हूं...सिपाही न बनवा दिया तो मेरा नाम गोविन्द पाटिल नहीं ।'

'वह कौन था जो आपसे बातें कर रहा था ?'

'तुम्हीं थे...अब बनते हो ।'

'व्यर्थ की बातें नहीं करो...मैं तो अभी चला आ रहा हूं ।' आई० जी० को फिर क्रोध आ गया ।

'यदि मेरी शादी अपनी लौंडियां से नहीं करा दे फिर देखना ।' गोविन्द पाटिल बोला तथा लड़खड़ाता हुआ बाहर की ओर चला । वे सब उसे घूर घूरकर देख रहे थे । किसी की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था ।

'क्या वह मैं था ?' आई० जी० ने फिर एक बार पूछा ।

'हां...आप ही थे ।'

'ओह नहीं...फिर जरूर वह मास्टर ब्रेन होगा ।' उन्होंने मुट्ठियां

चीखकर कहा फिर बाहर की ओर दौड़े। पाटिल का शोफर उन्हें कार में बिठा रहा था। उसे उनकी हालत पर विस्मय था।

'मिस्टर पाटिल'''वह मैं नहीं मास्टर ब्रेन था— मास्टर ब्रेन'''

आई० जी० ने जोर से कहा – मास्टर ब्रेन का नाम सुनते ही गोविन्द पाटिल का नशा हिरन हो गया। वह उसे घूरकर बोला—

'तो इसका मतलब इन्स्पेक्टर शर्मा भी मास्टर ब्रेन नहीं इन्स्पेक्टर शर्मा ही थे।'

'मास्टर ब्रेन ऐसे ही तमाशे किया करता है।'

'मगर''' मगर'''वह मुझसे बहुत सी बातें मालूम कर गया—' पाटिल ने कहा और सीने पर हाथ रख लिया। उसे दिल का दौरा पड़ रहा था। आई० जी० ने बड़ी कठिनाई से उसे गाड़ी में बिठाया और आप भी साथ बैठ गया। कार बड़ी तेजी से एक नर्सिंग होम की ओर भागी जा रही थी। पाटिल को अपने सीने पर बर्छियाँ सी चलती प्रतीत हो रही थीं।

सतरह

पाटिल को तेज दौरा पड़ा था। डाक्टरों ने उसकी हालत बड़ी गम्भीर हालत बताई थी। उसकी बीमारी का समाचार राजनैतिक क्षेत्रों में आग के समान फैल जाने से नर्सिंग होम के सामने चमकती हुई कारों की लाइन लग गई थी। उनमें राजनैतिक तथा अराजनैतिक लीडरों के अतिरिक्त उच्च अधिकारी भी थे पत्र प्रतिनिधि भी। अब तक उसके कई चित्र लिए जा चुके थे और पूरे नगर में हंगामा मचा

हुआ था---अखबारों की स्पाट न्यूज में हर जगह लिखा था कि मिस्टर पाटिल को दिल का तीव्र दौरा पड़ा। स्थिति गम्भीर है। नर्सिंग होम पहुँचते ही उसका कई डाक्टरों ने निरीक्षण किया। सरकारी डाक्टर भी इधर उधर भागते दृष्टिगोचर हुए। बहुत सी ऐसी मशीनें जो उस समीर नर्सिंग होम में नहीं थीं किन्तु इलाज के लिए किसी भी समय उनकी जरूरत पड़ सकती थी उन मशीनों को सरकारी अस्पताल से मंगवा लिया गया था।

लोगों का विचार था कि एक मरीज के लिए अस्पताल के अनेकों रोगियों को उन मशीनों से वंचित कर देना अति अनुचित है। किन्तु वह बातें करने के सिवा और कर भी क्या सकते थे क्योंकि यहाँ तो मामला एक प्रसिद्ध राजनैतिक लीडर का था।

मिस्टर पाटिल के कमरे के बाहर 'भेंट वर्जित है' का बोर्ड लटका दिया गया था, तथा नर्सिंग होम ने अपने सारे नियम तोड़कर गैलरी में उनके स्वजनों व इस्ट मित्रों आदि को ठहरने की अनुमति दे दी थी! वे लोग आपस में जोर-जोर से बातें करके दूसरे मरीजों को परेशान किये दे रहे थे और कुछ ने तो पान की पीकें साफ सुथरे कोनों में मारनी शुरू कर दी थीं।

पाटिल साहब की देख भाल के लिए हर समय दो नर्सों का प्रबन्ध था, इसके अलावा दो डाक्टर भी हर वक्त हाजिर रहते थे। एक विशेष टेलीफोन की व्यवस्था कर दी गई थी, जिस पर बड़े डाक्टरों को तत्काल बुलाया जा सके।

इतने प्रबन्धों के बाद भी मिस्टर गोविन्द पाटिल का दिल कष्ट में था। नाड़ी की गति ठीक नहीं थी---और उन्हें मर्फिया देकर सुलाये रखा गया था।

'अगले प्रातः उन्होंने अपनी आँखें खोलीं तथा डाक्टर से पूछा---'डाक्टर...अब मैं कैसा हूं।'

'आप पहिले से ठीक हैं।'

'क्या अखबार 'दोस्त' का अंक निकला ?'

'मुझे पता नहीं।'

'इस समय क्या टाइम है ?'

'प्रातः के साढ़े आठ बजे हैं।'

'प्लीज जाकर पता लगाओ कि 'दोस्त' का अंक निकला या नहीं ?'

'बहुत अच्छा सर !' डाक्टर ने कहा और तेजी से बाहर निकल गया। गोविन्द पाटिल दरवाजे की ओर देखता रहा। शीघ्र ही डाक्टर वापस आ गया और बोला—

'नहीं ! अब तक किसी ने अखबार नहीं देखा।'

'यह बुरा हुआ।'

'जी…?' डाक्टर की समझ में कुछ नहीं आया।

'यह बुरा हुआ…आई० जी० को बुलाओ।'

'वह बाहर ही हैं।'

'यहाँ बुलाओ।'

डाक्टर फिर बाहर आया और जब लौटा तो आई० जी० उसके साथ थे। गोविन्द पाटिल ने उनकी ओर देखा और फिर सबकी ओर देखता हुआ बोला—

'तुम सब बाहर जाओ।' और आई० जी० के अलावा सब बाहर निकल गये तो वह आई० जी० से बोला—

'जो कुछ कल हुआ वह आपको पता ही है। आप यह भी जानते होंगे कि यह सब मास्टर ब्रेन का काम था। वह आपके मेकअप में आप ही की कोठी में मौजूद था। मैं उसे बिल्कुल नहीं पहिचान सका। भला मैं कैसे पहिचानता जब आपके घर वाले तथा नौकर तक उसे नहीं पहिचान सके।'

'जी हाँ ! अचम्भे की बात है । न केवल वह मेकअप का विशेषज्ञ है, बल्कि उसे यह भी पता है कि मैं किस प्रकार बात करता हूं···मेरे घर में कौन-कौन हैं, मैं उन्हें किस तरह पुकारता हूं, और मेरा तरीका क्या है उसे मेरे स्वभाव का पूरा ज्ञान है ।'

'हाँ यही कारण है कि वह हम सबको न केवल धोका देने मे बल्कि ऐसी स्थिति प्रस्तुत करने तक में सफल हो गया कि हम सब परेशान हो उठे ।'

'जी···?'

'उसने मुझे एक छोटी-सी शीशी में से कुछ पिलाया था उसे पीते ही मेरा मस्तिष्क बहक गया और पता नहीं क्या-क्या बकवास कर बैठा ।'

'आप इसे बिल्कुल भूल जाइये···उस समय मुझे भी ताव चढ़ आया था मगर ज़ब हकीकत का ज्ञान हुआ तो विश्वास करें चैन नहीं आया । मैं सारी रात जागता रहा हूं ।'

'अब हम दोनों के लिए यही उचित है कि इस घटना को बिल्कुल भूल जायें ।' पाटिल ने अपना हाथ बढ़ाकर कहा, और आई० जी० ने उसका बढ़ा हाथ थाम लिया ।

'मैं वचन देता हूं कि किसी और को इसका पता तक न चलेगा ।'

'अब एक बात और सुनिये ।' पाटिल गम्भीर हो गया ।' अखबार दोस्त का अंक अभी तक आऊट नहीं हुआ । इसका तात्पर्य है मास्टर ब्रेन कल की स्थिति उसमें प्रकाशित करना चाहता है ।'

'मगर कल जो भी हुआ उसके चले जाने पर हुआ ।'

'मेरा मतलब उस बात से नहीं···मैं उस वार्ता के लिये चिंतित हूं । जो मेरे व उसके बीच हुई थी जिसे वह टेप भी कर ले गया है । टेप रिकॉर्डर जो एक छोटे से बॉक्स के रूप में था मेज के निचले खाने में रखा हुआ था । और मैं नशे की हालत में उसे राज की बहुत सी बातें

बता चुका हूं।'

'यह वाकई बुरा हुआ।' आई० जी० ने कहा।

'मुझे डर है कि आज मास्टर ब्रेन उस बातचीत को 'दोस्त' में प्रकाशित करेगा।'

'फिर अब क्या हो सकता है।'

'किसी प्रकार उसका प्रकाशन रुकवायें...मैं आपका उपकृत रहूंगा।' वह बोले—'प्लीज आई० ज़ी० कुछ करो वर्ना मैं यहाँ से जीवित नहीं जा सकता।'

'अच्छा मैं देखता हूं।' आई० जी० ने कहा और वहां से बाहर आ गये। उनका चेहरा गम्भीर था। उनके बाहर आने के पश्चात डाक्टर नर्सें तथा निकट सम्बन्धी भीतर पहुंचे। पाटिल को होश में देखकर सबको प्रसन्नता हुई, प्रिया की आंखें जो रोते-रोते सूज गई थीं फिर चमकने लगी।

वहां से निकलकर आई० ज़ी० सीधे अखबार 'दोस्त' के आफिस पहुंचे। किन्तु जब वह कार से उतर रहे थे तो उनका दिल धड़क रहा था क्योंकि हाकर अखबार के अंकों की गड्डियाँ लिये भागते चले आ रहे थे। साथ ही चिल्ला भी रहे थे।

'मास्टर ब्रेन द्वारा नया रहस्योदघाटन ''हैरतनाक तथा घिनावना, एक राजनैतिक नेता की कहानी स्वयं उसी की जुबानी।' हॉकर चिल्ला रहे थे तथा आई० जी० अपनी जगह निश्चल खड़े उन्हें बेबसी से देख रहे थे। फिर जब वह एडीटर के आफिस में प्रविष्ट हुए तो उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह उससे क्या कहें। बूढ़ा एडीटर कदाचित उन्हें पहिचानता था इसलिये चौंककर खड़ा हो गया फिर आगे बढ़कर बोला—

'हुजूर आप ?' आइये पधारिये।'

आई० जी० एक कुर्सी पर बैठ गये...एडीटर खड़ा ही रहा। कुछ

देर बाद आई० जी० गम्भीरता से बोले—

'बैठो !'

वह बैठ गया।

'क्या मिस्टर पाटिल के बारे में खबर प्रकाशित हो गई ?'

'हाँ सरकार हो गई।'

'तुमने यह गलत खबर क्यों प्रकाशित की ?'

'गलत खबर नहीं।'

'तुम्हें इस बात का विश्वास क्यों है।'

'जनाब···मास्टर ब्रेन ने यह लेख अपने नाम से प्रकाशित कराया है और आप तो जानते ही हैं कि मास्टर ब्रेन की सूचना कभी गलत नहीं होती।'

'मास्टर ब्रेन का इस पत्र से क्या सम्बन्ध है।'

'वह हमारा हितैषी है।'

'सो कैसे ··?'

'उसके लेखों के कारण ही इस पत्र का प्रकाशन असाधारण रूप से तेज हो गया है।'

'क्या यह पेपर मास्टर ब्रेन का नहीं ?'

'नहीं···यह मेरा पेपर है।'

'तुम्हारा मास्टर ब्रेन से क्या सम्बन्ध है ?'

'सच तो यह है कि मैंने उसे देखा तक नहीं है।'

'तुम मास्टर ब्रेन को कितना पारिश्रमिक देते हो।'

'वह कुछ नहीं लेता बल्कि अपने हिस्से की रकम दरिद्रों जरूरतमंदों और अनाथालयों को दिलवा देता है। कालेज में कई छात्र उसी के पैसे से शिक्षा पा रहे हैं। कई डाक्टरों, इन्जीनियरों तथा वैज्ञानिकों ने मास्टर ब्रेन की आर्थिक सहायता से पूर्ति की है।'

'उसके पास इतना पैसा कहाँ से आता है ?'

'मुझे कुछ नहीं पता···कुछ रकम मैंने बताया मैं देता हूं।'

'तुम्हारे पास क्या प्रमाण है कि यह खबर सही है ?'

'सुनिये !' एडीटर बोला, फिर उसने एक टेप रेकार्डर चला दिया। गोविन्द पाटिल के स्वर को पहिचानना कुछ कठिन नहीं था। आई० जी० उसकी सारी बकवास बड़े ध्यान से सुन रहा था।

'यह टेप मुझे दे दो।' जब बात समाप्त हुई तो आई० जी० ने कहा।

'हालांकि यह गलत है नियम विरुद्ध है मगर जब आपका आदेश है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।' एडीटर ने कहा और रेकार्डर में से टेप निकालकर उसे दे दी। टेप लेकर आई० जी० ने कहा—

'अब मैं तुझको अदालत में खींचूंगा···देखूंगा तुम किस प्रकार इस खबर का सही होना साबित करते हो।'

'जनाब !' एडीटर हँसा और बोला—'आप यह भूल गये कि यह सारा कारोबार मास्टर ब्रेन का है इसलिये यह वह असली टेप नहीं जो मास्टर ब्रेन ने प्राप्त किया था। वह अब भी उसी के पास है। इस टेप पर उसी टेप से आवाज रेकार्ड की गई है। आवश्यकता पड़ने पर मास्टर ब्रेन दुबारा टेप तैयार कर सकता है।'

'मास्टर ब्रेन कहाँ है ?'

'खेद है कि मुझे यह नहीं पता।'

'और यदि मैं तुमको गिरफ्तार कर लूं क्योंकि तुम ही मास्टर ब्रेन हो तो फिर ?'

'पहले तो मास्टर ब्रेन मैं नहीं हूं···यदि आपने फिर भी मुझे गिरफ्तार कर लिया तो आपको साबित करना कठिन होगा कि मैं मास्टर ब्रेन हूं। उधर मास्टर ब्रेन न केवल मेरी सहायता करेगा, बल्कि आपको भी मुश्किल में फँसा देगा···और यदि मैं मास्टर ब्रेन हूं तो आप मुझे गिरफ्तार करने में सफल नहीं हो सकते हैं।'

अच्छा मैं तुमको देखूंगा···।' आई० जी० ने कहा।

'अवश्य ! मैं सुबह से शाम तक इसी आफिस में मिलता हूं··· जन्म से ही कुवांरा हूं।'

'शटअप !' आई० जी० ने कहा और वाहर आ गये। जिस समय वह अपनी कार में आये तो बड़े उदास थे। क्योंकि अब कुछ नहीं किया जा सकता था। रास्ते में उन्होंने 'दोस्त' का एक अंक खरीदा तथा मास्टर ब्रेन का लेख पढ़ा। वह वही सब कुछ था जो वह टेप रिकार्डर पर सुन चुके थे इसके अलावा नरेन्द्र की हत्या का भी वर्णन था।

जिस समय वह नर्सिंग होम पहुँचे तो लोग इधर से उधर भाग रहे थे। उनका दिल धड़क उठा। रोने-धोने का शोर दूर से ही सुनाई पड़ रहा था। जब वह पाटिल के कमरे में पहुँचे तो वह मुर्दा था। अखबार दोस्त का अंक पलंग पर पड़ा था। डाक्टर व नर्सें मुँह लटकाये खड़े कदाचित बड़े डाक्टर के आने की प्रतीक्षा में थे। आई० जी० को विदित था कि पाटिल पेपर देखते ही मर गया होगा। वह उल्टे पाँव वापस आ गये।

अठारह

मास्टर ब्रेन बड़ी सावधानी से कार रोककर उस अंधेरी बिल्डिंग में प्रविष्ट हुआ। फिर उसने विशेष ढंग से खटखटाया। थोड़ी देर पश्चात् दरवाजा खुल गया···द्वार खोलने वाला एक विदेशी व्यक्ति था। भीतर इस समय भी अंधकार था जब मास्टर ब्रेन भीतर प्रविष्ट हुआ तो द्वार खोलने वाले ने द्वार बन्द कर दिया और अगले ही क्षण

कमरा हल्के प्रकाश से भर गया। मास्टर ब्रेन ने चारों ओर देखा यह एक छोटा-सा कमरा था। मध्य में सीधा पड़ा हुआ था उसके बीच में टेबिल थी जिस पर खाने-पीने का सामान रखा हुआ था। यहां एक आदमी पहले से खड़ा मास्टर ब्रेन की ओर देख रहा था।

इसके अलावा खिड़कियों के कांच पर काला कागज चिपका था तथा मोटे पर्दे लटक रहे थे। यही कारण था कि प्रकाश की हल्की-सी किरण भी बाहर नहीं जा सकती थीं। मास्टर ब्रेन आगे बढ़कर सोफे पर बैठ गया। उसके बैठने पर वे दोनों भी सामने वाले सोफे पर बैठ गये। ऐसा जान पड़ता था कि वह मास्टर ब्रेन से काफी प्रभावित हैं, तथा उसका सम्मान करते हैं।'

'मैं अति शीघ्र इस किस्से को समाप्त करने वाला हूं।' मास्टर ब्रेन बोला—

'थैंक्यू सर!' एक विदेशी ने बड़ी बेचैनी से हाथ मलते हुए कहा, फिर बोला—'हम काफी भयभीत हो गये हैं सर।'

'मेरा विचार है डरने की कोई जरूरत नहीं है।'

'यह तो आप जानते ही हैं कि हमारे कितने ही साथी अब तक मारे जा चुके हैं।'

'हां, मगर ऐसी स्थिति में यही होता है।'

'ठीक है मगर, वह···वह दस्तावेज।'

'वह सुरक्षित है।'

'मगर कहां?'

'मुझे ज्ञात है कि वह कहां है। बस एक बात की तसदीक करना चाहता हूं इसके उपरांत मुजरिम हमारे सामने होगा।'

'मगर वह है कहां?'

'जल्दबाजी की आवश्यकता नहीं। मैं वादा कर चुका हूं कि वह दस्तावेज तुम्हें मिलेगी।'

'थैंक्स सर !' वह विदेशी आगे झुककर बोला। फिर उसने एक गिलास में थोड़ी सी शराब उंडेलकर गिलास उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा—

'हम जानते हैं कि आप पीने के आदी नहीं लेकिन यह बहुत बढ़िया शराब है"

'शुक्रिया !' मास्टर ब्रेन ने कहा। फिर वह धीरे-धीरे चुसकियाँ ले रहा था साथ में भुने हुए मुर्गे थे और भुना हुआ मुर्गा मास्टर ब्रेन का प्रिय व्यंजन था'

'आप लोगों ने विस्तृत जानकारी प्राप्त की।' कुछ देर पश्चात मास्टर ब्रेन बोला—

'जी हाँ…।'

'तीनों मौतों का परस्पर सम्बन्ध जान पड़ता है अर्थात् डेविड वकील एवं विलियम।'

'मगर वह तीसरा व्यक्ति कौन ?'

'इसके बावत जर्मन पुलिस का विचार है कि वह कोई नामी अपराधी है।'

'लेकिन सिर और हाथ काटने से मुजरिम का क्या मतलब हो सकता था ?'

'यही कि विलियम की मौत का पता न चले। शायद वह बिलियम के नाम से अपराधों की एक नई कड़ी शुरू करना चाहता है।

'किन्तु इससे फायदा ?' मास्टर ब्रेन ने पूछा।

'पुलिस उस विलियम को खोजती फिरती जो मर गया। पुलिस के पास विलियम के कुछ निशानात थे, और यह व्यक्ति इस प्रकार सुरक्षित रहता, काम करता रहता।'

'हुँम।' मास्टर ब्रेन सोचने लगा। उने लोगों में कोई बातचीत न हुई वल्कि वह शायद पीते व खाते रहें।

'मुझे इस बात का आश्चर्य है कि उस व्यक्ति की लाश को पहिचाना क्यों नहीं जा सका।'

'हमारे यहाँ मुजरिम के हाथों के निशानों का रेकार्ड रखा जाता है। दुर्भाग्य से अपराधी के हाथ भी कटे हुए थे।'

'अच्छा···तो मि० मैकाइल की मौत कैसे हुई थी ?'

'उन्हें दिल का दौरा पड़ा था।'

'और मैडम मैकामूल उस समय जवान थीं।'

'हाँ उसकी एक ही सन्तान थी अर्थात् विलियम।'

'शादी से पहिले मैडम मैकाइल क्या करती थी ?'

'कोई विशेष रेकार्ड नहीं, क्योंकि यह पच्चीस तीस वर्ष पुरानी बात है जो कुछ भी ज्ञात हो सका उससे यह प्रकट होता है कि पहिले वह एक माडल गर्ल थी। एक बार उस पर आवारगी का आरोप लगाकर सजा भी हुई थी। फिर वह होटलों में नर्तकी रही। इस पेशे में वह बहुत अधिक प्रसिद्ध हुई। इसी बीच उसकी मुलाकात करोड़पति मि० मैकाइल से हुई। दोनों कुछ दिनों तक प्रेम करते रहे फिर शादी हो गई।'

'मि० मैकाइल की आयु उस समय क्या थी ?'

'वह शायद पचपन वर्ष के थे।'

'तथा मैडम मैकाइल की ?'

'वह कदाचित पच्चीस-छब्बीस वर्षीय थी।'

'क्या मैकाइल का कोई और रिश्तेदार नहीं था ?'

'शायद नहीं, क्योंकि जब मैकाइल की मौत हुई तो किसी ने उसकी दौलत पाने का एलान नहीं किया। मैडम मैकाइल उस सारी दौलत तथा जायदाद की वैध वारिस थी।'

'लोगों का यह शक तो नहीं था कि मैडम मैकाइल ने जान बूझकर अपने पति की हत्या की है।'

'था, मगर किसी ने कोई हँगामा खड़ा नहीं किया ?'

'मि० तीरथदास से उसके सम्बन्ध कैसे बने ?'

'कोई कहता है कि मैडम मैकाइल के सम्बन्ध मि० तीरथदास से पहिले से ही थे और किसी का कहना है कि मिसेज मैकाइल के बाद बने। तात्पर्य यह कि मैडम मैकाइल ने मि० मैकाइल की मौत के एक साल पश्चात् ही मि० तीरथदास से शादी करली और विलियम सहित तीरथदास के साथ रहने लगीं। तीरथदास से उनके एक लड़की पैदा हुई और लड़की के जन्म के कुछ दिन पश्चात् हीं वह अपने कमरे में मुर्दा पाई गईं।'

'डाक्टरी रिपोर्ट क्या थी ?'

'दिल का दौरा।'

'मैडम मैकाइल की दौलत का क्या हुआ ?'

'मैडम मैकाइल के कुछ रिश्तेदारों ने दौलत पाने के लिए कोर्ट में दरख्वास्त दी। किन्तु जब मुकदमा चला तो विदित हुआ कि मैडम मैकाइल पहिले से ही सब कुछ तीरथदास के नाम कर चुकी हैं, इसलिए कोई भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सका। तीरथदास जो पहिले से भी काफी धनवान था अपार सम्पत्ति का मालिक बन गया।'

'क्या पुलिस को यह सन्देह नहीं हुआ कि तीरथदास ने अपनी पत्नी की हत्या की है ?'

'सन्देह तो हुआ था मगर कोई प्रमाण नहीं मिल सका। एक विचार यह भी है कि तीरथदास ने पुलिस को भारी रिश्वत देकर केस दबा दिया था।'

'केस की पड़ताल करने वाला आफिसर कौन था ?'

'यह नहीं पता किन्तु जो भी रहा होगा अब वह रिटायर्ड हो गया होगा।'

'तुम उसका पता चलाओ, यदि आवश्यकता पड़ी तो मैं स्वयं जर्मनी

जाकर स्थिति का पता चलाऊंगा।'

'एक बात और बता देना चाहता हूं।' वह विदेशी बोला।

'क्या···?' मास्टर ब्रेन ने उसकी ओर ध्यान देकर कहा।

'नरेन्द्र की मौत के सम्बन्ध में जो कुछ मैंने यहां के पेपरों में पढ़ा उससे मुझे एक बात याद आई।

'क्या ?'

'प्रिया कुमारी तथा उसकी सहेली आराधना किसी समय जर्मनी में थीं।'

'क्या···?' मास्टर ब्रेन बड़े जोर से चौंका।

'हां, मैंने उन दोनों को कोमल के साथ देखा था।'

'मगर वह वहां क्या कर रही थीं ?'

'यह मुझे नहीं मालूम।'

'क्या किसी हत्याकांड से उनका सम्बन्ध हो सकता है ?'

'कह नहीं सकता।'

'अच्छा यह मैं स्वयं देखूंगा।' मास्टर ब्रेन बोला।

'एक विचार यह भी है कि इस सारे हंगामे के पीछे टामी का हाथ था।'

'सो कैसे ?'

'टॉमी विलियम का साथी था। किसी कारण उसने विलियम को कत्ल किया और उसकी मौत को रहस्य में रखने के लिए सिर व हाथ गायब कर दिये।'

'मगर क्या यह सम्भव नहीं कि विलियम अब भी जीवित हो ?'

'यह भी हो सकता है किन्तु सवाल यह है कि वह आज तक खामोश क्यों बैठा है ?'

'हो सकता है वह किसी दूसरे नाम से काम कर रहा हो।'

'अर्थात टामी !'

'नहीं विलियम टामी नहीं हो सकता।

'खैर, आप लोग यहाँ से बाहर न निकलें जरूरत पड़ने पर मैं स्वयं आप लोगों से मिलने आऊँगा। अभी बहुत से ऐसे सवालात हैं जिनके उत्तर की मुझे जरूरत होगी।'

'हम दस्तावेज के लिये बड़े परेशान हैं।'

'इस विषय में आप मुझ पर भरोसा कीजिये ?'

'ठीक है।'

मास्टर ब्रेव वहाँ से निकलकर और कार में बैठकर अब वह प्रिया की कोठी की ओर जा रहा था। हालांकि रात काफी हो गई थी मगर फिर भी वह इसी समय प्रिया से बात करना चाहता था। जब वह उसकी कोठी के पास पहुंचा तो पता चला कि पुलिस का पहरा है और प्रिया के बहुत से रिश्तेदार वहा मौजूद हैं। उचित अवसर न समझकर वह आराधना के मकान की ओर चल दिया।

आराधना सो गई थी। किन्तु मास्टर ब्रेन ने जब स्वयं को सी. आई. डी. ब्रांच का इंस्पेक्टर कहा तो नौकर ने आराधना को जगा दिया। कुछ देर पश्चात वह गाउन पहिने ड्राइंग रूम में आ गई।

'खेद है कि रात को इस समय मैंने आपको कष्ट दिया। किन्तु मिस्टर गोविंद पाटिल की मौत तथा नरेन्द्र की हत्या के सम्बन्ध में कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर इसी समय मिलना जरूरी है।'

'कहिये ?'

'आप कोमल को कब से जानती हैं ?'

'बहुत दिनों से।'

'बहुत दिनों से आपका क्या मतलब हे ?'

'कई वर्षों से, शायद छः साल से।'

'आपकी पहली भेंट कोमल से कहाँ हुई ?'

'जर्मनी में।'

'आप जर्मनी क्यों गई थी ?'

'मेरे डैडी का बिजनेस है। वह जर्मनी गये थे मैं भी उनके साथ गई थी।'

'क्या आपके साथ प्रिया भी थी ?'

'जी हां।'

'वह वहां किस लिए गई थी ?'

'प्रिया के डैडी किसी राजनैतिक कार्यवश जर्मनी गये हुए थे। फिर जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि मैं जर्मनी जा रही हूं तो उन्होंने प्रिया को भी मेरे संग बुला लिया। वहीं हमारी भेंट कोमल से हुई और हम अच्छी दोस्त बन गईं।'

'आपके विचार से प्रिया कैसी लड़की है ?'

'अच्छी लड़की है।'

'मेरा मतलब है इससे पहिले कि मैं अपना सवाल विस्तार से बताऊं निवेदन करूंगा कि उत्तर देते समय आप दोस्ती का विचार न करते हुए मन की बात बता दें।'

'वह तो ठीक है मगर आप पूछना क्या चाहते हैं ?'

'मैं प्रिया के चाल-चलन की बाबत पूछ रहा था।'

'मेरे विचार में उसका चाल-चलन बड़ा अच्छा है।'

'मगर नरेन्द्र से उसके सम्बन्ध पति-पत्नी जैसे थे ?'

'जी···!' आराधना का मुंह खुला का खुला रह गया।

'जी हां। नरेन्द्र ने मरने से पूर्व एक बार मुझे बताया था कि प्रिया उसके बच्चे की मां बन जाती यदि वह एक महिला डाक्टर की यथा समय सहायता न लेता।'

'जी !' आराधना ने गर्दन झुकाली।

'अब आप यह बतायें कि जर्मनी में वह कैसे रही थी ?'

'असल में बात कुछ अजीब सी है।' आराधना कुछ सोचकर बोली।

'चिंता न करें, बताती रहें।'

'हम तीनों गहरी दोस्त थीं। उस वक्त कोमल का जर्मनी के एक वकील से रोमाँस चल रहा था। कोमल ने हमें भी अपने उस मंगेतर से मिलवाया। फिर प्रिया को यह शक हो गया कि वह उससे प्रेम करता है।'

'क्या प्रिया उससे प्रेम करने लगी थी ?'

'हाँ, उसने मुझसे इस बात का इकरार किया था।'

'अच्छा फिर क्या हुआ ?'

'मगर कोमल की शादी उसके साथ निश्चित हो चुकी थी। फिर वह वकील बीमार पड़ा और हास्पिटल में दाखिल हुआ और डाक्टरों की लापरवाही से किसी गलत दवा का प्रयोग करने से मर गया।'

'क्या कोमल ने प्रिया से कोई शिकायत की थी ?'

'नहीं, कोमल बड़ी उदार व नेकदिल लड़की है उसके माथे पर बल तक नहीं आया।'

'प्रिया का क्या हुआ ?'

'वह शर्मिन्दा थी, उदास थी, फिर वह वापस लौट आई।'

'आप वहीं रहीं ?'

'हाँ, शायद एक महीना और रहूंगी बस।'

'मिस आराधना ! यहाँ भी बिल्कुल ऐसा ही केस है। प्रिया व कोमल दोनों नरेन्द्र से प्रेम करती थीं। नरेन्द्र की शादी कोमल से निश्चित हो चुकी थी। किन्तु नरेन्द्र रहस्यपूर्ण ढंग से मर गया।

'जी हाँ।'

'क्या आपको विश्वास है कि प्रिया ने आपसे नरेन्द्र के फूल सूंघने

वाली बात कही ?'

'हाँ !'

'क्या वह गुलदस्ता प्रिया ने विशेष रूप से नरेन्द्र के लिए बनाया था ?'

'हाँ।'

'आपकी मौजूदगी में ?'

'नहीं'''किन्तु मेज पर रखने से पहिले उसने मुझे गुलदस्ता दिखाया और कहा था—'यह गुलदस्ता नरेन्द्र के लिए है, और मैंने कहा था अच्छा है।'

'क्या आपने उसे सूँघा था क्योंकि यह एक स्वाभाविक बात है कि फूल देखकर उसे यों ही सूंघने को मन करता है।'

'जी ?' आराधना चौंकी और चुप हो गई।

'आप खामोश व भयभीत क्यों हो उठीं ?' मास्टर ब्रेन ने उसे घूरते हुये कहा—

'अब मैं सोच रही हूं, वह सरसराते हुये स्वर में बोली।

'क्या ?'

'मैंने गुलदस्तों को हाथ में लेकर ज्यों ही सूंघना चाहा था प्रिया ने मेरे हाथ से गुलदस्ता झपट लिया था और कहा था, इसे मत सूँघ।'

'फिर आपने क्या कहा था ?'

'मैंने पूछा था क्यों ? तो उसने उत्तर दिया था। यह गुलदस्ता केवल नरेन्द्र के लिए है। इसकी महक भी केवल नरेन्द्र के लिए है।'

'यदि आप वह गुलदस्ता सूँघ लेती तो मर जाती।'

'क्यों ?'

'क्योंकि नरेन्द्र गुलदस्ता सूँघते ही मर गया था।'

'नहीं !' वह सरसराते हुए स्वर में बोली।

'नरेन्द्र आपका भी मित्र था।'

'हाँ – मगर वह एक लड़की के साथ टिककर रहने वालों में से नहीं था सो उसके साथ मेरी निभ नहीं सकी।'

'पर आपको नरेन्द्र के बारे में यह सब ज्ञात था तो प्रिया को क्यों नहीं समझा था।'

'कई कारण थे जैसे यही कि जब मैंने समझाने का प्रयत्न किया तो उसने मुझपर लाछंन लगाया कि मैं उससे जलती हूं। इसके अलावा नरेन्द्र उसके साथ बड़ी चतुराई से बात कर रहा था। फिर यह भी कि प्रिया ने मुझे बताया था कि वह नरेन्द्र को कब्जे में करने की विधि जानती है।'

'और वह विधि क्या थी ?'

'आप तो जानते ही हैं।' वह लजाकर बोली—

'अर्थात् आत्म समर्पण।' मास्टर ब्रेन बोला और खड़ा हो गया। आराधना भी उठ खड़ी हुई।

'आपने मुझे काफी उपयोगी जानकारी उपलब्ध की है।'

'किन्तु आप प्रिया को यह न बतायेंगे कि मैंने यह सब आपको बताया है।

'यह तो स्पष्ट हो गया कि नरेन्द्र की हत्या की गई है और यह भी प्रकट हो रहा है कि हत्यारी स्वयं प्रिया है। क्या आप बता सकती हैं कि प्रिया ने यह हत्या क्यों की ?'

'मैं इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कह सकती। मुझे विश्वास नहीं कि प्रिया ने यह कत्ल किया होगा ?'

'मास्टर ब्रेन के बारे में आपका क्या ख्याल है ?'

'उसने अपने पेपर 'दोस्त' से जो हंगामा खड़ा किया है उसका फल है निकला कि मि० पाटिल मर गये।'

'किन्तु मास्टर ब्रेन के बयान के अनुसार मि० गोविन्द पाटिल पर

अनेक आरोप थे।'

'कुछ कहा नहीं जा सकता।'

'आपने मतानुसार मास्टर ब्रेन जो कुछ कह रहा है क्या वह ठीक है ?'

'हां—'

'शुक्रिया—'

'जी ?'

'मैं जनता का सेवक मास्टर ब्रेन ही हूं।'

'प्रिन्स···!' आराधना घबराकर बोली—और उसे देखने लगी मगर वह बड़ी तेजी से बाहर निकल गया। आराधना द्वार पर आकर उसे जाता हुआ देखती रही।

मास्टर ब्रेन फिर प्रिया की कोठी तक आ गया। वह प्रिया से बात करना चाहता था किन्तु यहां अब भी काफी हंगामा था अतः वह भी कार से उतरकर भीतर चला गया। लोग आ जा रहे थे सो किसी ने उसे नहीं रोका। भीतर आकर वह प्रिया को खोजने लगा। पूछने पर उसे ज्ञात हुआ कि वह अपने कमरे में है। अतः उसके कमरे तक पहुंचने में उसे कोई कठिनाई नहीं हुई। प्रिया अपने पलंग पर औंधी पड़ी थी। आहट पाकर उठी और एक अपरिचित को इस प्रकार भीतर आता देख बैठ गई।

'माफ करें, मैं आपसे कुछ आवश्यक बातें करना चाहता हूं···' मास्टर ब्रेन बोला फिर, उसने दरवाजा बन्द कर लिया'

'तुम कौन हो ?' प्रिया ने पूछा।

'मास्टर ब्रेन···।' वह बोला।

'तुम···।' प्रिया ने कहा और घृणा भरी दृष्टि से उसे घूरने लगी।

'मैं जानता हूं कि आप मुझसे बड़ी नाराज हैं किन्तु यथार्थ अंततः

यथार्थ ही होता है। नरेन्द्र की हत्या ही की गई थी किन्तु आपके डैडी पुलिस से गलत बात कराना चाहते थे अतः उन्हें इसकी सजा मिल गई।'

'प्रिस···तुम जालिम हो!' वह दांत पीसकर बोली।

'हाँ प्रिया मैं कातिल हूं मेरा तरीका मगर अलग है। तुम्हारे डैडी को मैंने दंड दिया है मगर क्या कानून मुझे गिरफ्तार कर सकेगा?'

'मैं तुमको गिरफ्तार कराती हूं।' वह झल्लाकर उठी और दरवाजे की ओर बढ़ी।

'आराधना ने कुछ ऐसी बातें मुझे बताई हैं जिनसे दुख होता है कि कातिल तुम हो···।' मास्टर ब्रेन बीच में बोला और वह ठिठक कर रह गई। फिर उसने मास्टर ब्रेन की ओर देखा।

'मैं तुम्हारे लिये फांसी का फंदा तैयार कर रहा हूं।'

'तुम्हारा मतलब···हत्या मैंने की है?'

'हाँ!'

'झूठ!'

'बिल्कुल इसी प्रकार की घटना गर्मियों में भी घटी थी। कोमल का मंगेतर जो एक वकील था रहस्यपूर्ण रूप से मर गया था। उस वकील के सम्बन्ध भी तुमसे थे जबकि शादी कोमल से निश्चित हो चुकी थी।'

'क्या यह बात तुम्हें कोमल ने बताई है?'

'नहीं···बल्कि आराधना ने।'

'क्या उसने यह नहीं बताया कि कोमल ने उसे व अपने वस्त्र विहीन दशा में एक ही कमरे में पाया था।'

'यह नहीं बताया···मगर हाँ तुम्हारे व नरेन्द्र के नौकर तक ने बात बता दी है।'

'मैं उस कुतियाँ को भी देखूंगी।'

'क्या उस वकील की हत्या तुमने की थी।'

'नहीं। न मैंने उस वकील की हत्या की न नरेन्द्र की···समझे।'

'मगर तुमने आराधना को गुलदस्ता सूंघने से क्यों मना किया था?'

'मेरी मर्जी···वह केवल नरेन्द्र के लिए ही था।'

'प्रिया···तुम्हारे गिर्द ऐसा जाल तैयार हो चुका है कि तुम बच नहीं सकतीं···क्या तुम फाँसी पर लटकना ही चाहती हो?'

'सुनो मास्टर ब्रेन···मुझे कोई फाँसी नहीं लगा सकता।'

'मगर अब मिनिस्टर साहब जीवित नहीं।'

'किन्तु मैं कातिल नहीं हूं।'

'तो कौन है?'

'मुझे नहीं मालूम।' वह बोली और दरवाजा खोलने लगी। मास्टर ब्रेन ने कुछ नहीं कहा। वह चुपचाप खड़ा रहा। फिर प्रिया बाहर निकलकर जोर से चिल्लाई—

'अरे कोई है···मास्टर ब्रेन मेरे कमरे में घुस आया है।'

तनिक सी देर में बहुत से लोग उसके कमरे में घुस आये, किन्तु मास्टर ब्रेन वहां कहीं न था। पीछे की खिड़की खुली हुई थी। सबको विश्वास हो गया कि वह यहाँ से निकल भागा है, इसलिए वह सब चले गये। फिर पहरा और कड़ा कर दिया गया। प्रिया ने कमरे का दरवाजा बंद किया और कपड़े उतारने लगी। कपड़े उतारकर अभी वह शयन वस्त्रों को भी न पहन पाई थी कि एक अलमारी में से मास्टर ब्रेन बाहर निकला। वह उसे देखकर चौंकी तथा दोनों हाथों से सीना छुपाने लगी।

'मेरा विचार है कि इस दशा में तुमको लोगों को भीतर बुलाने का साहस नहीं होगा।'

'मैं शोर मचा दूंगी।'

'मचाओ। खूब शोर मचाओ। लोग भीतर आकर तुम्हें इसी हालत में देख लेंगे। मास्टर ब्रेन बोला और वह सिटपिटाकर रह गई। फिर वह आगे बढ़ा और दोनों हाथों से उसकी बाँह पकड़कर अपनी ओर खींचते हुए बोला—

'तुम एक हसीन नागिन हो...समझीं।'

'तुम चाहते क्या हो ?'

'मैं तुम जैसी आवारा लड़कियों से कुछ नहीं चाहता।' मास्टर ब्रेन ने उसे भींचकर कहा और जब वह ढीली पड़ने लगी तो उसे जोर से पलंग पर धक्का दे दिया...प्रिया की हलकी सी चीख निकल गई।

'तुम स्वार्थी हो।'

'प्रिन्स...।' प्रिया इतना ही कह पाई थी कि मास्टर ब्रेन दरवाजा खोलकर बाहर निकल आया। उसे पता था कि जब वह कपड़े पहनकर शोर मचाना शुरू करेगी, वह कोठी के बाहर निकल गया होगा।

उन्नीस

कोमल इस समय मिनी स्कर्ट में बड़ी सुन्दर लग रही थी। उसका अंग तो गुलाबी था ही किन्तु कपड़ों का रंग भी गुलाबी था और इस वक्त वह गार्डन चेयर पर गुलाबों की झाड़ियों के बीच बैठी कोई किताब पढ़ रही थी।

मास्टर ब्रेन क्योंकि उसके पीछे की ओर से आ रहा था सो वह उसे देख नहीं पाई और जब वह सामने आ गया तो उसने अपनी बड़ी

बड़ी कटोरा सी आँखें उठाकर उसे देखा, फिर सुरीले मगर अचम्भे से भरे स्वर में पूछा—

'आप कौन हैं ?'

'बन्दे को मास्टर ब्रेन कहते हैं।'

'क···क···क्या ?' वह बोली और जोशीले किन्तु बौखलाये हुए भाव से खड़ी हो गई।

'प···पि···प्रिन्स।' फिर वह हकलाकर बोली—

'आपका···देश का···राष्ट्र का सेवक।' मास्टर ब्रेन झुककर बोला—

'विश्वास नहीं होता।' वह स्वयं पर काबू पाकर बोली।

'आ जायेगा···और यदि न भी आये तो कोई फर्क नहीं पड़ता।'

'ओह, आप बैठिये तो।'

'और आप ?'

'मैं दूसरी कुर्सी मंगवा दूँ···' वह बोली फिर उसने नौकर को संकेत किया। थोड़ी सी देर में ही एक और कुर्सी आ गई। दोनों आमने-सामने बैठ गये। कोमल ने टांग पर टाँग चढ़ा ली थी इसलिये उसकी रानों का भीतरी भाग काफी भीतर तक दीख रहा था। मास्टर ब्रेन ने कोमल की ओर देखा और फिर उसके सौन्दर्य का अवलोकन करने लगा। वह सचमुच गुलाब का ताजा फूल लग रही थी।

'मैं आपको देखकर नर्वस हो उठी हूं।' वह हँसती हुई बोली। हँसने से उसकी आँखें और भी चमकने लगीं।

'घबराइये मत···मैं कुछ सवाल पूछकर चला जाऊँगा।'

'सवाल ?'

'जी हाँ···नरेन्द्र के विषय में।'

'नरेन्द्र···' वह उदास सी हो गई।

'मुझे दुःख है कि मैं इस शोकजनक कहानी को फिर से ताजा

करने जा रहा हूं। मगर नरेन्द्र की मौत व उसका जीवन इतने रहस्य-मयी हैं कि मुझे अब तक इसमें रुचि लेनी पड़ी है।'

'क्या आप इस केस में रुचि ले रहे हैं?'

'जी हाँ!'

'किंतु पुलिस का विचार है कि उसने आत्म हत्या की है।'

'यह पुलिस का विचार है मेरा नहीं।'

'क्या आपका ऐसा विचार नहीं है?'

'बिल्कुल नहीं।'

'अब आप इसमें रुचि क्यों ले रहे हैं?'

'क्या आप नहीं चाहतीं कि मैं इसमें रुचि लूं।'

'नहीं यह बात तो नहीं। कदाचित आपको यह नहीं पता कि मैं उससे केवल मुहब्बत ही नहीं करती थी बल्कि वह मेरा मंगेतर भी था। मैं यह पसंद नहीं कर सकती कि उसकी आत्मा को दुःख पहुंचे।'

'उसकी आत्मा को बिल्कुल दुःख नहीं पहुंचेगा।'

'तो पूछिये आप क्या पूछना चाहते हैं?'

'नरेन्द्र की मौत के बारे में आपका क्या मत है हत्या...या आत्म हत्या...।'

'मैं क्या कह सकती हूं...यह कत्ल भी हो सकता है व आत्महत्या भी।'

'यदि उसे कत्ल किया गया है तो आपके विचार में किसने किया है?'

'इस विषय में मैं कुछ नहीं कह सकती।'

'अच्छा मैं माने लेता हूं कि उसने आत्महत्या की। क्या आप बता सकती हैं कि क्यों की होगी?'

'मेरा विचार है वह परेशान हो गया था।'

'किस बात से?'

'उसके सम्बन्ध प्रिया से भी थे। प्रिया ने भरी महफिल में उसका अपमान किया था। वह बड़े ही भावुक स्वभाव का व्यक्ति था··· इसलिए आत्महत्या कर ली।'

'मगर यहाँ यह प्रश्न उठता है क्या वह किसी ऐसे मौके के लिये हमेशा अपने पास बिष रखता था ?'

'मैंने इस पहलू से कभी नहीं सोचा।' वह जल्दी से बोली।

'फिर यह कि नरेन्द्र के पास से ऐसी कोई वस्तु नहीं मिली जिसमें रखकर जहर लाया गया हो।' वह बोला—'इससे साफ झलकता है कि विष किसी पावडर रूप में था जिसे सूंघते ही वह मर गया। और जहर वह अपने साथ नहीं लाया था तो फिर उस भरी महफिल में उसे विष किसने दिया···कौन था ऐसा व्यक्ति जो उसे जहर देता ?'

'मैं भला क्या कह सकती हूं ?'

'क्या आप अन्य कोई ऐसा कारण बता सकती हैं जिसकी वजह से उसने इतने ड्रामाई ढंग से आत्म-हत्या की हो···उस दिन वह दोपहर से ही आपके साथ था। क्या आपने उसकी तबियत में कोई परिवर्तन पाया था ?'

'नहीं···वह सदा की भाँति शोक व चंचल था।'

'फिर आपने आत्महत्या का विश्वास कैसे कर लिया ?'

'पुलिस की जाँच पड़ताल का यही नतीजा था।'

'मैं पुलिस का नहीं आपका विचार ज्ञात करना चाहता हूं।'

'असल में मैं अपना मत व्यक्त करते हुए घबराती हूं।'

'वह क्यों ?'

'इसलिए कि प्रिया तथा आराधना दोनों मेरी सखियाँ हैं।'

'आपका विचार है कि उन दोनों में कोई कातिल नहीं हैं।'

'जी···यदि आप गम्भीरता से स्थिति पर विचार करें तो यही बात प्रकट होगी।'

'क्या आराधना भी नरेन्द्र में दिलचस्पी रखती थी···?' उसने पूछा।

'हां एक समय वे सब एक दूसरे के काफी निकट थे।'

'क्या आराधना या प्रिया को यह पसन्द न था कि नरेन्द्र तुम्हारे साथ रहे या तुमसे विवाह करे।'

प्रिया भी नरेन्द्र से शादी करना चाहती थी उसे अपने मिनिस्टर बाप पर बड़ा घमंड था। आराधना बड़ी संकुचित दृष्टिकोण वाली कमीनी लड़की है। बस मैं इससे अधिक कुछ नहीं कह सकती।'

'क्या आपको विदित है कि नरेन्द्र कौन था—क्या था ?'

'हां ! वह एक जागीरदार का लड़का था।'

'यह गलत है···मैंने नरेन्द्र के बारे में सब कुछ जान लिया है। वह एक गांव का अनाथ लड़का था। उसकी एक जवान बहिन थी जिससे मिलने वह कभी-कभी जाया करता था। वह विधवा थी तथा उसका पति काफी दौलत छोड़कर मरा था और वही नरेन्द्र का खर्चा उठाती थी। इतनी सी रकम क्योंकि पूरी नहीं पड़ती थी सो नरेन्द्र अपनी मित्र लड़कियों से पैसा ऐंठता रहता था। क्योंकि वह सुन्दर था और कसरती बदन रहता था इसलिए लड़कियां उस पर जान छिड़का करती थीं। वह प्रायः ही उच्च घरों की लड़कियों पर हाथ साफ करता था। अब कदाचित तुम्हें भी इस बात का एहसास होगा कि तुम भी उसे काफी रुपया दे बैठी हो। जिसका तुमको पहिले पता नहीं था।'

'हां !' वह गर्दन हिलाकर बोली।

'इसके अतिरिक्त वह मुजरिम भी था।'

'मुजरिम !' वह बड़ी जोर से चौंकी।

'क्या उसने सलोमी नामक किसी लड़की का उल्लेख किया था कभी ?'

'नहीं !'

मास्टर ब्रेन ने संक्षेप में उसे सलोमी तथा नरेन्द्र के बारे में बताया तथा टामी का उल्लेख भी किया। कोमल आँखें फाड़े यह सब सुनती रही और फिर सुनते-सुनते उसकी आँखें भर आयीं।

'तो यह था नरेन्द्र तुम्हारा मंगेतर।' अन्त में वह बोला और कोमल सिसकने लगी।

'क्या यह सब सच है?' उससे हिचकी लेकर पूछा।

'यदि तुम्हें यह विश्वास है कि मैं मास्टर ब्रेन हूं तो तुम्हें मेरी बातों पर भी विश्वास होना चाहिए।'

'मुझे विश्वास है। कई बार उसका बर्ताव बड़ा विलक्षण हो उठता था।' वह आंसू पोंछती हुई बोली। मास्टर ब्रेन खामोश होकर उसे सम्भलने का मौका देने लगा।

'तो क्या यह हो सकता है कि उसे किसी मुजरिम ने कत्ल किया हो?' बड़ी देर पश्चात कोमल ने पूछा।

'हां!' मास्टर ब्रेन ने गर्दन हिलाई और दोनों सोचने लगे।

'आपके डैडी आजकल क्या करते हैं?' फिर उसने पूछा।

'वह...' कोमल बोली—समझ लीजिए रिटायर्ड जीवन बिता रहे हैं। हमारी कपड़े की एक मिल है और एक गन्ने की। सारा कारोबार मैनेजर लोग सम्भालते हैं।'

'यह दोनों मिलें उन्होंने जर्मनी से लौटने के पश्चात अर्थात आज से लगभग पाँच वर्ष पहिले लगाई थीं।'

'जी हाँ! डैडी बचपन से ही विविध देशों में रहे...वहाँ उन्होंने रुपया कमाया।'

'आपकी ममी कहाँ की थीं?'

'वह जर्मनी की ही थीं।'

'जहाँ तक मुझे ज्ञात है आपकी ममी आपके जन्म के कुछ दिन बाद ही मर गईं।'

'जी ? जी हाँ !' उसने चौंककर कहा । फिर उसके चेहरे पर हल्का-हल्का भय छाने लगा ।

'मुझे दुःख है कि मैंने स्वर्गीया की याद ताजा कराई, किन्तु आपने उन्हें देखा तक नहीं इसलिए आपको अधिक दुख नहीं होगा ।'

'जी हाँ ! दुःख का एहसास तो कम है । यों कहिये कि जब लोग प्रेम पूर्वक अपनी ममी का जिक्र करते हैं तो मुझे उनकी भावनाओं पर आश्चर्य होता है क्योंकि मैं मात्र स्नेह से वंचित हूं ।'

'जी हाँ ! और यहीं यह भी साबित हो जाता है कि प्रेम का सम्बन्ध खून तथा रिश्ते से नहीं बल्कि शारीरिक लगाव से है । मौजूदगी तथा अस्तित्व से है । क्योंकि मुहब्बत का सम्बन्ध शारीरिक लगाव से है इसलिए अधिक प्रेम करने के लिए शरीर का सुन्दर होना जरूरी है । मैं तो हमेशा यह कहता चला आया हूं कि प्रेम तथा सेक्स का आपस में बड़ा गहरा सम्बन्ध है । अन्यथा बूढ़े आदमी अपनी बूढ़ी पत्नियों को छोड़कर जवान स्त्रियों से इश्क नहीं किया करते ।'

'शायद आप ठीक कहते हैं ।' वह मृदु स्वर में बोली फिर पूछा—'किन्तु आपको मेरी ममी के विषय में कैसे पता चला ?'

'यह मेरी अपनी जानकारी है ।' मास्टर ब्रेन बोला और बताने लगा ।

'जब आपके पिताजी ने उनसे शादी की थी तो वह एक धनवान विधवा थीं ''उनका एक लड़का भी था जिसकी आयु लगभग दस वर्ष थी ।'

'जी हाँ ! आपको तो सब कुछ पता है—वह मेरा भाई था वह ममी के पहिले पति से था और उनका पहिला पति काफी धनवान था ।'

'आजकल वह कहाँ है ?'

'मेरा भाई अर्थात विलियम ?'

'हाँ !'

'उसके सम्बन्ध में भी एक दर्दनाक कहानी है। जब वह बड़ा हुआ तो आवारा हो गया तथा मुजरिमों के साथ मिल गया। उसे कई बार जेल हुई। डैडी ने बहुत चाहा कि वह सम्हल जाये। उन्होंने उस पर पानी की तरह रुपया बहाया, मगर वह दिन ब दिन बिगड़ता ही गया। हमारे मुहल्ले में एक सुन्दर जवान लड़की थी वह उससे प्रेम करता था किन्तु वह लड़की उससे घृणा ही करती थी। जब उस लड़की की शादी निश्चित हो गई तो विलियम ने उसके मंगेतर को खूब पीटा—उसका हाथ तोड़ डाला। विलियम को सजा हुई और उस लड़की की शादी कुछ दिनों के लिये रुक गई। जब उस लड़के का हाथ ठीक हो गया तो शादी की तारीख फिर से निश्चित हुई। फिर दो बातें हुईं एक तो यह कि विलियम जेल से भाग निकला। दूसरे यह कि ठीक शादी से पहिली रात को वह लड़की अपने कमरे में मुर्दा पाई गई। उसने विष खा लिया था।'

'विष खा लिया था...अथवा विलियम ने उसे विष दे दिया था।'

'यह साबित नहीं हो सका—शायद उस लड़की ने आत्महत्या कर ली थी। क्योंकि जिस समय उसका मंगेतर बीमार था उसका ताल्लुक किसी और लड़के से हो गया था सो उसने आत्महत्या की। यह पुलिस का मत था जो उन पत्रों के प्रकाश में कायम हुआ था जो लड़की के बाक्स से प्राप्त हुये थे।'

'विलियम का क्या हुआ ?'

'उसे बहुत बहुत ढूंढा गया मगर वह लापता हो गया और अन्ततः पुलिस ने उसे खोजना भी छोड़ दिया।'

'क्या वह तुमको कभी मिला—यानी कभी बाद में ?'

'कोमल उत्तर देने से पहिले कुछ झिझकी तो मास्टर ब्रेन बोला—

'सच सच बताना...' मास्टर ब्रेन का स्वर कुछ तेज था। कोमल

ने उसकी आँखों में झाँका और चमक की ताव न लाकर गर्दन घुमाकर बोली।

'मिला था•••वह मुझसे अधिक सहायता माँगने आया था।'

'आपने उसकी सहायता की ?'

'हाँ ! मैंने उसे बहुत सा रुपया तथा सोना दिया।'

'यह जानते हुए भी कि वह फरार अपराधी है और कायदे के अनुसार तुम्हें पुलिस को सूचना देनी थी।'

'वह मेरा भाई था।'

'आप उसे बहुत प्यार करती थीं ?'

'हाँ !'

'क्या वह आपको यहाँ भी मिला।'

'नहीं।'

'क्या उसे पता है कि आप लोग यहाँ हैं।'

'मैं भला किस प्रकार बता सकती हूं।'

'क्या आपको विश्वास है कि वह जिन्दा है।'

'इस सम्बन्ध में भी मैं कुछ नहीं कह सकती।'

'कदाचित आपको याद होगा कि मछेरों की बस्ती में एक झोपड़े में से एक सिर कटी लाश मिली थी तथा जर्मन पुलिस का विचार था कि यह विलियम की लाश है। लाश के दोनों हाथ भी कलाई से कटे हुए थे शरीर पर कपड़े भी नहीं थे। पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट से ज्ञात होता था कि यह काम उसे शराब पिलाकर मूर्छित करने के पश्चात किया गया। न उसके हाथ हैं न सिर। क्या आपको व आपके डैडी को शनाख्त के लिए वह लाश दिखाई गई थी ?'

'हाँ ! मगर हम यह न बता सके कि वह विलियम की लाश है।'

'लाश के बारे में डाक्टरों का एक विचार यह भी था कि विलियम ने या तो विष खा लिया था या उसे विष दिया गया था।

'हाँ ।' वह बोली ।

'और यह वही जहर था जिससे उस लड़की की मौत हुई थी जिसकी शादी होने वाली थी तथा विलियम उससे प्रेम करता था—लड़की का क्या नाम था ?'

'वीटो !'

'पुलिस का विचार था कि यह विलियम की लाश है पहिले उसने शराब दी—फिर विष का प्रयोग किया—और मर गया—यहीं से यह विचार भी पक्का हो गया कि वीटो ने आत्महत्या नहीं की थी बल्कि उसे कत्ल ही किया गया था और कातिल था विलियम !'

'जी हाँ !'

'किन्तु इसमें पुलिस को एक और तीसरे व्यक्ति की दिलचस्पी भी दिखाई दी और यह वही व्यक्ति था जिसने विलियम का सिर तथा दोनों हाथ काटकर गायब कर दिए थे । दोनों हाथ व सिर ढूँढ़ने पर भी पुलिस को आज तक नहीं मिल सके ।'

'जी !'

'मगर वह तीसरा व्यक्ति कौन था । पुलिस को उस झोंपड़े में सिवाय शराब की कुछ बोतलों के कुछ ऐसा चिन्ह नहीं मिला जिससे उस तीसरे व्यक्ति का सुराग लगाया जा सके ।'

'वह तीसरा व्यक्ति मेरे विचार से तो वीटो का मंगेतर ही हो सकता है । स्पष्ट है कि विलियम से उसे अत्यन्त घृणा थी ।'

'हाँ ! यह हो सकता है । जर्मन पुलिस ने भी इस विषय में पड़ताल की थी—किन्तु उन्हें असफलता न हुई ।'

'जी हाँ !'

'क्या विलियम आपको यहाँ कभी नहीं मिला ?'

'नहीं ।'

'आप उसे कितनी बार रुपया दे चुकी थीं ।'

'कई बार ।'

'क्या आपको परेशानी नहीं होती थी ?'

'नहीं···वरन मैं सोचती थी कि इस प्रकार शायद मेरा भाई सुधर जाये।'

'वहाँ आपका विवाह भी तो होने वाला था ?'

'जी हाँ···मगर शादी के बारे में मेरा नसीब बहुत खराब है। जिससे मेरी शादी होने वाली थी वह बीमार पड़ा और डाक्टरों की लापरवाही से मर गया।'

'क्या यह घटना सिर कटी लाश मिलने से पहिले की थी ?'

'हां···वह लाश बाद को मिली थी और इस प्रकार मुझे एक शंका होने लगी थी।' कोमल ने बताया।'

'कैसी शंका ?'

'प्रकट में तो मेरे मंगेतर की मौत डाक्टरों की लापरवाही से हुई थी। उन्होंने उसे किसी दवा की खुराक अधिक दे दी थी। मगर मेरा विचार है कि इसमें भी विलियम का हाथ था। वह शायद नहीं चाहता था कि मेरी शादी हो।'

'क्यों ?'

'क्योंकि इसके पश्चात डैडी की दौलत की मैं अकेली वारिस थी। किन्तु शादी के पश्चात मेरा पति जो एक सफल वकील था, सारी दौलत का मालिक होता। इस प्रकार विलियम को शक था कि मेरे द्वारा उसे जो दौलत मिलती थी वह नहीं मिल पायेगी।'

'अर्थात आपको इस बात का यकीन भी है कि वह सिर कटी लाश भी विलियम की थी।'

'जी हाँ—हकीकत तो यही है।'

'आप लोग जर्मनी छोड़कर भारत क्यों चले आये ?'

'परिस्थितियां विषम थी इसलिए चले गये थे। मेरे साथ डैडी भी परेशान थे। फिर उन्हें भारत लौटने की इच्छा शुरू से ही थी इसलिए

इस मौके का लाभ उठाकर वह यहां चले आये और यहां दो फैक्ट्रियां चालू कर दीं।'

'क्या आपके मंगेतर के लिए भी उसी विष का प्रयोग किया था जो वीटो के लिये किया गया था ?'

'शायद···उसकी मौत अचानक ही हुई थी।'

'नरेन्द्र की मौत के पश्चात् आपका क्या विचार है ?'

'मैंने शादी का विचार त्याग दिया है।'

'क्यों···?'

'क्योंकि मेरे भाग्य में पति नहीं है। मैंने नरेन्द्र से प्रेम किया था किन्तु वह दूसरी लड़कियों की जलन के कारण आग में जलकर मर गया।'

'आपके डैडी कोशिश तो कर रहे होंगे।'

'वह मेरे डैडी हैं और जानते हैं कि मैं शादी की आयु की हद तक पहुंच गई हूं।'

'शादी के सम्बन्ध में मैं आपके विचार जानना चाहूंगा।'

'क्या आप मेरे साफ कहने को निर्लज्जता तो नहीं कहेंगे।'

'बिल्कुल नहीं···और विशेष रूप से अब जबकि मुझे ज्ञात है कि आप पश्चिम में पली तथा बढ़ी हैं।'

'हां ! मैं भी यही कहना चाहती थी। मैं पश्चिम में बड़ी हुई हूं, इसलिये मैं बड़े स्वतन्त्र विचारों वाली हूं।"

'जी हां !'

'जब मैं जवान हुई अर्थात् मुझे इस बात का एहसास हुआ कि मैं यौवन की सीमा में प्रवेश कर चुकी हूं तो उसी दिन से मेरे मन में शादी की इच्छा जागी तथा बढ़ती हुई आयु के साथ यह इच्छा भी बढ़ती गई।'

'तो आपने उसी उम्र में विवाह क्यों नहीं···।'

'यह तो आपको ज्ञात ही है कि मैं काफी सुन्दर हूं। पश्चिम में चेहरे की सुन्दरता को इतना नहीं देखा जाता जितने शरीर की बनावट तथा उसके सौन्दर्य को परखा जाता है। मेरी कमर, कूल्हे, टांगें इतनी सुन्दर हैं कि जब मर्द उन्हें देखते हैं तो देखते रह जाते हैं, मेरे पीछे-पीछे चले आते हैं। मेरी टांगों को देखकर शायद वहां के लोगों को बड़ी शान्ति मिलती थी। इसलिये मैं छोटा स्कर्ट पहिनती हूं। अनेक विज्ञापन कम्पनियाँ मेरी कमर-कूल्हों तथा टांगों द्वारा विज्ञापन देते थे, और मैं उनसे भरपूर मुआवजा लेती थी। तात्पर्य यह कि मेरे अनेकों आशिक भी थे। किन्तु मुझे एक अच्छे सुन्दर तथा बलवान प्रेमी की जरूरत थी। मगर इतनी उम्र तक तीनों विशेषतायें किसी आशिक में नहीं मिलीं। जब मैं उस वकील से मिली तो पूरी तरह युवा हो चुकी थी···मगर वह मर गया। नरेन्द्र में भी मुझे तीनों खूबियाँ दिखाई दीं और वह भी मर गया।' वह उदास हो गई।

'मुझे आपके हालात सुनकर काफी दुःख हुआ है।' मास्टर ब्रेन बोला और खामोश हो गया। अब तक वहां काफी धूप आ गई थी सो कोमल बोली—

'क्या अब हम लोग अन्दर चलें।'

'मुझे कोई आपत्ति नहीं है।' वह बोला और दोनों खड़े हो गये। मास्टर ब्रेन ने उसकी टांगों-कूल्हों तथा कमर को देखा। वह सब उसी प्रकार सुन्दर तथा आकर्षक थे जैसा उसने बताया था। एक बार तो उसका भी मन हुआ कि वह उसे अपनी बाहों में जकड़ ले।

दोनों चलते हुए शानदार लॉन से गुजरे। फिर सुन्दर सीटिंग रूम में आकर बैठ गये। यहां भी मास्टर ब्रेन उसके शारीरिक सौन्दर्य का दर्शन करता रहा।

'जर्मनी में आपकी हॉबी क्या थी?'

'मुझे बागबानी का इतना शौक था कि हमारे यहां कोई बागबान

नौकर नहीं था बल्कि पेड़ पौधों से सम्बद्ध सारा काम मैं स्वंयं करती थी। हमारी कोठी के गिर्द उत्तम व सुन्दर फूलों की क्यारियाँ इतनी अधिक लगी थीं कि लोग केवल उन क्यारियों को देखने आया करते थे। मैंने इसी विषय में एक कोर्स भी किया था।'

'मगर यहाँ तो मुझे कुछ अधिक फूल दिखाई नहीं देते।'

'हाँ! यहाँ आकर मेरा यह शौक बहुत कम हो गया है। इसका एक कारण नरेन्द्र भी था। उसने मुझे अधिक समय तक व्यस्त रखा था।'

'आपके डैडी कहाँ हैं?'

'वह कपड़ा मिल का निरीक्षण करने को गये हैं।'

'कब आयेंगे?'

'शाम को आयेंगे मगर आप अब लंच करके ही जाइये। समय हो गया है।' मास्टर ब्रेन को उठता देखकर उसने शीघ्र कहा किन्तु मास्टर ब्रेन खड़ा हो गया था। वह पास आकर उसका हाथ पकड़कर बोली—

'प्रिन्स...!' इसके पश्चात् उसकी आवाज बन्द हो गई तथा शरीर धीरे-धीरे काँपने लगा। मास्टर ब्रेन समझ गया इसलिये उसने अपना हाथ उसकी कमर में डालकर अपनी ओर खिसका लिया।

'प्रिन्स! मेरी जिन्दगी का अंधेरा दूर कर दो।' वह भावुक स्वर में बोली और अपना चेहरा ऊपर कर दिया। मास्टर ब्रेन ने अपने होंट उसके होटों पर रख दिये। दोनों एक दूसरे से उस समय तक चिपके खड़े रहे जब तक कि दोनों के शरीर आग की तरह गर्म न हो उठे।

'प्रिन्स...!' वह बोली, किन्तु इसके पश्चात् मास्टर ब्रेन ने स्वयं को उससे प्रथक कर लिया और कहा।

'अभी नरेन्द्र को मरे हुए अधिक दिन नहीं गुजरे।'

'तुम्हीं ने तो कहा था कि मुहब्बत अस्तित्व से होती है । नरेन्द्र का अब कोई अस्तित्व नहीं । मैं उसे भूल रही हूं ।'

'ठीक है । जब पूरी तरह भूल चुको तो बता देना ।'

'मगर तुम मुझसे मिलोगे ?'

'अवश्य ! तुम जैसी शानदार लड़की से कौन मिलना पसन्द नहीं करेगा ।'

'शुक्रिया प्रिंस !' वह चहककर बोली—'लंच करके जाना ।'

'लंच के बजाये यदि तुम मुझे अपनी कोठी दिखाओ तो आभार मानूंगा ।'

'अवश्य आओ !' वह बोली और उसका हाथ पकड़कर चलने लगी । कई कमरों पर आधारित वह कोठी बड़ी शानदार थी । अन्त में वह उसे अपने कमरे में लाई जहाँ वह सोती थी ।

'यह मेरा शयन-कक्ष ही नहीं सब कुछ है क्योंकि मैं यहीं बैठकर पढ़ती भी हूं । शृंगार भी यहीं करती हूं । जब मन घबराता है तो इसकी खिड़की ख़ोल लेती हूं ।' उसने खिड़की की ओर संकेत किया और मास्टर ब्रेन ने पास आकर खिड़की खोल दी । खिड़की बाग में खुलती थी दूसरी ओर अच्छा बगीचा था ।

'क्या तुमको डर नहीं लगता…इधर से कोई भी कूदकर आ सकता ।'

'रात को चौकीदार रहता है और उसका कुत्ता भी बड़ा [illegible] ।' उसने बताया फिर हंसकर बोली—'रात को यदि आना हो तो मुझे फोन कर देना…मैं गेट पर तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगी ।' वह उसके सामने आत्म-समर्पण के से भाव से बोली—मास्टर ब्रेन ने उसे झुककर चूम लिया ।

'प्रिन्स ! मेरी जिन्दगी का अंधेरा दूर कर दो ।' उसने फिर [illegible] ।

'कोमल ! मुझे तुमसे पूरी हमदर्दी है ।' मास्टर ब्रेन ने [illegible] और [illegible] हो गया फिर दोनों सीटिंग रूम में आ गये । हालांकि कोमल लंच के लिये काफी आग्रह कर रही थी किन्तु मास्टर ब्रेन फिर नहीं रुका । वह उसे जाता हुआ देखती रह गई ।

'तुम्हीं ने तो कहा था कि मुहब्बत अस्तित्व से होती है। नरेन्द्र का अब कोई अस्तित्व नहीं। मैं उसे भूल रही हूं।'

'ठीक है। जब पूरी तरह भूल चुको तो बता देना।'

'मगर तुम मुझसे मिलोगे?'

'अवश्य! तुम जैसी शानदार लड़की से कौन मिलना पसन्द नहीं करेगा।'

'शुक्रिया प्रिंस!' वह चहककर बोली—'लंच करके जाना।'

'लंच के बजाये यदि तुम मुझे अपनी कोठी दिखाओ तो आभार मानूंगा।'

'अवश्य आओ!' वह बोली और उसका हाथ पकड़कर चलने लगी। कई कमरों पर आधारित वह कोठी बड़ी शानदार थी। अन्त में वह उसे अपने कमरे में लाई जहां वह सोती थी।

'यह मेरा शयन-कक्ष ही नहीं सब कुछ है क्योंकि मैं यहीं बैठकर पढ़ती भी हूं। शृंगार भी यहीं करती हूं। जब मन घबराता है तो इसकी खिड़की खोल लेती हूं।' उसने खिड़की की ओर संकेत किया और मास्टर ब्रेन ने पास आकर खिड़की खोल दी। खिड़की बाग में खुलती थी दूसरी ओर अच्छा बगीचा था।

'क्या तुमको डर नहीं लगता…इधर से कोई भी कूदकर आ सकता है।'

'रात को चौकीदार रहता है और उसका कुत्ता भी बड़ा जालिम है।' उसने बताया फिर हंसकर बोली—'रात को यदि आना हो तो फोन कर देना…मैं गेट पर तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगी।' वह उसके …ने आत्म-समर्पण के से भाव से बोली—मास्टर ब्रेन ने उसे मुस्करा… चूम लिया।

'प्रिन्स! मेरी जिन्दगी का अंधेरा दूर कर दो।' उसने फिर …।

'कोमल! मुझे तुमसे पूरी हमदर्दी है।' मास्टर ब्रेन ने क…। और …हो गया फिर दोनों सीटिंग रूम में आ गये। हालांकि कोमल लंच …में काफी आग्रह कर रही थी किन्तु मास्टर ब्रेन फिर वहां नहीं … वह उसे जाता हुआ देखती रह गई।

बीस

'मैं सलोमी का रिश्तेदार हूं।' उस बूढ़े व्यक्ति ने सिविल सर्जन से कहा—और सिविल सर्जन अपनी नाक पर चश्मा चढ़ाकर उसे देखने लगा।

'आप मुझे इस प्रकार क्यों घूर रहे हैं ?' आखिर उस बूढ़े व्यक्ति ने पूछा।

'असल में जब से सलोमी का देहान्त हुआ है उसके कई रिश्तेदार आ चुके हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने को सलोमी का रिश्तेदार बताता है तथा चला जाता है।'

'क्या अब तक सचमुच कई लोग आ चुके हैं ?' बूढ़े व्यक्ति ने उत्सुकता भरे स्वर में पूछा।

'जी हाँ ! क्या उन लोगों ने आपको सूचना नहीं दी ?'

'नहीं ! मैं सलोमी का दादा हूं। मुझे उसकी मौत की सूचना उस समय मिली जब मैं स्वदेश से बहुत दूर था। मैं सीधा यहीं चला आया।'

'क्या सलोमी घर पर नहीं रहती थी ?'

'वह हिप्पियों के प्रभाव में आकर यहाँ चली आई थी।'

'ओह !' सिविल सर्जन ने कहा फिर पूछा।

'अब आप क्या मालूम करना चाहते हैं ?'

'मैं उसके बारे में सब-कुछ मालूम करना चाहता हूं।'

'उसे मूर्च्छित अवस्था में यहाँ लाया गया था तथा लाने वाले का नाम मिस्टर नरेन्द्र था। मिस्टर नरेन्द्र कालेज के एक विद्यार्थी थे और सलोमी शायद उनके संग ही रहती थी।'

'उनके साथ रहती थी ?' बूढ़ा चौंका।

'जी हां ! जिस समय मैंने सलोमी का निरीक्षण किया तो विदि

हुआ कि उसकी छोटी आंत···जिसे एपिंडिक्स कहते हैं···फट चुकी थी। इसके कारण पीप पेट में फैल गया था तथा विष ने उसके रक्त में अपना असर शुरू कर दिया था। अतः ऐसी हालत में उसका आपरेशन करना व्यर्थ था। सो उसका आपरेशन न हो सका और वह दो-तीन दिन पश्चात् मर गई।'

'क्या उसके बचने की कोई आशा नहीं थी ?'

'नहीं···विष बहुत अधिक फैल चुका था।'

'आह···क्या मैं उस स्थान को देख सकता हूं जहाँ वह रखी गई थी ?'

'जरूर !' सिविल सर्जन ने कहा और घंटी बजाई। चपरासी शायद बाहर मौजूद न था सो उन्हें प्रतीक्षा करनी पड़ी, इसी बीच बूढ़े ने पूछा।

'क्या वह कुछ कह गई थी ?'

'नहीं···!'

'क्या उसे होश भी नहीं आया था ?'

'रात को दो एक बार होश आया तो वह उठ-उठकर भागने लगी। क्योंकि उसी रात वार्ड में दो औरतें मर गई थीं इसलिए डाक्टरों तथा नर्सों का अधिकतर ध्यान उसकी ओर था।'

'जिस समय वह मरी कोई उसके पास था क्या ?'

'मिस्टर नरेन्द्र मौजूद थे।'

'यह मिस्टर नरेन्द्र इस समय कहाँ मिलेंगे।'

'खेद है कि वह आपको नहीं मिल सकते···कुछ दिन हुए बड़े रहस्य-मय ढंग से उनकी मौत हो चुकी है।'

'क्या सच !'

'जी हाँ ! आप अखबार देख लेना।'

'माई गौड···खैर···।'

इतने में चपरासी भीतर आया तथा सिविल सर्जन ने उससे कहा—

'इन साहब को जनाना सर्जिकल वार्ड की सिस्टर से मिला दो।'

'आइये साहब !' चपरासी बोला, तथा बूढ़ा व्यक्ति उसके साथ

बाहर आ गया। वे दोनों सर्जिकल जनाना वार्ड की ओर बढ़े तो बूढ़े ने प्रश्न किया।

'अब तक कुल कितने आदमी सलोमी के बारे में पूछने आ चुके हैं...?'

'यही कोई तीन-चार।'

'क्या कोई छोटे से कद का आदमी भी आया था?'

'मेरे विचार से नहीं...मगर आप यह क्यों पूछ रहे हैं?'

'यों ही।'

इतने में वह सर्जिकल वार्ड के पास आ गये। बूढ़ी सिस्टर अपनी आँखों पर पतली क़मानी का चश्मा चढ़ाये पतले स्वर में नौकरों पर चिल्ला रही थी। किन्तु नौकरों के हाव-भाव से प्रकट था कि वह उसके चिल्लाने से कुछ भी प्रभावित नहीं है। एक आया तो उसे काट खाने वाले भाव से घूर रही थी।

'खाने को दिये जाओ मगर काम करते हुए इनकी अम्माँ मरती है।' सिस्टर कह रही थी।

'क्या बात है भैया तू क्यों आया है?' सिविल सर्जन के चपरासी को देखकर वह नर्म पड़ती हुई बोली।

'इन साहब को साहब ने भेजा है।' चपरासी ने बूढ़े की ओर संकेत किया।

'गुड मार्निंग सिस्टर।' बूढ़ा बोला—

'गुड मार्निंग।'

'मैं आपकी एक पुरानी पेशेंट सलोमी के बारे में कुछ पूछना चाहता हूं।'

'आखिर कितने लोग आयेंगे सलोमी के बारे में पूछने के लिये?' वह फिर चिल्लाने लगी और बोली—'आप भी उसके रिश्तेदार हैं।'

'जी हाँ! वह मेरी पोती थी।'

'जवान लड़की को इस प्रकार आवारा छोड़ दिया, आखिर क्या करते हैं आप लोग?'

'मुझे खेद है मगर अब कुछ नहीं किया जा सकता।'

'बेचारी कितनी सुन्दर व जवान थी।'

'जी हाँ !'

'पूछिये आपको क्या पूछना है।'

'मैं आपके आफिस में चलकर बात करूंगा।'

'जल्दी करिये मेरा भी टाइम हो रहा है।'

फिर दोनों आफ़िस रूम में आ गये जहाँ कागजात तथा रजिस्टर इत्यादि इधर उधर बिखरे पड़े थे तथा दवाओं की अलमारी अस्त-व्यस्त सी थी। वह पहले एक कुर्सी पर बैठी फिर बोली—

'बैठिये !' बूढ़ा बैठ गया और पूछने लगा।

'क्या सलोमी ने कोई बात आपको बताई थी ?'

'नहीं'''सब यही पूछते हैं और मैं 'नहीं' कहते-कहते थक गई हूं।'

'अच्छा यह बताइये, उसके पास कोई आया था ?'

'नहीं'''मिस्टर नरेन्द्र आये थे और अब वह भी मर गया है।'

'उस रात शायद दो औरतें और भी मर गई थीं।

'जी हाँ !'

'क्या आपको उनके नाम विदित हैं ?'

'मगर आपको उनके नामों से क्या मतलब ?'

'यह मैं फिर बताऊंगा। अभी केवल इतना बता दूं कि मैं सलोमी का दादा हूं।'

'मरने वालियों में से एक का नाम चन्द्रा वर्मा था तथा दूसरी का नाम श्रीमती रुखसाना रहमान।'

'क्या वह मुसलमान थी ?'

'हाँ ! नाम से ही प्रकट है।' सिस्टर झुंझला उठी।

'उनको क्या बीमारी थी ?'

'उसके पेट में बहुत बड़ी रसोली थी जिसे आपरेशन द्वारा निकाल दिया गया था।'

'यानी उनके पेट का आपरेशन हुआ था ?'

'जी !'

'सलोमी के पलंग का क्या नम्बर था ?'

'तीस !'

'मिसेज रुखसाना रहमान का ?'

'इकत्तीस !'

'क्या श्रीमती रहमान की मौत अचानक हुई थी ?'

'मौत बेखबरी में हुई···मगर उनकी हालत इनसे भी खराब थी, और हमने उनके पास पर्दा लगवा दिया था। शायद इसी कारण से जब उनकी हालत और अधिक बिगड़ गई तो किसी को पता तक न चल सका और वह मर गई। भोर होते ही उनकी मौत का पता चला।'

'शुक्रिया सिस्टर···वाई दा वे मिसेज रहमान का पता क्या था।'

'किन्तु आप यह सब क्यों पूछ रहे हैं।'

'सम्भव है सलोमी ने मिसेज रहमान को कुछ बताया हो और मिसेज रहमान अपने रिश्तेदारों को बता गई हों।'

'अच्छा मैं बताती हूं।' सिस्टर यह कहकर रजिस्टर देखने लगीं। इतने में छोटे से कद का एक आदमी भीतर आया। सिविल सर्जन का चपरासी उसके भी साथ था। सिस्टर ने एक नजर उसकी ओर देखा फिर पूछा—

'क्या यह भी सलोमी के बारे में ज्ञात करने आये हैं ?'

'हाँ !' चपरासी बोला और सिस्टर साश्चर्य उसे देखने लगी··· बूढ़ा व्यक्ति जल्दी से बाहर आ गया। किन्तु इससे पूर्व वह मिसेज रुखसाना का पता देख चुका था। फिर वह बाहर अपनी कार में उस छोटे कद वाले की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर पश्चात् छोटे कद वाला बाहर निकला तथा एक लम्बी कार की ओर बढ़ा। अगले ही क्षण बूढ़ा आदमी कार से उतरकर उस ओर आया तथा गुर्राती हुई आवाज में बोला—

'टॉमी मुझे विश्वास था कि तुम यहाँ जरूर आओगे।'

'तुम··मास्टर ब्रेन !' टॉमी चौंका फिर उसने जेब में हाथ डाला ही था कि मास्टर ब्रेन ने पंजों के बल घूमकर एक फौलादी सा घूंसा उसकी नाक पर मारा। टामी की चीख निकल गई। तथापि उसने रिवाल्वर निकाल ही लिया। किंतु बूढ़ा जो वास्तव में मास्टर ब्रेन था उसने उसकी कलाई थाम ली और समूची शक्ति से उसे नचाने लगा। टामी के हाथ से रिवाल्वर निकल गया और वह दूर जा पड़ा। किन्तु फिर गेंद की भांति उछलकर बड़ी तेजी से मास्टर ब्रेन से टकराया और दोनों अदना भैंसों की तरह लड़ने लगे।

इतने में हास्पिटस के स्टाफ को पता लग गया कि मास्टर ब्रेन की लड़ाई एक अपराधी से हो रही है सो वह सारा काम धाम छोड़कर उधर भागने लगे । लेडी डाक्टर यह जानने के लिए व्याकुल थी कि मास्टर ब्रेन कैसा है । अब मास्टर ब्रेन का बूढ़े वाला मेकअप बिगड़ता जा रहा था और बिगड़ जाने से वह डरावना सा लग रहा था ।

टामी भाग निकलना चाहता था सो बार बार अपनी का- की ओर भागता था । मगर मास्टर ब्रेन हर बार उसे नचा डालता । ..ब लोगों को इस बात का विश्वास हो गया कि बूढ़ा ही मास्टर ब्रेन है तो वह उसके वार की प्रत्येक सफलता पर तालियाँ बजाने लगे । इस बात ने टामी को और भी झल्ला दिया और झल्लाहट में उसने बार-बार किच-किचाकर हमला किया और हर बार बुरी तरह उसकी पिटाई हो गई । उधर लोगों ने उस पर पत्थर भी मारना शुरू कर दिया । इस बात से और भी वह झल्ला गया तथा उस पाइप की ओर बढ़ा जो दीवार से छत तक जाता था । फिर वह बन्दरों से भी अधिक फुर्ती से पाइप पर चढ़ रहा था । मास्टर ब्रेन ने उसका पीछा किया मगर उसमें टामी जैसी फुर्ती नहीं थी । पलक झपकने में टामी छत पर पहुंचा तथा एक ओर भागता चला गया ।

जब मास्टर ब्रेन ऊपर पहुँचा तो वह वहाँ कहीं न था सो वह जीने की ओर भागा तथा जीना उतरकर नीचे आ गया । उधर बड़ा शोर हो रहा था । लोग चिल्ला रहे थे ।

पकड़ो ! पकड़ो !' काफी कोलाहल मचा हुआ था । मास्टर ब्रेन ने भी उसी ओर भागना शुरू किया अब उसे पता चला कि टामी अपनी कार स्टार्ट करने में सफल हो गया है···उसने अपनी कार की ओर छलांग मारी और जब तक कार सड़क पर पहुँचे टामी बड़े वेग से दूर होता जा रहा था । किन्तु मास्टर ब्रेन ने भी अपनी कार की गति बढ़ाई । टामी की कार एक निर्जन सड़क पर आ गई । मास्टर ब्रेन की कार प्रतिक्षण दूर होती जा रही थी । किन्तु फिर एक गेंद टामी की कार से सड़क पर गिरी और मास्टर ब्रेन को ब्रेक लगाने पड़े । अगले ही क्षण वह गेंद धमाके से न केवल फट पड़ी बल्कि श्वेत सा धुंआ भी सड़क पर दूर-दूर तक फैलने लगा । मास्टर ब्रेन ने कार आगे नहीं बढ़ाई बल्कि घुमाकर वापसी के लिए दौड़ा दी । वह आज की विफलता

से झल्ला सा गया था। तथापि उसके दिमाग में एक स्कीम थी। वह रुखसाना रेहमान के रिश्तेदारों से मिलना चाहता था।

इक्कीस

जब कोमल की आंख खुली तो उसे अपने मुंह का मजा बड़ा कसैला सा जान पड़ा फिर जब वह उठी तो सिर चकराने लगा। उसने चारों ओर देखा तो कमरा नाचता सा प्रतीत हुआ। उसने दोनों हाथों से कनपटी दबाकर सिर झुका लिया तथा बड़ी देर तक यों हीं बैठी रही। बड़ी देर बाद उसने सिर उठाया और सम्हलने का प्रयत्न करती हुई सोचने लगी। उसे गहरी नींद आई है। बहुत गहरी'' क्या किसी ने उसे नींद लाने की दवा पिलाई थी— मगर कब ? डिनर पर कोई अजनबी तो था नहीं। सोने से पहिले वह जो दूध पिया था वह भी ठीक था फिर उसे क्या हुआ ? वह सोचती रही तथा उसका मस्तिष्क संयत होने लगा—तत्पश्चात उसने कमरे में चारों ओर दृष्टि दौड़ाई तो कुछ विचित्र सा जान पड़ा। प्रत्येक चीज अपनी जगह थी किन्तु फिर भी उसे यों प्रतीत हो रहा था जैसे कुछ खो गया है फिर वह चारों ओर देखती अंगड़ाई लेकर उठ गई।

दैनिक कार्यों से निवटकर भी उसके दिमाग में यही बातें घूम रही थीं कि उसे क्या हो गया है और इस कमरे से क्या चीज गायब है नाश्ते के समय वह असाधारण रूप से खामोश रही और नाश्ते के बाद जब वह बाहर आई तो एक नौकर ने उससे कहा—

'मैडम'''चौकीदार अपने केबिन में अभी तक सो रहा है।'

'क्या ?' वह बड़ी जोर से चौंकी और केबिन की ओर बढ़ी। दरवान जिस प्रकार लेटा हुआ था उससे प्रकट था कि वह असाधारण गहरी नींद में है।

'टाइगर कहां है ?' उसने नौकर से पूछा।

'पता नहीं।'

'उसे ढूंढो'''तुरन्त।' वह बोली और नौकर टाइगर कुत्ते को ढूंढ़ने

लगा । कोमल अपनी जगह खड़ी हुई गम्भीरता से कुछ सोच रही थी। फिर वह तेजी से भीतर आई और फोन उठाकर पुलिस स्टेशन का नम्बर मिलाया—

'क्या इन्स्पेक्टर शर्मा हैं ?'

'जी हाँ...एक मिनिट ।' दूसरी ओर से कहा गया।

'मैं इन्स्पेक्टर शर्मा बोल रहा हूं ।' कुछ देर पश्चात शर्मा का स्वर आया ।

'शर्मा साहब...मैं कोमल बोल रही हूं, क्या आप फौरन यहाँ आ सकते हैं ।'

'बात क्या है जी ?'

'मेरा दरबान मूर्च्छित पड़ा है और उसका कुत्ता गायब है ।'

'क्या आप मुझसे कुत्ता तलाश कराना चाहती हैं ।'

'नहीं...मगर उन दोनों बातों के पीछे एक बहुत बड़े मुजरिम का हाथ है ।

'वह कौन है ?'

'मास्टर ब्रेन ।'

'अच्छा मैं पहुँच रहा हूं ।' शर्मा ने बेमन से कहा और फिर फोन का सम्बन्ध कट गया। कोमल वहीं बैठकर शर्मा की प्रतीक्षा करने लगी । किन्तु फिर उसे याद आया कि डाक्टर को बुलाना है सो उसने फैमली डाक्टर को फोन किया और तुरन्त यहाँ पहुंचने की प्रार्थना की फिर वह शर्मा की प्रतीक्षा करने लगी । पन्द्रह मिनिट में ही शर्मा तथा डाक्टर दोनों आ गये । कोमल ने डाक्टर को दरबान के केबिन की ओर भेज दिया तथा शर्मा से कहने लगी कि दरबान बेहोश तथा उसका कुत्ता लापता है ।

'आपका अपना विचार क्या है ?' आखिर शर्मा ने पूछा ।

'असल में दरबान तथा कुत्ते के बारे में मैंने मास्टर ब्रेन को बताया था । मुझे विश्वास है कि उसी ने दरबान को नींद की दवा खिलाई है और कुत्ते को शायद मार डाला है ।'

'नींद की दवा का विचार आपको कैसे आया ?'

'क्योंकि मुझे याद आ रहा है कि सोने से पहिले दूध पीकर मैं

काफी देर तक पढ़ती थी किन्तु कल दूध पीने के पश्चात फौरन मुझे नींद आ गई। प्रातः उठने पर मेरा मुंह बड़ा कसैला सा था। मुझे शक है कि मेरे दूध में भी नींद लाने वाली दवा थी।'

'मैडम कोमल'''प्रश्न उठता है कि मास्टर ब्रेन की इस हरकत का क्या अर्थ था - क्या कोठी से कोई चीज चोरी हुई है''''''कुछ गया है'''?'

'आश्चर्य तो यही है कि यहाँ की हर वस्तु यहां तक कि मेरी ज्वे-लरी इत्यादि भी सुरक्षित हैं।'

'फिर आप क्या चाहती हैं।'

'मैं मालूम करना चाहती हूं कि चोर का क्या उद्देश्य था ?'

इतने में नौकर ने आकर बताया कि कुत्ता पिछले भाग में बेहोश पड़ा है और डाक्टर के एक इन्जैक्शन से दरबान को होश भी आ गया है।

शर्मा दरबान के पास चला आया तथा पूछा—

'क्या बताऊँ साहब'''मैंने अपना हुक्का पिया था, बस पीते ही नींद सी आने लगी और लाख जतन पर भी मैं जाग न सका।'

'क्या कोई यहाँ आया था ?'

'नहीं'''मैंने नहीं देखा।'

'हुक्का केबिन में रहता है ?'

'जी हाँ !'

'ठीक है।' शर्मा ने कहा। फिर उस जगह आया जहां कुत्ता पड़ा हुआ था। उसका निरीक्षण करने के पश्चात वह बोला—

'मैडम कोमल'''यह बात जाहिर हो जाती है कि यह किसी की शरारत है। यह काम किसी भीतरी व्यक्ति का है अन्यथा आपके दूध के गिलास में नींद की दवा कैसे आती ?'

'मैं किस पर शक करूँ—मगर वह चाहता क्या था ?'

'पता नहीं''''''मगर मुझे यह काम मास्टर ब्रेन का नहीं जान पड़ता।'

'किन्तु मुझे पूरा विश्वास है कि यह काम मास्टर ब्रेन का है।'

'तो फिर आपको यह भी पता होगा कि वह चाहता क्या है।'

'नहीं'''मुझे यह नहीं पता। क्या यह नहीं हो सकता कि वह किसी कारण अपना उद्देश्य पूरा किये बिना यहाँ से चला गया हो।'

'हाँ!' काफी देर पश्चात शर्मा ने कहा और झल्लाकर वहाँ से आ गया। कोमल ने लिखित में दे दिया था कि मकान से कोई चीज चोरी नहीं हुई है'''जब शर्मा व डाक्टर चले गये तो वह अपने कमरे में आकर पलंग पर लेट गई। उसका मस्तिष्क बड़ी तेजी से चल रहा था।

फिर कुछ याद करके उसका दिल धक-धक कर उठा और वह खड़ी होकर फटी-फटी आँखों से चारों ओर देखने लगी किन्तु कमरे में कोई न था। घबराकर उसने द्वार बन्द किया और फिर किताबों की अलमारी की ओर बढ़ी'''किन्तु जैसे ही पुस्तकों की लाइन पर उसकी दृष्टि पड़ी कण्ठ से एक चीख सी निकली और चेहरा एकदम श्वेत पड़ गया। हाथ-पैर सुन्न हो गये—एक-एक अंग काँपने लगा—वह किताबों की ओर देखे जा रही थी। फिर उसने एक दूसरी कतार की ओर निगाह डाली और चीख उठी।

सारा शरीर पसीने से शराबोर हो गया—वह थर-थर काँपती हुई अपने पलंग तक आई और गद्दे पर गिरकर सिसकने लगी।

'नहीं! नहीं'''यह नहीं हो सकता।' वह रोते हुए बोली।

इतने में द्वार खुला और एक बूढ़ा व्यक्ति भीतर आया। निकट आकर वह बोला—

'कोमल'''कोमल बेटे क्या हुआ?'

'डैडी!' वह पलटकर रूंधे हुए स्वर में बोली और खड़ी होकर उससे लिपट गई।

'आखिर क्या हुआ?' उसके डैडी ने प्रश्न किया।

'मैं लुट गई!'

'कुछ बतायेगी भी या नहीं'''

'बस डैडी'''सब कुछ समाप्त हो गया'''मैं लुट गई'''तबाह हो गई।'

'क्या कुछ चोरी हो गया?'

'हाँ!'

'क्या?'

'जीवन भर की पूंजी।'

'मगर तेरे पास किस चीज की कमी है ?'

'मैं बता नहीं सकती ।'

'ठहरो मैं इन्स्पेक्टर शर्मा को दुबारा बुलाता हूं ।'

'नहीं ।' कोमल ने उसे रोका ।

'क्यों ?'

'मैं पुलिस को कुछ बताना नहीं चाहती ।'

'मगर क्यों ?'

'मेरी इच्छा ।' वह झल्लाई और उसका डैडी पलटकर बाहर निकल गया । वह उनको जाता हुआ देखती रहीं । अब उसके आंसू नहीं निकल रहे थे । बल्कि वह किसी मूर्ति के समान शांत थी । जैसे उसके मस्तिष्क में कोई भयानक स्कीम जन्म ले रही थी । वह इसी प्रकार खड़ी रही तथा आंसू गालों पर सूख गये । कदाचित वह यों ही खड़ी रहती किन्तु नौकर के आगमन ने उसे चौंका दिया ।

'आपका फोन है ।' नौकर बोला । फिर वह चला गया ।

वह धीरे-धीरे कमरे से बाहर निकली और उस कमरे में पहुंची जहाँ फोन था । फोन का रिसीवर अलग रखा हुआ था । उसने रिसीवर उठाकर कान से लगाया तथा बोली—

'कोमल ।'

'कोमल क्या तुम पहिचान सकती हो मैं कौन हूं ?'

'नहीं !'

'मैं चोर हूं ।'

'तुम···प्रिन्स···मास्टर ब्रेन ।'

'नहीं मैं मास्टर ब्रेन नहीं···तुम बताओ कौन हूं ?'

'वह दोनों किताबें कहाँ हैं ?'

'मेरे पास ।'

'तुम कौन हो ?' कोमल ने कटु स्वर में कहा ।

'सुनोगी तो मूर्च्छित हो जाओगी ।'

'बकवास मत करो ।' वह झल्लाई । 'नाम बताओ ।'

'विलियम ।'

'क···क्या ?' वह बड़ी जोर से चिल्लाई । फोन का रिसीवर उसके हाथ से छूटकर गिरते-गिरते बचा । उसकी साँस रुकने सी लगी तथा

दिल सीने में बैठा सा जा रहा था । अन्त में काफी देर पश्चात वह बोली—

'यह असम्भव है ।'

'होगा'''मगर मैंने तुम्हें इस बात का विश्वास दिलाने को फोन नहीं किया बल्कि इसलिए किया कि मैं चोर हूं'''क्या तुम वह दोनों किताबें पाना चाहती हो ?'

'हाँ !' कोमल ने सरसराते हुए स्वर में कहा ।

'तो पूरे दस लाख रुपयों का प्रबन्ध करो ।'

'दस लाख ।' वह चौंकी ।'

'अधिक नहीं हैं । तुमको तो उनकी कीमत का पता है । तुम एक करोड़ भी दे सकती हो'''किन्तु तुमने मेरी माँ के पेट से जन्म लिया है इसलिए केवल दस लाख ही माँगे हैं और यह छोटी सी रकम तुम्हारे लिए अधिक कठिन नहीं है ।'

'अच्छा ठीक है तुम कहाँ मिलोगे ?'

'जगह का प्रबन्ध बाद को करूंगा पहिले मेरे फोन की प्रतीक्षा करना ।'

'कब ?'

'कल !'

'यह याद रखना कि मैं व्याकुलता से कल की प्रतीक्षा कर रही हूं ।' यह कहकर उसने फोन बन्द कर दिया । अब उसके चेहरे पर छाई परेशानी काफी कम हो गई थी और वह आश्वस्त दिख रही थी ।

बाईस

कार कब्रिस्तान से बहुत दूर रोक दी गई । और इसमें से टामी बाहर निकला । चारों ओर अन्धकार छाया हुआ था । कब्रिस्तान शहर से बाहर था सो आस-पास तो क्या दूर तक कोई आबादी नहीं थी

क्योंकि इस ओर कोई मकान बनाना पसन्द नहीं करता था। अतः कब्रिस्तान के चारों ओर जंगल सा उगा हुआ था। कब्रिस्तान से लेकर सड़क तक एक चौड़ी पगडंडी ही ऐसी जगह थी जहाँ झाड़ियाँ नहीं उगी हुई थीं।

कार सड़क पर ही रुक गई थी। टामी हाथ में टार्च लिये बढ़ता चला आ रहा था। उसने एक बार भी टार्च नहीं जलाई। इससे ज्ञात होता था कि यह पगडंडी उसकी नापी जोखी हुई है। कब्रिस्तान के अहाते की टूटी हुई दीवार की मुंडेर जब दिखाई देने लगी तो वह ठहर गया। कदाचित वह वहाँ के भयानक माहौल से घबरा भी रहा था। फिर उसने कोट की जेब में हाथ डाला, रिवाल्वर मौजूद था।

कब्रिस्तान में कई कब्रों पर दिये टिमटिमा रहे थे। उनके पीले प्रकाश में उभरते हुए कब्रों के मौन को देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि रोम-रोम कांपने लगता। क्योंकि भीतर जगह-जगह पेड़ थे इसलिए चमगादड़ों की कमी न थी। इस समय चमगादड़ें किसी भटकी हुई भयानक आत्मा की तरह अपने शिकार की खोज में इधर से उधर निकल जाती थीं। पेड़ों के पत्तों से फड़फड़ाती तथा उनके हलक से चीख की ध्वनि निकलती। यह सब कुछ बड़ा भयावह था।

टामी मुंडेर के पास उस जगह आ गया जहाँ जमीन समतल थी और ठीक इसी समय एक चमगादड़ चिल्लाती हुई उसकी खोपड़ी से टकराई तो वह भिची-भिची सी चीख मार, मुंडेर का सहारा लेकर खड़ा हो गया। इस समय मारे डर के उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था तथा माथे पर पसीने की बूंदें उभर आई थीं। कुछ देर वहीं ठहरकर उसने अपने होश ठीक किये और चौकन्ना होकर आगे बढ़ने लगा।

इतनी सावधानी के पश्चात भी उसकी पग ध्वनि रात्रि की नीरवता में थपेड़ों की भाँति लग रही थी। अब वह कब्रों के बीच चल रहा था। किन्तु एक जगह उसे ठिठकना पड़ा क्योंकि उसे किसी के रोने की आवाज सुनाई पड़ी। धड़कते हुए दिल तथा भयभीत आंखों से उसने चारों ओर देखा किन्तु अनुमान न लगा सका कि आवाज किधर से आ रही है। वह फिर आगे बढ़ा तो महसूस हुआ कि रोने की आवाज नाम हो गई। रोने की आवाज किसी स्त्री की थी। इस बात का एहसास

होते ही, चुड़ैल का विचार फड़फड़ाती हुई चमगादड़ के समान उसके दिमाग में आया और उसने जल्दी से घूमकर देखा। एक औरत उसके पास वाली कब्र के निकट खड़ी थी। उसका पूरा शरीर काले लबादे से ढका हुआ था, यहां तक कि चेहरा भी दिखाई नहीं दे रहा था। रोने की आवाज बन्द हो गई।

'तुम कौन हो?' टामी ने बोखलाकर पूछा। शायद उसमें भाग जाने की हिम्मत नहीं थी।

'मैं एक अभागी औरत हूं।' काले वस्त्रों वाली ने कहा।

'यहां क्या कर रही हो?'

'अपने प्रियतम की कब्र पर आंसू बहा रही हूं।'

'काफी रात हो गई है, अब जाओ।'

'हां।' वह बोली और ठंडी सांस भरकर गेट की ओर चल पड़ी। यद्यपि वह प्रतिक्षण दूर होती जाती थी किंतु टामी थर-थर कांप रहा था। उसे वह औरत अब भी चुड़ैल दिख रही थी। वह उस वक्त तक वहीं खड़ा रहा जब तक कि वह नजरों से ओझल नहीं हो गई। फिर अचानक ही बहुत से विचार उसके मस्तिष्क में आये।

'क्या एक औरत इतनी रात को अकेली यहां आ सकती है, क्या वह चुड़ैल थी या फिर कोई जासूस थी।' वह सोचता रहा फिर धीरे-धीरे आगे बढ़ना शुरू कर दिया।

'क्या मैं अपने आदमियों को सिगनल दूं?' वह धीरे से बड़बड़ाया, ठहरा, फिर सड़क की ओर देखा कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था, फिर उसने कब्रिस्तान पर एक दृष्टि डाली। गीदड़ व लोमड़ियां इधर-उधर भाग रहे थे, एक गीदड़ रो रहा था तथा जंगली छछूंदरें चीं-चीं कर रहीं थीं।

टामी सहमा-सहमा सा चलता रहा और गुम्बददार मकबरे जैसी कब्र के पास आकर बोला—

'दायीं ओर तीसरी कब्र।'

इसके साथ ही वह दायीं ओर घूम गया। किन्तु ज्योंही तीसरी कब्र पर उसकी दृष्टि पड़ी हल्की सी उसकी चीख निकल गई। कब्र खुदी थी तथा उसके गिर्द मिट्टी फैली पड़ी थी। टामी जहां था वहीं खड़ा रह गया। कदाचित उसकी खोपड़ी में सनसनाहट सी हो रही थी। मगर

फिर भी वह आगे बढ़ा और खुली हुई छत के निकट आ गया। झाँकने से पहिले उसने इधर-उधर देखकर यह विश्वास कर लिया कि कोई मौजूद नहीं है तो पहिली बार टार्च जलाई। टार्च का प्रकाश नीचे था सो प्रकाश सीधा कब्र के भीतर गया और टामी का हाथ बड़ी जोर से कांप गया। जोरों से निकलने वाली चीख घुटकर रह गई। अन्यथा जिस प्रकार उसने मुँह खोला था उससे निकलने वाली चीत्कार से पूरा कब्रिस्तान गूँज सकता था। उसने टार्च वाला हाथ सम्हाल लेना चाहा और रोशनी फिर कब्र के भीतर थर्राई।

भीतर एक सड़ी हुई लाश पड़ी थी। गीली कीड़ों से भरी हुई भयानक लाश भीतर से असह्य दुर्गन्ध उठ रही थी। टामी स्वयं को सम्हालने की चेष्टा कर ही रहा था कि उसके पीछे की ओर कुछ आहट हुई। बौखलाकर वह पलटना ही चाहता था कि किसी ने उसकी गुद्दी पर फौलादी सा घूंसा मारा और वह उछलकर कब्र में गिरा। फचाक से उसके पाँव सड़ी हुई लाश के शरीर में धंस गये और टार्च हाथ से छूटकर ऊपर ही दूर जा पड़ी। टामी घबराकर बड़ी जोर से चिल्लाया। उसका सारा शरीर बड़ी जोर से कांप रहा था।

'हैलो टामी!' फिर उसे एक पुरुष स्वर सुनाई पड़ा और वह बड़ी कठिनाई से पलटा। उसके सामने एक पुरुष-छाया खड़ी थी।

'तुम···या···मास्टर ब्रेन···!'

'क्या बात है, इस भयानक रात में तुम्हें मास्टर ब्रेन का सपना आ रहा है।'

'तुम कौन हो?'

'कदाचित तुमने मेरा नाम सुना हो।'

'मगर तुम कौन हो?'

'बताता हूं।' उस व्यक्ति ने कहा और टार्च उठाकर उसकी आँखों पर प्रकाश फेंका तो टामी ने आँखें बन्द करलीं और कहा—

'बुझाओ इसे।'

'क्या तुम्हें कुछ पता चला?'

'नहीं।'

'मेरा नाम विलियम है।'

'विलियम'''जर्मनी वाला ?' टामी ने कौतूहल भाव से पूछा।

'हाँ, मैं वही हूं। हालांकि अब मैं लंगड़ा हो गया हूं और मेरी सूरत भी पहिली जैसी नहीं रह गई है।'

किन्तु तुम तो मर गये थे ?'

'अब तक मैं दसियों बार नकली मौत मर चुका हूं।'

'अच्छा, पहिले मुझे बाहर निकालो।' टामी ने कहा और बाहर निकलने का प्रयत्न करने लगा। जब वह बाहर आया तो उसके पाँवों पर कीड़े रेंग रहे थे जिन्हें वह बार-बार झाड़ने की चेष्टा कर रहा था।

'जिस चीज की खोज में तुम यहाँ आये हो वह मेरे पास है।' विलियम ने कहा।

'क्या तुमको मिल गई है ?'

'हाँ।'

'क्या इस समय भी वह तुम्हारे पास है।'

'मैं इतना मूर्ख नहीं टामी'''। मैं तो यहाँ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था।'

'मेरी क्या तुम्हें पता था कि मैं यहाँ आऊँगा ?'

'मैं कल से तुम्हारी गतिविधियों की निगरानी कर रहा हूं। मैंने आस्टर बेन के हाथों तुम्हारी पिटाई का दृश्य भी देखा है। वह आदमी वास्तव में शानदार है।'

'उस कम्बख्त का मेरे सामने नाम न लो। जाने से पहिले मैं उसे भी समाप्त करके जाऊँगा।'

'इस प्रकार तुम भी एक दिन कब्र में दिखोगे।'

'तुम्हें मेरी प्रतीक्षा क्यों थी ?' टामी ने पूछा। फिर जेब से रिवाल्वर निकाल लिया। किन्तु इससे पूर्व कि वह निशाना ले विलियम ने टार्च जलाकर प्रकाश उसकी आँखों पर फेंका और वह चौंधिया गया। हाथ बहका ही था कि विलियम ने उसकी रिवाल्वर वाली कलाई पकड़ी तथा एक ही झटके में रिवाल्वर गिरा दिया। अगले ही क्षण वह रिवाल्वर उठाकर बोला—

'मैं चाहूं तो तुम्हें शूट करके सदैव के लिए इसी कब्र में दफन कर सकता हूं।'

'विलियम, मेरा नाम टामी है।'

'यह मैं जानता हूं, किन्तु रिवाल्वर टामी का विचार करेगा न उससे डरेगा। बोलो क्या मैं तुम्हें शूट करूं...?' उसने रिवाल्वर तान लिया।

'मरने से पहिले मैं यह ज्ञात करना चाहूंगा कि तुम्हें मेरी प्रतीक्षा क्यों थी?'

'इसीलिए मैं तुमको अभी शूट नहीं करूंगा, मेरी बात को सुनो।' विलियम बोला।

'क्या हम यहाँ से चलें?'

'हाँ चलो।'

वह दोनों धीरे-धीरे बाहर निकले। राह में टामी ने फिर पूछा 'क्या वह चीज सचमुच तुमको मिल गई है?'

'हां! और मैं इसी सिलसिले में तुमसे बात करना चाहता हूं।'

'बोलो।'

'उस वस्तु की कीमत तथा महत्त्व का अनुमान तुमको होगा।'

'हाँ।' टामी ने कहा—'उनके कुत्ते उस चीज को खोजते तथा जान देते फिर रहे हैं।'

'हां, किन्तु इस समय मैं ऐसी पोजीशन में हूं कि उससे लाभ नहीं उठा सकता।'

'क्यों?'

'यह मेरे हालात हैं, तुमको इससे अधिक रुचि नहीं होनी चाहिये। मैं दो बातों में से एक बात चाहता हूं।'

'और वह दो बातें क्या हैं?'

'एक तो यह कि इस चीज से लाभ उठाने के लिए तुम मेरे पार्टनर बन जाओ, या फिर उचित मुआवजा देकर वह चीज मुझ से ले लो।' विलियम बोला और टामी ने तत्क्षण कुछ नहीं कहा, वरन दोनों पगडंडी पर शान्त चलते रहे। पक्की सड़क पास आती जा रही थी।

'तुम कितना पारिश्रमिक लेना चाहोगे?' बड़ी देर बाद टामी ने प्रश्न किया।

'तुम बताओ कितना दोगे? मुझे पैसे की बहुत जरूरत है दस लाख का प्रबन्ध कर चुका हूं।'

'यह कौन है?'

'छोटी सी बात की ब्लैक मेलिंग है।'

'इसका मतलब तुम बड़ी बात का और अधिक मांगोगे ?'

'यह तो जाहिर ही है।'

'मगर मेरे पास इतनी नकदी नहीं।'

'नकदी मांगता ही कौन है, मुझे सोना चाहिए।'

'सोना ! हां, मगर कितनी कीमत का ?'

'केवल बीस लाख का।'

'बीस लाख ?'

'टामी तुम पुराने व अनुभवी अपराधी हो। इतना सोना एकत्र करना तुम्हारे लिए कठिन नहीं है।'

'मगर तुम मुझे मिलोगे कहाँ ?' टामी ने पूछा।

'जिस दिन तुम सोना प्राप्त करने में सफल हो जाओ उस दिन नदी के पुल के नीचे जो महराब है तुम वहाँ चाक से क्रास का चिन्ह बना देना। उसके अगले ही दिन मैं तुमको सौदे के लिए स्थान के बारे मे बता दूँगा।'

'ठीक है।' टामी बोला।

'टामी, दो बातें याद रखना। एक तो यह कि वह चीज जब तक मैं न चाहूं तुम्हें कदापि नहीं मिल सकती। दूसरे यह कि यदि तुमने मुझको धोका देने का प्रयत्न किया तो मुझसे बुरा कोई न होगा। मैं तुम जितना बड़ा मुजरिम तो नहीं मगर खतरनाक अवश्य हूं और अपने शत्रुओं पर थोड़ी भी दया नहीं करता।'

'ठीक है।' टामी ने कहा। इस वक्त तक वह कार के पास आ गये थे।

'क्या मैं तुमको तुम्हारे मकान तक छोड़ दूं ?' टामी ने वैसे ही पूछा।

उत्तर में विलियम हंसा। फिर बोला—

'अभी हम इतने गहरे मित्र नहीं बने, दूसरे मेरा मकान पास ही है...।'

टामी ने कोई उत्तर न देकर हाथ हिलाया और कार में बैठ गया।

कार चलने लगी।

तेईस

कोमल दस लाख रुपयों का प्रबन्ध न कर सकी। आखिर अपने डैडी से इतनी भारी रकम विना किसी उचित कारण के उसके लिए प्राप्त करना कोई सुगम बात न थी। तथापि उसने चार लाख रुपया जमा कर लिया था इसके अलावा अपने सारे गहने जमा कर लिए। इस प्रकार वह दस लाख की मालियत एकत्र कर सकी। अब उसे रात की प्रतीक्षा थी। विलियम ने उससे कहा था कि वह रात को ही सौदा कर सकता है।

राम-राम करके रात आई और वह डिनर टाइम से पहिले ही पलंग पर लेट गई। धीरे-धीरे सारे नौकर चले गये, कोठी की बत्तियाँ बुझ गईं तो वह उठी, कपड़े बदले। गहने व रुपयों से भरा बाक्स उठाकर बड़ी सावधानी से बाहर निकली।

दरबान क्योंकि अभी तक पूर्ण स्वस्थ नहीं हुआ था इसलिए आज रात को कोठी में कोई दरबान नहीं था। कोमल ने कार भी नहीं निकाली क्योंकि विलियम ने कहा था वह पैदल ही सड़क पर आये।

गेट से निकलकर वह सड़क पर आ गई और धीरे-धीरे होशियारी से एक ओर चल पड़ी। इतनी दूर तक वह आज तक पैदल नहीं चली थी, मगर आज उसे विवशत: पैदल चलना पड़ रहा था। वह सोच रही थी कि किसी जगह ठहरकर थोड़ा सुस्ता ले कि एक कार पीछे से बिना प्रकाश व कुछ शब्द किये आई और उसकी बगल में आकर ठहर गई। फिर कार का पिछला दरवाजा खुला और एक स्वर ने कहा—

'कोमल इधर आओ।' स्वर में ऐसी सरसराहट थी कि कोमल सिर से पैर तक काँप उठी। फिर धीरे-धीरे इस प्रकार कार की ओर बढ़ी जैसे कोई अदृश्य हाथ उसे कार की ओर खींच रहा हो।

'जल्दी करो।' फिर स्वर आया। कोमल ने कार में पैर रखकर देखा। कार के भीतर केवल दो आदमी थे किन्तु उन दोनों ने फैल्ट हैट इतने अधिक झुका लिये थे कि इस अन्धकार में उनको पहिचानना

असम्भव था। एक व्यक्ति कार ड्राइव कर रहा था, दूसरा कोमल को घूर रहा था। उसने कोमल का हाथ पकड़कर एक झटके से भीतर खींच लिया।

'विलियम…!' वह चिल्लाई।

'वह तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।' उस व्यक्ति ने कहा और कार चल पड़ी। कोमल थर-थर कांप रही थी। कई बार तो उसके दांत तक बजने लगते थे। वह कुछ पूछना चाहती थी मगर उसकी घिग्घी बन्ध गई थी। कार भागती रही और उनके बीच कोई बात नहीं हुई। लगभग आध घंटे पश्चात कार एक अंधेरी सी इमारत के सामने रुकी। वह दोनों पहिले ही उतरे।

'विलियम कहाँ है?' कोमल ने पूछा। वह बहुत अधिक डर रही थी।

'वह भीतर हैं।' एक व्यक्ति बोला और दरवाजा खोल दिया। कोमल लड़खड़ाते हुए पैरों से उतरी और वह दोनों उसे बीच में करके आगे बढ़े। भीतर पहुँचकर रौशनी कर दी। कोमल ने कमरे में चारों ओर दृष्टि दौड़ाई तो बड़ी दहशत अनुभव की। क्योंकि वह कमरा काफी पुराना था तथा भुतहा सा प्रतीत होता था। बीच में एक टेबिल पड़ी थी मेज पर किसी वस्तु को चादर से ढक रखा था। मेज के पास कुछ कुर्सियां भी थीं। यह लोग उन कुर्सियों के निकट आये।

'बैठो।' एक व्यक्ति बोला।

'विलियम कहाँ है?' वह कपकंपा कर पूछने लगी।

'क्या तुम उसे पहिचान सकोगी?' आदमी ने पूछा। और कोमल उनके चेहरे देखने का प्रयत्न करने लगी किन्तु उनकी शक्लें अब भी दिखाई नहीं दे रही थीं।'

'क्या तुम रकम लाई?'

'हाँ यह लो, और मेरी किताबें मुझे वापस कर दो।' वह साहस करके बोली।

'उसे यहां रख दो।' एक आदमी बोला। और कोमल ने लापरवाही से वह बाक्स एक ओर डाल दिया।

'बैठो।' उस आदमी ने कहा। वह बैठ गई, उसने फिर पूछा—

'विलियम कहाँ है?'

'आता है।' उसने कहा और पूछा—'कोमल क्या तुम्हें अपना अतीत याद है ?'

हां'''क्यों ?'

'कुछ नहीं।' उस व्यक्ति ने कहा और अपने सिर पर से फैल्ट हैट उतार दी। दूसरे व्यक्ति ने भी यही किया। कोमल इन दोनों को घूर-कर देखने लगी। उस दिमाग में अनेकों सूरतें तथा उनकी स्मृतियाँ कलाबाजियां खा रही थीं। ऐसा लगता था मानों वह उनको पहिचानती है। वह दोनों अधेड़ आयु, भूरे बालों मगर मजबूत शरीर वाले आदमी थे। उन्होंने अब तक अंग्रेजी में बातचीत की थी।

'क्या तुम हमको जानती हो ?'

'नहीं, वह ठहरकर बोली।

'याद करो, तुम हमको जानती हो।'

'विलियम कहाँ है, क्या तुम दोनों में कोई विलियम है ?'

'हम दोनों में से विलियम कोई नहीं। विलियम टामी से सौदा करने के चक्कर में है।'

'किन्तु मुझे उसी से काम है।'

'हमें पता है, तुमको उसके आने तक यहीं प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।'

'लेकिन मैं अधिक देर प्रतीक्षा नहीं कर सकती।'

'प्रथम तो तुम्हें अधिक देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी क्योंकि वह वादे का बड़ा पक्का है। फिर यदि उसे किसी कारण देर हो भी गई तो फिर भी तुम यहाँ से घर न जा सकोगी।'

'क्यों ?'

'विलियम का यही आदेश है।'

'अच्छा।' वह कुर्सी पर ढीली पड़ गई। वह दोनों बड़ी देर तक मौन बैठे रहे। फिर उनमें से एक उठा और बीच में रखी मेज पर से चादर हटा दी। कोमल की आँखें शायद बन्द थीं, किन्तु कपड़ा सरकने की ध्वनि से उसने आँखें खोल दीं और अगले ही क्षण उसके मुँह से एक गगनभेदी चीख निकली। हाथ उठाकर एकबार फिर वह भयभीत स्वर में चिल्लाई—

'नहीं-नहीं'''!' तत्पश्चात उसने आगे झुककर एक चीख और मारी। और कुर्सी से टकराती हुई धड़ाम से फर्श पर गिरी। अब वह

अचेत थी। दोनों आदमी मुस्कुराते हुए एक सुन्दर शरीर को देखे जा रहे थे।

चौबीस

'टामी क्या तुम बीस लाख का सोना लाये ?' विलियम ने पूछा। टामी ने उसे घूरकर देखा फिर कहा—

'हाँ लाया हूं। मगर क्या तुम वह चीज लाये ?'

'अवश्य लाया हूं। किन्तु पहिले मैं बीस लाख का सोना देखना चाहूंगा।'

'क्या यह तुम्हारे आदमी हैं ?'

'हाँ, और इस सन्दूक में सोना भरा है।'

'दिखाओ।'

'खोल दो इसे।' टामी ने अपने आदमियों से कहा। उन्होंने संदूक खोला। उसमें सोने की छोटी-छोटी ईंटें भरी हुई थीं। विलियम ने उसमें से एक ईंट उठाकर देखी और फिर इत्मीनान करके बोला—

'ठीक है, मगर मैं सोच रहा हूं कि वह चीज तुम्हें दूं या न दूं ?'

'क्या मतलब ?' टामी बड़ी जोर से चौंका।

'मुझे अब पच्चीस लाख मिल रहे हैं।'

'सुनो विलियम।' टामी असाधारण संजीदगी से बोला। उसका हाथ जेब में था जहाँ रिवाल्वर अवश्यम्भावी था।' मैं मजाक तथा छिछोरापन पसन्द नहीं करता। यदि तुमने किसी प्रकार की हेरा-फेरी करने का प्रयास किया तो यह मत भूलना कि मेरे पास निःशब्द रिवाल्वर है।' उसने रिवाल्वर निकाल लिया।

'खूब···मगर टामी डार्लिंग मेरे आदमी यहां मौजूद हैं और मेरे संकेत पर तुम्हें भूनकर रख देंगे।'

'क्या तुम मुझे अहमक समझते हो···मैं भी अपने आदमियों के साथ आया हूं और यह वह आदमी हैं जिन्हें मैं विदेश से अपने साथ लाया था। वह कोई किराये के गुंडे नहीं हैं।'

'गुड़'''और वह हैं कहाँ ?'

'यहीं बहुत पास ! मगर मैं व्यर्थ का बखेड़ा पसन्द नहीं करता। तुमने जितना सोना माँगा मैंने बड़ी परेशानी से उसे एकत्र किया। किन्तु अब तुम अपने वादे से फिरे जाते हो मगर मैं'''।' उसने रिवाल्वर तान लिया—'बोलो तुम वह चीज देते हो या'''।'

'मैंने मना कब किया मैं तो यह चाहता हूं कि तुम दो-चार लाख और बढ़ा दो।'

'यह बात तुम सीधी तरह भी कह सकते थे।'

'आदत से विवश हूं।'

'अच्छा लाओ !' टॉमी बोला और विलियम ने जेब में हाथ डालकर एक छोटी-सी सुनहरी डिबिया निकालकर उसकी ओर बढ़ा दी'''टॉमी ने झपटकर डिबिया ले ली और खुश होता हुआ बोला !

'यही है।'

'यह मेरी ईमानदारी का सुबूत है।' विलियम ने कहा और टॉमी उसे खोलने की कोशिश करने लगा। किंतु जब डिबिया उससे नहीं खुली तो वह बोला—

'कैसे खोलूँ ?'

'यह गोल वाला भाग दबाओ।' विलियम बोला—टॉमी ने वह भाग दबाया, डिबिया का ढकना झटके से खुला और साथ ही एक धमाका भी हुआ'''धमाके के साथ धुआँ निकला'''साथ ही टॉमी की चीख निकली। उसने रिवाल्वर फेंककर दोनों हाथों से अपना गला दबाया और भिंचे हुए स्वर में बोला—

'मैं'''मैं'''मर गया।' उसकी नाक-आँख-मुँह से पानी निकल रहा था।

'तु'''तुम धोखेबाज हो।' वह बड़ी कठिनाई से बोला—फिर गला दबाये हुए नाचने व गालियाँ देने लगा। इतने में टॉमी के कई साथी भीतर आ गये। उनकी तादाद छैः थी।

'इसे जान से मार डालो।' टॉमी ने कहा और वह छै के छै विलियम पर झपटे किंतु वह सुन्दर झुकाई देकर अलग हो गया। फिर उसके हाथ से निकलने वाली गेंद ने पलक झपकते ही दो आदमियों को जमीन पर सुला दिया था। दोनों की कनपटियाँ फट गई थीं।

'मास्टर ब्रेन...!' अत्यन्त पीड़ा के बावजूद टॉमी आश्चर्य व भय से मिले जुले भाव से चिल्लाया और मुँह बाये विलियम को देखने लगा, जो वस्तुतः मास्टर ब्रेन था। इतने समय में मास्टर ब्रेन ने दो आदमियों को और गिरा दिया। शेष दो में से एक ने रिवाल्वर निकालना चाहा कि मास्टर ब्रेन की गेंद से उसकी कलाई फट गई। वह अपना हाथ दबाकर वहीं बैठ गया। अन्तिम आदमी ने मास्टर ब्रेन पर छलांग लगा दी किंतु उसकी पहली ही ठोकर ने उसे दोहरा कर डाला...दूसरी ठोकर ने लिटा दिया।

'अब बोलो बेटा टॉमी!' मास्टर ब्रेन ने कहा और टॉमी ने बाहर छलांग लगानी चाही। किंतु मास्टर ब्रेन की गेंद ने उसके टखने की तबियत हरी कर दी और वह लंगड़ाकर उछला। उसकी गेंद का दूसरा प्रहार टॉमी की गुद्दी पर हुआ और वह चीखकर पलटा...फिर चकराकर धड़ाम से फर्श पर जा पड़ा।

'क्या कोई और सेवा करूँ?' मास्टर ब्रेन ने टॉमी से पूछा।

'क्या एक अपराधी दूसरे अपराधी मित्र से इसी प्रकार पेश आता है?' टॉमी ने टूटी हुई आवाज में कहा।

'जनता तो मुझे अपना सेवक समझती है।' मास्टर ब्रेन ने कहा फिर द्वार की ओर देखने लगा।

'कर्नल साहब यह टॉमी है।' मास्टर ब्रेन ने भीतर आने वाले सैनिक अधिकारी से कहा।

'तुम वास्तव में महान हो मास्टर ब्रेन।' कर्नल ने प्रशंसा करते हुए कहा।

'किन्तु इन्सपेक्टर शर्मा का विचार इसके विपरीत है।' मास्टर ब्रेन ने हँसकर कहा, फिर बोला—'आप टॉमी तथा उसके गिरोह के खास आदमियों को सम्हालिये। यह आपको बतलायेगा कि इसने नरेन्द्र द्वारा प्रिया व उनके डैडी से कौन-कौन से सैनिक राज ज्ञात किये हैं। नरेन्द्र ने इसे छोटी-मोटी और भी दस्तावेजें लाकर दी हैं जो वह लड़कियों द्वारा प्राप्त करता था।'

'मगर तुम कहाँ जा रहे हो?'

'मुझे इस सिलसिले की एक ऐसी उलझन को सुलझाना है जिसका सीधा इस केस से सम्बन्ध न होने पर भी बहुत कुछ सम्बन्ध है।'

'वह क्या है?'

'यह सब मैं आपको कल बताऊँगा···फिलहाल आज्ञा दें।' मास्क मैन ने कहा और कमरे से बाहर निकल गया। कर्नल ने टॉमी की ओर देखा। टॉमी इस वक्त उन सैनिकों को घूर रहा था जो राइफलें ताने उसे घेरे खड़े थे।

पच्चीस

कोमल को होश आ चुका था। इस समय वह मेज पर रखे हुए मानव हड्डियों के दो हाथ···एक छुरे तथा मानव-हड्डी की एक खोपड़ी को विस्फारित नेत्रों से देख रही थी। मानव-हाथ जो देखने से दाहिना हाथ प्रतीत होता था। उसकी एक उंगली में दो नगीनेदार बड़ी-बड़ी अंगूठियाँ अब भी पड़ी हुई थीं। हड्डी की खोपड़ी के दायें जबड़े में दो दाढ़ें गायब थीं तथा वहाँ का वह खोखलापन बड़ा भयानक दीख रहा था। बाईं ओर वाली दांत की कील पर सोना मढ़ा हुआ था और सोना मढ़ा यह दांत देखकर मनुष्य भक्षी व हिंसक वहशियों का ख्याल करके शरीर काँप उठता था। चामड़ जैसा छुरा जो उन हड्डियों के बीच पड़ा था उस पर रक्त के दाग जो काले पड़ गये थे, अब भी दिखाई दे रहे थे। डर के कारण कोमल का चेहरा काला पड़ गया था, तथा हाथ जो पहलू में रखे हुए थे थर-थर काँप रहे थे। वह भय तथा दहशत का साकार नमूना बैठी थी। वे दोनों विदेशी बड़े आराम से अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठे हुए थे। और इस प्रकार सिगार पी रहे थे, मानो उन्हें हड्डियों तथा कोमल की मौजूदगी का एहसास तक नहीं हो।

कोमल बड़ी बेबसी से इन लोगों की ओर देखकर बड़ी कठिनाई से बोली---

'त···त···तुम लोग कौन हो?'

'पहिचानो कोमल···शायद तुम मुझको जानती हो।' उनमें से एक ने कहा --

'नहीं!' वह गर्दन हिलाकर बोली—

'तो फिर चुपचाप प्रतीक्षा करो।' वही आदमी बोला।

'विलियम कहाँ है ?'

'विलियम !' वही आदमी मुस्कुराया—कोमल आतंकित भाव से चारों ओर देखने लगी।

अब कदाचित उसमें बात तक करने की ताकत नहीं रही थी, क्योंकि शारीरिक बौखलाहट की अधिकता से उसका स्वर तक भिंच गया था। दरवाजा अभी तक बन्द था।

मास्टर ब्रेन जिस समय द्वार खोलकर भीतर आया तो प्रिया व आराधना भी उसके साथ थीं। वह दोनों परेशान तथा भयभीत प्रतीत हो रही थीं। मास्टर ब्रेन किसी भी प्रकार उन्हें यहाँ लाने में सफल हो गया था। मास्टर ब्रेन को देखकर वे दोनों विदेशी खड़े हो गये। कोमल प्रिया व आराधना को देखने लगी। उन दोनों ने भी उसकी ओर देखा, किंतु किसी में कोई बात न हुई। खोपड़ी तथा हाथों पर दृष्टि पड़ते ही दोनों चीखते चीखते रह गईं। मारे डर के उनकी आवाजें घुटने लगीं।

'बैठो !' मास्टर ब्रेन उन लोगों से बोला—वे बिना उत्तर दिये काँपती थर-थराती कुर्सियों पर बैठ गईं। वह कभी कोमल को कभी मेज की ओर देख लेती थीं। कमरे में मौत जैसी निस्तब्धता छाई हुई थी। मद्धम बल्ब के प्रकाश में अर्ध अन्धकार और भी भयानक जान पड़ता था। तीनों लड़कियों के दिल धड़क रहे थे। थोड़ी देर पश्चात् बाहर किसी कार के रुकने की ध्वनि आई'''और फिर भारी बूटों की आवाज। तत्पश्चात एक फौजी कर्नल उसके साथ चार असिस्टेंठ आफीसर भीतर प्रविष्ट हुए। मास्टर ब्रेन कर्नल की ओर बढ़ा—बोला—

'आपका सेवक मास्टर'''कर्नल लाल।' उसने हाथ मिलाते हुए कहा—कर्नल लाल ने उससे बड़े तपाक से हाथ मिलाया और कहा—

'मैं तुमसे मिलना भी चाहता था।'

'और मुझे आपकी मदद की आवश्यकता थी।'

'मैं हाजिर हूं।' कर्नल ने हँसते हुए कहा—उसके मातहत आफीसर मास्टर ब्रेन को अचम्भे व सम्मान की नजरों से देख रहे थे। कर्नल उनकी ओर घूमा फिर बोला—

'यह हैं मेजर आनन्द'''और यह हैं कैप्टिन विजय कुमार''' मेजर फरीदी और यह कैप्टिन जगदीश।' उसने चारों आफिसरों से मास्टर

ब्रे का परिचय कराया। मास्टर ब्रेन से हाथ मिलाते हुए वे ब्रेन आफिसर बड़ा गर्व महसूस कर रहे थे। उनके चेहरे तमतमा उठे।

'यह सब मेरे गुप्तचर विभाग से सम्बद्ध हैं और इनकी गणना होनहार आफिसरों में होती है।' कर्नल लाल ने बताया।

'मुझे आप लोगों से मिलकर बहुत खुशी हुई...जवान आफिसरों से देश का भविष्य वंधा हुआ है।' मास्टर ब्रेन कोमल स्वर में बोला, और हर्ष के मारे उन लोगों के दिल धड़कने लगे।

'अब क्या देर है मास्टर ब्रेन?' कर्नल लाल ने पूछा।

'मुझे अभी एक और व्यक्ति की प्रतीक्षा है।' वह बोला--प्रिया कोमल...आराधना सब मास्टर ब्रेन को आँखें फाड़-फाड़कर देख रही थीं। मास्टर ब्रेन को इतने निकट पाकर उन लोगों के दिल धड़कने लगे थे। उनका ध्यान उन खौफनाक हड्डियों की ओर से हट गया।

कर्नल लाल ने जेव से सिगार निकाला और एक सिगार मास्टर ब्रेन को पेश किया किंतु उसने फिलहाल मना कर दिया। कर्नल ने सिगार सुलगाया और कश लेने लगा।

'आइये! मैं आपका परिचय इन दोनों विदेशियों से करा दूँ।' मास्टर ब्रेन ने विदेशियों की ओर देखा। जब वे दोनों उसके निकट आ गये तो वह बोला—

'यह हैं मिस्टर पुलर तथा आप हैं मिस्टर जेम्स। आप दोनों जर्मन गुप्तचर विभाग से सम्बद्ध हैं। इस केस को सुलझाने में इन दोनों ने मेरी काफी सहायता की है।' इन दोनों ने बारी-बारी से सैनिक अधिकारियों से हाथ मिलाया फिर एक ओर खड़े हो गये।

'मगर प्रिन्स...इन लोगों ने तुम्हें पहिचान कैसे लिया?' लाल ने पूछा।

'इन लोगों ने मुझे नहीं बल्कि मैंने इन्हें पहिचान लिया। किंतु उस समय तक इनके बहुत से साथी टॉमी की गोलियों का निशाना बन चुके थे। यह दोनों भी बन जाते मगर मुझे इनकी जरूरत थी, इसलिए मैंने इन्हें सावधान करने के लिये रास्ते पर डाला।'

'जी हाँ...मास्टर ब्रेन ठीक कहते हैं।' जेम्स ने आदर भरे स्वर में कहा—

'यदि मास्टर ब्रेन आपकी सहायता न करते तो?' लाल ने

...पूछा ।

...ा देंा गोलियां हम दोनों को भी खा गई होतीं ।' उन्होंने ...हा ...ोर से हँस दिये साथ ही फौजी आफिसर भी । तीनों लड़कियां ...कुल हो रही थीं मानो वह किसी भूत महल में प्रेतों के बीच बैठी ...ीं ।

इतने में बाहर एक कार रुकने की आवाज आई और मास्टर ब्रेन बोला—

'लीजिये ! अन्तिम घड़ी भी आ गई ।' फिर वह स्वयं ही बाहर गया । सब खुले हुए द्वार की ओर देखने लगे । बाहर अन्धकार था, किंतु कार का द्वार खुलने व बन्द होने की ध्वनि आती रही । अगले ही क्षण मास्टर ब्रेन के साथ अधेड़ आयु का एक व्यक्ति भीतर प्रविष्ट हुआ ।

'डैडी···!' कोमल अधेड़ आयु के आदमी को देखकर बोली—

'तुम वहीं बैठी रहो कोमल !' मास्टर ब्रेन ने गुर्राकर कहा, और कर्नल लाल को संकेत किया । कर्नल ने बड़ी-बड़ी लाल-लाल आंखों से उसे घूरा···और वह सहमकर वहीं बैठ गई । उसके डैडी ने आश्चर्य से चारों ओर देखा फिर मेज पर रखी हुई हड्डियों को देखकर चकित हो गया ।

'यह सब क्या हो रहा है···कोमल क्या तुमने मुझे फोन पर यह नहीं कहा था कि तुम यहाँ संकट में हो । तुम्हें मेरी सहायता की जरूरत है ।' उसके डैडी ने घबराये हुए स्वर में कोमल से पूछा । इससे पूर्व कि कोमल कोई उत्तर दे मास्टर ब्रेन ने कहा—

'फोन कोमल ने नहीं, मैंने किया था ।'

'तुमने ?' वह बोला - 'मगर क्यों ।'

'आपको यहाँ बुलाने के लिये ।'

'क्यों···?'

'यह भी अभी मालूम हो जायेगा ।'

'मगर तुम हो कौन ?'

'मास्टर ब्रेन ! मास्टर ब्रेन अपने सीने पर हाथ रखकर झुकता हुआ बोला ।

'तुम···चोर···उचक्के···डाकू !' कोमल का पिता चिल्लाया और

मास्टर ब्रेन की ओर झपटा। किंतु कर्नल ने एक ही झटके ... ओर करते हुए कहा—

'मिस्टर तीर्थराज ठीक से खड़े रहें वर्ना...।'

'वर्ना क्या...आप लोग मुझे गोली मारेंगे।'

'प्लीज चुप रहिये।' कर्नल ने चेतावनी दी।

'क्या आप सैनिक अफसर भी इस मुजरिम के साथ मिल गये हैं। आप सैनिक अधिकारी हैं भी या नहीं ?' मिस्टर तीरथदास ने ऊंचे स्वर में कहा।

'यह सब आपको अभी ज्ञात हुआ जाता है...आप उधर बैठिये।' मास्टर ब्रेन ने तीरथदास की बांह पकड़ एक कुर्सी पर धकेलते हुए कहा। वह गुर्राकर पहलू बदलने तथा उन्हें देखने लगा।

'अब मैं आप लोगों का अधिक टाइम नहीं लूंगा।' मास्टर ब्रेन अपना गला साफ करके बोला—'मैं इस भयानक कहानी का प्रारम्भ इस बात की घोषणा से करता हूं कि नरेन्द्र का कत्ल...।' इतना कहकर उसने पहले आराधना फिर प्रिया की ओर देखा...दोनों के मुंह पर हवाइयां उड़ने लगीं। दिल जोर-जोर से धड़कने लगे। प्रिया जो अपने पिता की मौत से पहले ही निढाल थी निष्प्राण सी होकर कुर्सी पर लुढ़क गई...कोमल भी फटी-फटी आँखों से मास्टर ब्रेन की ओर देख रही थी। मास्टर ब्रेन ने उसकी ओर देखे बिना ऊंची आवाज में कहा—

'नरेन्द्र की कातिल...कोमल है।' यह बात सुनकर पहले तो सन्नाटा छा गया, फिर कोमल बड़ी जोर से चिल्लाई—

'नहीं...!' इसके साथ ही वह कुर्सी की पीठ से टिक गई। उसकी सांसें जोर-जोर से चल रही थीं, चेहरा मुरझा गया था तथा ठंडे पसीने आने लगे थे। तीरथदास कोमल को इस प्रकार देख रहा था जैसे वह कोई मनुष्य नहीं बल्कि कोई चुड़ैल हो। शायद उसकी जबान भी गूंगी हो गई थी। मास्टर ब्रेन मौन हो कर अपनी बात का प्रभाव देख रहा था, मौत का सा सन्नाटा कमरे में छाया हुआ था। कुछ देर पश्चात् मास्टर ब्रेन ने फिर कहा—

'कोमल को विदित था प्रिया व आराधना दोनों नरेन्द्र से प्रेम करती हैं। उसे पता था कि यदि नरेन्द्र राजी हो गया तो दोनों में कोई

कर सकती है। इसलिए नरेन्द्र से जब उसके सम्बन्ध ...त अपने डैडी को राजी कर लिया कि वह उसे नरेन्द्र ...ने की अनुमति दे दें। अनुमति मिल गई। इस बात ... को भी हुई तथा आराधना को भी। प्रिया बड़ी ... थी और किसी भी हालत में नरेन्द्र को प्राप्त करना चाहती थी ... ने नरेन्द्र की खुशी के लिए अपना शरीर तक दे डाला। जब नरेन्द्र अपने कसरती सुन्दर शरीर के कारण मिस्टर सिटी चुना गया तो उसे प्रसन्न करने व कोमल को नीचा दिखाने के लिए उसने शानदार पार्टी का आयोजन किया इसमें कालिज के बहुत से लड़के लड़कियों के अलावा कोमल को भी निमंत्रित किया गया। प्रिया इस पार्टी में नरेन्द्र को विवश करना चाहती थी कि वह उसकी व अपनी मुहब्बत के साथ शादी की घोषणा कर दे। कोमल को भी किसी ऐसे ही मौके की खोज थी। कोमल ने इस मौके से पूरा लाभ उठाया और नरेन्द्र की हत्या कर दी।' वह चुप हो गया और सब लोग मूर्खों के समान उसका मुँह देखने लगे।

'क्या तुम साबित कर सकते हो कि नरेन्द्र की हत्या की गई है।' तीरथदास ने गुर्राते हुए स्वर में प्रश्न किया।

'जरूर कर सकता हूं···इसीलिए यहाँ मौजूद हूं।' मास्टर ब्रेन बोला और फिर बताने लगा —'कोमल को प्रिया व नरेन्द्र के सम्बन्धों का ज्ञान था। उसे यह भी पता था कि वह गुलाब के फूलों पर जान छिड़कता है। उसे यह भी पता था कि प्रिया ने गुलाब की कई क्यारियाँ केवल नरेन्द्र के लिए लगाई हैं और वह उसे हमेशा गुलाब के गुलदस्ते पेश करती है। उसे पता था कि गुलाब के फूल हाथ में आते ही नरेन्द्र उसे जोर से सूंघता है। अर्थात् वह नरेन्द्र की इस आदत को हत्या का तरीका बनाना चाहती थी। वहां जो कुछ हुआ वह आप लोगों को अखबारों द्वारा ज्ञात हो गया होगा। मैं उसमें और वृद्धि न करूँ. केवल इतना ही बताऊँगा कि प्रिया ने उस दिन गुलाब का वह कातिल गुलदस्ता केवल नरेन्द्र को खुश करने के लिए बनाया था। और मारे आस्था के उसने वह आराधना तक को नहीं सूँघने दिया।

पार्टी के समय प्रिया व नरेन्द्र में जो झड़प हुई वह आपको ज्ञात ही है। मैं केवल यह बताना चाहता हूं कि जब सब लोग मेज के पास एकत्र हुये तो लड़के-लड़कियाँ उछल-उछलकर मिठाई पर झपट रहे थे और

गुलदस्ते में ही वहीं था। कोमल जानती थी कि नरेन्द्र ... सूंघेगा इसलिए उसने अपनी अंगूठी में नग के नीचे ... ...एक फूल पर डाल दिया। इस काम में उसने ... दिन... ताकि किसी को ज्ञात तक न हो। अब उसे इस बात ... थी कि नरेन्द्र उस फूल को सूंघ ले। फिर जब प्रिया का गुस्... हुआ तो उसने आराधना द्वारा नरेन्द्र को फूल सूंघने का संदेश ... वाया। नरेन्द्र बड़ा चालाक लड़का था और इस मंत्री की ... को अप्रसन्न नहीं करना चाहता था सो वह मान गया। उसने गुलदस्ता सूंघा और वहीं मर गया।

'मैं पूछता हूं कि कोमल को क्या पड़ी थी कि वह नरेन्द्र की हत्या करे।' तीरथदास ने निर्जीव स्वर में कहा।

'यह मैं बाद को बताऊँगा पहले यह बता दूं कि गोविन्द पाटिल को शक था कि प्रिया ने नरेन्द्र को कत्ल किया है सो उसने अपने असर व पहुँच से इस हत्या के केस को आत्महत्या का केस बना डाला। वह मंत्री था किंतु 'दोस्त' अखबार ने उसका भेद खोल दिया और गोविंद पाटिल को प्रकृति ने मृत्युदण्ड दिया। लोगों को यह पता चल गया कि गोविंद पाटिल किस प्रकार का आदमी था किंतु अभी उन्हें यह नहीं पता कि नरेन्द्र प्रिया के द्वारा गोविंद पाटिल से अनेकों राज जानकर टामी नामक प्रख्यात मुजरिम के हाथ बेचता था। प्रिया से इसीलिये नरेन्द्र प्रेम का स्वांग रचाये था। गोविंद पाटिल की गलती यह थी कि वह कीमती फाइलें घर ले आता था और प्रिया को सरकारी रहस्य की बातें क्यों बताता ... ?' मास्टरमैन खामोश हुआ। प्रिया गर्दन झुकाये बैठी थी।

'क्या नरेन्द्र अपराधी था ?' कर्नल लाल ने पूछा।

'हाँ और अब मैं आरम्भ से सब कुछ बताता हूं।' वह बोला और सांस लेकर द्वार की ओर देखा। वह बंद था।

'सलोमी एक मुजरिम थी।' वह बताने लगा। 'उसके हाथ एक ऐसी छोटी सी सुनहरी डिबिया लगी जिसमें एक ऐसी दस्तावेज छुपी थी जिसका सम्बन्ध जर्मन जातियों के एक ऐसे षड्यंत्र से था कि यदि वह दस्तावेज जर्मनों से बाहर के लोगों के हाथ पड़ जाती तो जर्मनी शायद एक बार पुनः रण क्षेत्र बन जाता। द्वतीय महायुद्ध ने जर्मनी